राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

अप्रैल - 2025

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छूती भारतीय मूल की बेटी : सुनिता विलियम्स

कैश कांड में फंसे जज यशवंत वर्मा ?

अब सुप्रीम कोर्ट के जज संपत्ति का ब्योरा करेंगे सार्वजनिक

वक्फ बोर्ड विवाद...

पिछले १२ साल में इसमें २१ लाख एकड़ और इजाफा हुआ वक्फ संपत्तियों का दुरूपयोग

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई
RNI NO.: MAHHIN-2014/55532
• वर्ष : 10 • अंकः 01 • मुंबई • अप्रैल-2025

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय
Add: Tirupati Ashish CHS.,
A-102, A-1 Wing, Near
Shahad Station, Kalyan (W),
Dist: Thane, PIN: 421103,
Maharashtra.
Phone: 9082391833,
9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

मुंबई में लॉरेंस गैंग के ५ सदस्य गिरफ्तार	05
सुनीता विलियम्स की धरती पर ऐतिहासिक वापसी	06
जज के घर करोड़ों का कैश!	08
पकवान	18
विविधा	20
श्रीराम भारत की आत्मा तथा भारतीय अस्मिता के जीवंत प्रमाण हैं...	22
राशिफल	24
श्री कृष्ण के जन्म स्थान मथुरा का दर्शन...	26
सिनेमा	29
मारुति की कारें अप्रैल से महंगी	30
डॉ. अच्युत सामंता ने 'कीस' और 'कीट' के माध्यम से ओड़िशा को दी ...	32
अक्षय तृतीया ३० अप्रैल को	35
नारी के सोलह श्रृंगार में छुपा अच्छे स्वास्थ्य का रहस्य...	38
आजादी	40
जमी हुई झील	44
वक्फ बोर्ड विवाद...	50
म्यांमार-थाईलैंड में भूकंप से हाहाकार!	54
मूंगफली की खेती	56

सुविचारः

कभी-कभी लोग मीठी बातें करके आपको सम्मान नहीं, धोखा दे रहे होते हैं।

अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छूती भारतीय मूल की बेटियां

अंतरिक्ष की दुनिया में जब भी महिलाओं की उपलब्धियों की बात होती है, तो कल्पना चावला और सुनिता विलियम्स के नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाते हैं। ये दोनों भारतीय मूल की महिलाएँ हैं, जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन और साहस से अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छुआ और इतिहास रच दिया। सपनों को पंख देने वाली पहली भारतीय महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का जन्म १७ मार्च १९६२ को हरियाणा के करनाल में हुआ था। बचपन से ही उन्हें अंतरिक्ष और विमानों में गहरी रुचि थी। उन्होंने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया और फिर अमेरिका जाकर NASA में अपना करियर बनाया।

कल्पना चावला ने १९९७ में पहली बार अंतरिक्ष में उड़ान भरी। वह स्पेस शटल कोलंबिया मिशन (STS-87) में शामिल होने वाली पहली भारतीय मूल की महिला बनीं। इसके बाद २००३ में उन्होंने अपनी दूसरी अंतरिक्ष यात्रा की, लेकिन दुर्भाग्यवश यह मिशन १ फरवरी २००३ को पृथ्वी पर लौटते समय एक हादसे का शिकार हो गया, और कल्पना चावला समेत सातों अंतरिक्ष यात्रियों की जान चली गई सुनिता विलियम्स एक ऐसा नाम है जो न केवल भारतीय मूल के लोगों के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए गर्व का विषय है। अपनी अद्वितीय प्रतिभा, साहस और लगन से उन्होंने अंतरिक्ष की दुनिया में कई रिकॉर्ड बनाए हैं। उनका जीवन उन सभी के लिए प्रेरणास्रोत है जो बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने का साहस रखते हैं।

सुनिता विलियम्स का जन्म १९ सितंबर १९६५ को अमेरिका के ओहायो राज्य में हुआ था। उनके पिता दीपक पंड्या भारतीय मूल के थे और उनकी मां बोनी पंड्या स्लोवेनियाई मूल की थीं। सुनिता का झुकाव बचपन से ही विज्ञान और तकनीक की ओर था। उन्होंने अमेरिका की यूनाइटेड स्टेट्स नेवल एकेडमी से इंजीनियरिंग में स्नातक किया और बाद में मास्टर डिग्री हासिल की।

सुनिता ने अपने करियर की शुरुआत अमेरिकी नौसेना में पायलट के रूप में की। वहाँ उन्होंने कई महत्वपूर्ण अभियानों में हिस्सा लिया और उड़ान भरने का व्यापक अनुभव प्राप्त किया। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने उन्हें १९९८ में नासा के अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर दिलाया।

२००६ में, सुनिता विलियम्स ने अपने पहले अंतरिक्ष मिशन में भाग लिया। वह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) में छह महीने तक रहीं, जो किसी भी महिला अंतरिक्ष यात्री के लिए उस समय का सबसे लंबा प्रवास था। इस मिशन के दौरान उन्होंने स्पेसवॉक (अंतरिक्ष में चहलकदमी) का रिकॉर्ड भी बनाया और कुल ५० घंटे से अधिक समय तक अंतरिक्ष में वॉक करने वाली पहली महिला बनीं।

२०१२ में, उन्होंने दूसरी बार अंतरिक्ष में उड़ान भरी और एक बार फिर कई महत्वपूर्ण प्रयोगों का संचालन किया। उनके इस योगदान के लिए उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। हालाँकि सुनिता अमेरिका में जन्मी और पली-बढ़ी हैं, लेकिन उनका भारत से गहरा संबंध है। उन्होंने कई बार भारत की यात्रा की है और यहाँ के लोगों से खास लगाव महसूस किया है। गंगा नदी में डुबकी लगाने से लेकर भारतीय व्यंजनों का स्वाद लेने तक, उन्होंने हमेशा अपनी भारतीय जड़ों को गर्व से स्वीकारा है।

सुनिता विलियम्स उन सभी युवाओं के लिए एक प्रेरणा हैं जो विज्ञान, अंतरिक्ष और उड़ान के क्षेत्र में कुछ बड़ा करना चाहते हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि अगर आपके अंदर जुनून और मेहनत करने का हौसला है, तो आप किसी भी ऊँचाई को छू सकते हैं। सुनिता विलियम्स न केवल एक सफल अंतरिक्ष यात्री हैं बल्कि एक मिसाल हैं कि कैसे मेहनत और दृढ़ संकल्प से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

उनकी उपलब्धियाँ न केवल विज्ञान के क्षेत्र में बल्कि पूरी मानवता के लिए एक प्रेरणा हैं। सुनिता विलियम्स सिर्फ एक अंतरिक्ष यात्री नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने की मिसाल हैं। उनकी कहानी हमें सिखाती है कि अगर हम मेहनत और लगन से काम करें, तो आसमान भी हमारी सीमा नहीं!

मुंबई में लॉरेंस गैंग के ५ सदस्य गिरफ्तार

क्राइम ब्रांच ने ७ पिस्तौल और २१ जिंदा कारतूस जब्त किए

मुंबई क्राइम ब्रांच ने अंधेरी इलाके से लॉरेंस गैंग के ५ सदस्यों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से ७ पिस्तौल और २१ जिंदा कारतूस जब्त किए हैं। पुलिस ने बुधवार, २ अप्रैल को यह जानकारी देते हुए बताया कि उन्हें संदेह है कि गैंग के निशाने पर कोई सेलिब्रिटी था। क्राइम ब्रांच के अधिकारी ने बताया कि विशेष सूचना के आधार पर क्राइम ब्रांच की टीम ने लॉरेंस गैंग के सदस्यों को शनिवार को हिरासत में लिया। उनके हथियार ले जाने के पीछे के मकसद की जांच की जा रही है।

गिरफ्तार लोगों की पहचान विकास ठाकुर उर्फ विक्की, सुमित कुमार दिलावर, श्रेयस यादव, देवेंद्र सक्सेना और विवेक गुप्ता के रूप में की गई है। ये सभी राजस्थान, बिहार और उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। सुमित कुमार और विकास हिस्ट्रीशीटर हैं।

दरअसल, लॉरेंस गैंग की तरफ से सलमान खान को लगातार धमकियां मिल रही हैं। ऐसे में गैंग के ५ सदस्यों की गिरफ्तारी और उनके पास से हथियार बरामद होने के बाद इसे सलमान खान की सुरक्षा के लिए बड़े खतरे के रूप में भी देखा जा रहा है। इससे पहले २६ मार्च को लॉरेंस गैंग से लगातार मिल रही धमकियों पर सलमान खान ने पहली बार चुप्पी तोड़ी। मुंबई में फिल्म 'सिकंदर' की प्रेस मीट में कहा कि भगवान-अल्लाह ने जितनी उम्र लिखी होगी, उतनी जरूर जिएंगे। सिक्योरिटी बढ़ाई जाने पर सलमान ने कहा, 'कभी-कभी इतने लोगों को साथ लेकर चलने से दिक्कत हो जाती है।'

सलमान को Y+ कैटेगरी की सुरक्षा,

हर समय ११ जवान साथ रहते हैं

२०२३ में लॉरेंस गैंग से धमकी मिलने के बाद ही सलमान की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। उन्हें महाराष्ट्र सरकार की तरफ से Y+ कैटेगरी की सुरक्षा मिली हुई है। ११ जवान हर समय साथ रहते हैं, इसमें एक या दो कमांडो और २ PSO भी शामिल होते हैं। सलमान की गाड़ी के आगे और पीछे एस्कॉर्ट करने के लिए दो गाड़ियां हमेशा रहती हैं। इसके साथ-साथ सलमान की गाड़ी भी पूरी तरह बुलेटप्रूफ है। ८ महीने पहले १४ अप्रैल को सुबह करीब ५ बजे सलमान खान के गैलेक्सी अपार्टमेंट में ७.६ बोर की बंदूक से ४ राउंड फायरिंग हुई थी। इसके बाद जनवरी में उनके अपार्टमेंट की बालकनी बुलेटप्रूफ कर दी गई है। साथ ही हाई रिजोल्यूशन कैमरे भी चारों तरफ लगाए गए हैं।

सुनीता विलियम्स की धरती पर ऐतिहासिक वापसी

सुनीता विलियम्स की अंतरिक्ष से धरती तक की यात्रा बेहद रोमांचक और चुनौतियों से भरी होती है। चाहे स्पेस शटल से वापसी हो या सोयुज कैप्सूल से लैंडिंग, हर बार उन्होंने अद्भुत साहस और धैर्य दिखाया। अब, २०२४ में उनका Boeing Starliner मिशन नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा। भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स अपने सहयोगी बुच विल्मोर के साथ ९ महीने बाद पृथ्वी पर लौटी हैं। नासा के ये दोनों अंतरिक्ष यात्री कुल २८६ दिनों के बाद धरती पर वापस लौटे हैं। उनकी वापसी स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्ष यान के जरिए हुई। १७ घंटे की यात्रा करने के बाद ड्रैगन अंतरिक्ष यान १९ मार्च की सुबह ३ बजकर २७ मिनट पर फ्लोरिडा के तट के पास समुद्र में स्प्लैश डाउन हुआ।

अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छूती सुनिता विलियम्स

अंतरिक्ष में फंसे नासा के दो अंतरिक्ष यात्री बुच विल्मोर और सुनीता विलियम्स को लेकर स्पेसएक्स का यान धरती पर पहुंच गया है। स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्ष यान में सवार होकर पृथ्वी पर आ चुकी हैं। भारतीय समयानुसार बुधवार तड़के ३ बजकर २७ मिनट पर ये स्पेसक्राफ्ट फ्लोरिडा के तट पर लैंड हुई।

भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स अपने सहयोगी बुच विल्मोर के साथ ९ महीने बाद पृथ्वी पर लौटी हैं। नासा के ये दोनों अंतरिक्ष यात्री कुल २८६ दिनों के बाद धरती पर वापस लौटे हैं। उनकी वापसी स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्ष यान के जरिए हुई। १७ घंटे की यात्रा करने के बाद ड्रैगन अंतरिक्ष यान १९ मार्च की सुबह ३ बजकर २७ मिनट पर फ्लोरिडा के तट के पास समुद्र में स्प्लैश डाउन हुआ। इसके बाद अंतरिक्ष यान में सवार सभी यात्रियों के सेहत की जांच की जाएगी। आपको बता दें कि भारत की बेटी सुनीता विलियम्स अपने साथी विल्मोर के साथ जून २०२४ से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर फंसे हुई थी। दोनों एक सप्ताह के लिए ही गए थे, लेकिन अंतरिक्ष यान से हीलियम के रिसाव और वेग में कमी होने की वजह से अंतरिक्ष स्टेशन पर नौ महीनों तक रुकना पड़ा।

सुनीता विलियम्स को धरती पर वापस लाने के लिए स्पेसएक्स का यह क्रू मिशन १५ मार्च को अंतरिक्ष में गया था। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एलन मस्क को ९ महीने से फंसे इन दोनों अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षित वापसी की जिम्मेदारी दी थी। हालांकि, कुछ तकनीकी

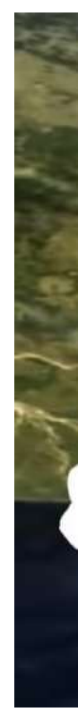

दिक्कतों के कारण वे बीच में फंस गए थे और इस वजह से मिशन में देरी हुई। अब १७ घंटे के भीतर यह मिशन पूरा होने की उम्मीद है। सुनीता विलियम्स की वापसी से हर कोई काफी खुश है और देशभर में उनके लिए जाप और पूजा-हवन का आयोजन हो रहा था।

सुनीता विलियम्स का जन्म १९ सितंबर १९६५ को अमेरिका के ओहायो के यूक्लिड में हुआ था। फिर भी वह भारतीय मूल की मानी जाती हैं, क्योंकि उनकी जड़ें गुजरात से जुड़ी हैं। दरअसल, सुनीता के पिता दीपक पांड्या मूल रूप से मेहसाणा जिले के झूलासन गांव के रहने वाले थे और बाद में वे अमेरिका में न्यूरोएनाटॉमी के क्षेत्र में काम करने लगे थे। इसके बाद, सुनीता ने माइकल विलियम्स नामक व्यक्ति से शादी रचाई थी, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं है।

सुनीता विलियम्स स्पेस में कैसे फंस गईं थी?

अंतरिक्ष रहस्यों से भरी दुनिया है. नासा की भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स अपने साथी बैरी विल्मोर के साथ अंतरिक्ष में फंस गई हैं. लेकिन सवाल ये है कि आखिर सुनीता विलियम्स स्पेस में कैसे फंसी थी...

स्पेस

अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने के लिए अधिकांश देशों के वैज्ञानिक लग हुए हैं. जिसके लिए वो अलग-अलग प्रोजेक्ट करते हैं. अंतरिक्ष यान दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर पांच जून को लेकर गया था.

अंतरिक्ष में जाने वाले अंतरिक्षयात्रियों के ऊपर कई तरह के खतरे होते हैं. स्पेस का कोई भी प्रोजेक्ट १०० फीसदी सुरक्षित नहीं होता है. अंतरिक्ष यात्रा के दौरान, उल्कापिंड, स्पेस मलबा भी एक खतरा है. हालांकि अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स स्पेस स्टेशन में दो बार लंबा समय

कल्पना चावला और सुनिता विलियम्स सिर्फ अंतरिक्ष यात्री नहीं, बल्कि उन सभी के लिए प्रेरणा हैं जो बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने की हिम्मत रखते हैं। कल्पना ने दिखाया कि कठिनाइयों के बावजूद भी सफलता संभव है, और सुनिता ने साबित किया कि सपनों को जीना ही असली जीत है। इन दोनों ने यह सिद्ध किया कि 'आसमान की कोई सीमा नहीं होती, सपनों की भी नहीं!'

बिता चुकी हैं. लेकिन इस बार वो स्पेस में फंस गई थी. उनके स्पेसक्राफ्ट में खराबी के कारण धरती पर वह नहीं आ पाई. नासा के मुताबिक मिशन को ४५ दिनों तक बढ़ाया जा सकता है. अब सवाल है कि आखिर इस दौरान एस्ट्रोनॉट्स के शरीर पर क्या असर पड़ेगा? स्पेस में ज्यादा दिनों तक रहने पर शरीर के तरल पदार्थ माइक्रोग्रैविटी में ऊपर की ओर बढ़ते हैं. इस कारण हमारे शरीर के फिल्टर सिस्टम यानी किडनी को समस्याओं का सामना करना पड़ता है. इस दौरान शरीर में मौजूद तर ऊपर की ओर जाते हैं, जिससे चेहरे पर सूजन आ जाती है. गुर्दे उचित द्रव संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं, जिससे संभावित रूप से डिहाइड्रेशन या फ्लूइड ओवरलोड होता है. माइक्रोग्रेविटी के कारण हड्डियों में कैल्शियम का उत्सर्जन बढ़ने से गुर्दे में पथरी का खतरा बढ़ जाता है.

स्पेस से वापस धरती पर सुनीता विलियम्स और उनके साथी कब लौटेंगे, इसको लेकर नासा की तरफ से कोई बयान जारी नहीं किया गया. नासा के मुताबिक इस मिशन को ४५ दिनों तक बढ़ाया जा सकता है. अनुमान के मुताबिक सुनीता और उनके साथी की वापसी जुलाई महीने के अंत तक हो सकती थी. नासा की टीम लगातार सभी तकनीकी खामियों को दूर करने और उनको समझने का प्रयास कर रही थी.

१. अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) से वापसी ...

जब सुनीता विलियम्स को धरती पर लौटना होता है, तो सोयुज कैप्सूल (Soyuz Spacecraft) या किसी अन्य रिटर्न व्हीकल में सवार होकर उनकी वापसी होती है। यह प्रक्रिया कुछ चरणों में पूरी होती है:

A. प्रस्थान की तैयारी

□ पृथ्वी पर लौटने से पहले, अंतरिक्ष यात्री अपने कैप्सूल (जैसे कि सोयुज) में प्रवेश करते हैं।

□ वे अपनी स्पेससूट (Sokol Suit) पहनते हैं, जो उन्हें वापसी के दौरान सुरक्षा देता है।

□ ISS से अलग होने (Undocking) के लिए सभी सिस्टम्स को चेक किया जाता है।

B. ISS से अलगाव (Undocking)

□ सोयुज कैप्सूल धीरे-धीरे ISS से अलग (Detach) होता है और पृथ्वी की ओर यात्रा शुरू करता है।

□ यह प्रक्रिया स्वचालित और मैन्युअल मोड में की जा सकती है।

२. पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश (Re-Entry) ...

A. धीमा होने की प्रक्रिया (DeoRit Burn) □

□ कैप्सूल के थ्रस्टर चालू किए जाते हैं ताकि इसकी गति धीरे-धीरे कम हो।

□ यह प्रक्रिया २५ मिनट तक चल सकती है, जिससे कैप्सूल का मार्ग पृथ्वी की ओर निर्देशित होता है।

B. वायुमंडल में प्रवेश (Atmospheric Entry) □□

□ जब कैप्सूल पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करता है, तो अत्यधिक घर्षण (Friction) के कारण इसका बाहरी तापमान १,६००°C तक पहुँच सकता है।

□ हीट शील्ड (Heat Shield) इसे जलने से बचाती है।

□ इस समय अंतरिक्ष यात्री को गंभीर G-फोर्स (४ से ५ G) का अनुभव होता है, जिससे शरीर पर भारी दबाव पड़ता है।

३. पैराशूट द्वारा धीमी लैंडिंग ...

□ जब कैप्सूल पृथ्वी के करीब पहुँचता है, तो बड़े पैराशूट खुलते हैं।

□ यह कैप्सूल की गति को लगभग ५०० km/h से 20 km/h तक घटा देता है।

□ अंतिम क्षणों में, कैप्सूल में लगे सॉफ्ट लैंडिंग इंजन (Soft Landing Thrusters) चालू हो जाते हैं, ताकि झटका कम हो।

४. लैंडिंग और बचाव अभियान ...

□ सोयुज कैप्सूल आमतौर पर कजाकिस्तान के स्टेप्पे (Steppe of Kazakhstan) में लैंड करता है।

□ अंतरिक्ष एजेंसी (NASA या Roscosmos) के हेलीकॉप्टर और बचाव दल तुरंत वहाँ पहुँचते हैं।

□ अंतरिक्ष यात्रियों को सावधानीपूर्वक बाहर निकाला जाता है क्योंकि लंबे समय तक माइक्रोग्रैविटी में रहने से उनके शरीर पर असर पड़ता है (जैसे मांसपेशियों की कमजोरी और संतुलन में कठिनाई)।

□ उन्हें तुरंत मेडिकल चेकअप और रिकवरी प्रोसेस के लिए विशेष केंद्रों में ले जाया जाता है।

सुनीता विलियम्स की खास वापसी मिशन □

□ सितंबर २०१२: सुनीता विलियम्स ने Expedition 32/33 के तहत १२७ दिन अंतरिक्ष में बिताए और फिर सोयुज TMA-05M से सफलतापूर्वक धरती पर लौटीं।

□ २००७ में: जब वे पहली बार लौटीं, तो उन्हें कुछ हफ्तों तक पुनर्वास और चिकित्सा उपचार से गुजरना पड़ा ताकि उनका शरीर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के अनुकूल हो सके।

□ २०२४ में: वे Boeing Starliner से नई अंतरिक्ष यात्रा पर जाने वाली हैं।

सुनीता विलियम्स और अन्य अंतरिक्ष

यात्रियों के लिए अंतरिक्ष से धरती तक का सफर बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण होता है। अत्यधिक गर्मी, G-फोर्स, वायुमंडलीय घर्षण, और पैराशूट लैंडिंग - इन सभी चुनौतियों के बावजूद, वे हर मिशन को सफलता पूर्वक पूरा करती हैं।

सुनीता विलियम्स के प्रमुख अंतरिक्ष मिशन और धरती पर वापसी □□

भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स (Sunita Williams) ने दो बार अंतरिक्ष की यात्रा की है और कुल मिलाकर ३२२ दिन, १७ घंटे, २ मिनट वहां बिताए हैं। उन्होंने कई महत्वपूर्ण रिकॉर्ड बनाए, जिसमें सबसे ज्यादा समय तक स्पेसवॉक (EVA) करने का रिकॉर्ड भी शामिल था। आइए उनके दोनों अंतरिक्ष मिशन और धरती पर वापसी की रोमांचक यात्रा के बारे में जानते हैं।

□ पहला मिशनः STS-११६ (१० दिसंबर २००६ - २२ जून २००७)

मिशन की मुख्य बातेंः

□ सुनीता विलियम्स १० दिसंबर २००६ को नासा के स्पेस शटल डिस्कवरी (Discovery STS-116) से अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पहुंचीं।

□ उन्होंने चार स्पेसवॉक (EVA) किए, जिसमें उन्होंने वायरिंग सिस्टम बदला और ISS के सोलर पैनल इंस्टॉल किए।

□ वह अंतरिक्ष में १९५ दिन (६ महीने से ज्यादा) रहीं, जो उस समय किसी महिला के लिए रिकॉर्ड था।

□ धरती पर वापसी (Re-Entry and Landing)

□ २२ जून २००७ को उन्होंने अटलांटिस स्पेस शटल (STS-117) से पृथ्वी पर वापसी की।

□ उनका कैप्सूल केनेडी स्पेस सेंटर, फ्लोरिडा (Kennedy Space Center, Florida) में लैंड हुआ।

□ वापसी के दौरान गंभीर G-फोर्स (४-५ G) का सामना करना पड़ा।

□ लैंडिंग के बाद उन्हें कुछ दिनों तक चक्कर और कमजोरी महसूस हुई क्योंकि उनका शरीर लंबे समय तक भारहीनता (Microgravity) में रहने के कारण कमजोर हो गया था।

□ दूसरा मिशनः Expedition 32/33 (१५ जुलाई २०१२ - १८ नवंबर २०१२)

मिशन की मुख्य बातेंः

□ यह मिशन सोयुज TMA-05M रॉकेट के जरिए लॉन्च किया गया।

□ सुनीता ISS की कमांडर (Commander) बनीं, जो किसी महिला के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी।

□ उन्होंने अंतरिक्ष में रहते हुए तीन स्पेसवॉक किए और कुल ५० घंटे और ४० मिनट स्पेसवॉक में बिताए।

□ उन्होंने कई वैज्ञानिक प्रयोग किए, जिनमें मानव शरीर पर माइक्रोग्रैविटी के प्रभाव से जुड़े अध्ययन शामिल थे।

□ धरती पर वापसी (Soyuz Landing)

□ १८ नवंबर २०१२ को सोयुज कैप्सूल पृथ्वी के लिए रवाना हुआ।

□ कैप्सूल ने ७.६ किमी/सेकंड की रफ्तार से पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश किया।

□ लैंडिंग से पहले हीट शील्ड ने घर्षण से उत्पन्न १६००°C तापमान को झेला।

□ कैप्सूल ने कजाकिस्तान के स्टेप्पे (Steppe of Kazakhstan) में लैंड किया।

□ हेलीकॉप्टर से रेस्क्यू टीम पहुंची और उन्हें कैप्सूल से निकाला गया।

□ लंबे समय तक भारहीनता में रहने की वजह से उनका संतुलन बिगड़ गया था और उन्होंने कुछ समय तक मेडिकल चेकअप और रिकवरी की।

□ २०२४: नया मिशन (Boeing Starliner)

सुनीता विलियम्स जल्द ही Boeing Starliner-1 मिशन के तहत फिर से अंतरिक्ष में जाने वाली हैं। यह मिशन ISS तक क्रू मेंबर को ले जाने के लिए पहला ऑपरेशनल मिशन होगा।

□ सुनीता विलियम्स के प्रमुख रिकॉर्डः

□ ३२२ दिन अंतरिक्ष में बिताने वाली भारतीय मूल की पहली महिला।

□ स्पेसवॉक में सबसे ज्यादा समय बिताने वाली पहली महिला अंतरिक्ष यात्री।

□ ISS की कमांडर बनने वाली पहली भारतीय मूल की महिला।

जब वह अंतरिक्ष में थीं, तब उन्होंने अपने साथ भगवद गीता और भगवान गणेश की एक छोटी मूर्ति रखी थी, जिससे उनका भारतीय संस्कृति से जुड़ाव साफ झलकता है। २००७ में, जब वह ISS में थीं, तब उन्होंने अपने लंबे बाल काटकर कैंसर पीड़ित बच्चों के लिए दान कर दिए। यह उनकी संवेदनशीलता और दयालुता को दर्शाता है। सुनिता को भारतीय खाने से बहुत प्यार है। जब वह अंतरिक्ष में थीं, तो उन्होंने अपने साथ समोसे और चटनी भेजने की इच्छा जताई थी। २००६-०७ के अपने पहले मिशन में, सुनिता ने १९५ दिन, १९ घंटे और ५८ मिनट अंतरिक्ष में बिताए थे, जो उस समय किसी भी महिला के लिए सबसे लंबा प्रवास था।

ISRO की ये बड़ी उपलब्धियों ने भारत को दिलाई खास पहचान

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने पिछले कुछ सालों में काफी कामयाबी दर्ज की है। इसरो की कुछ बड़ी उपलब्धियां ऐसी हैं, जिन्होंने न केवल भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई, बल्कि आम भारतीयों के मन में गर्व का एहसास भी जगाया है।

आर्यभट्ट

आर्यभट्ट भारत का पहला उपग्रह था, जिसका नाम खगोलशास्त्री के नाम पर रखा गया था। इस मिश्रण को १९ अप्रैल १९७५ को लॉन्च किया गया था। आर्यभट्ट के लॉन्च के साथ ही भारत ने अंतरिक्ष युग में कदम रखा था।

भारत का पहला चंद्र मिशन चंद्रयान-१, २२ अक्टूबर, २००८ को लॉन्च किया गया था। चंद्रयान-१ का नाम पूर्व अध्यक्ष डॉ. विक्रम साराभाई के नाम पर रखा गया था। इस मिशन ने चंद्रमा की सतह पर पानी के अंशों का पता लगाया था।

मंगलयान

मंगलयान मिशन आप सभी को पता होगा।

यह भारत का मंगल ग्रह परिक्रमा यान था जिसने २०१४ से २०२२ तक ग्रह का निरीक्षण किया था। मंगल तक पहुंचने का प्रयास कई अन्य देश ने किया है लेकिन इन देशों ने सफलता प्राप्त नहीं की है। हालांकि भारत ने पहली बार में ही मंगलयान मिशन को पूरा कर दिया था।

अंतरिक्ष में कैसे रहते हैं एस्ट्रोनॉट?

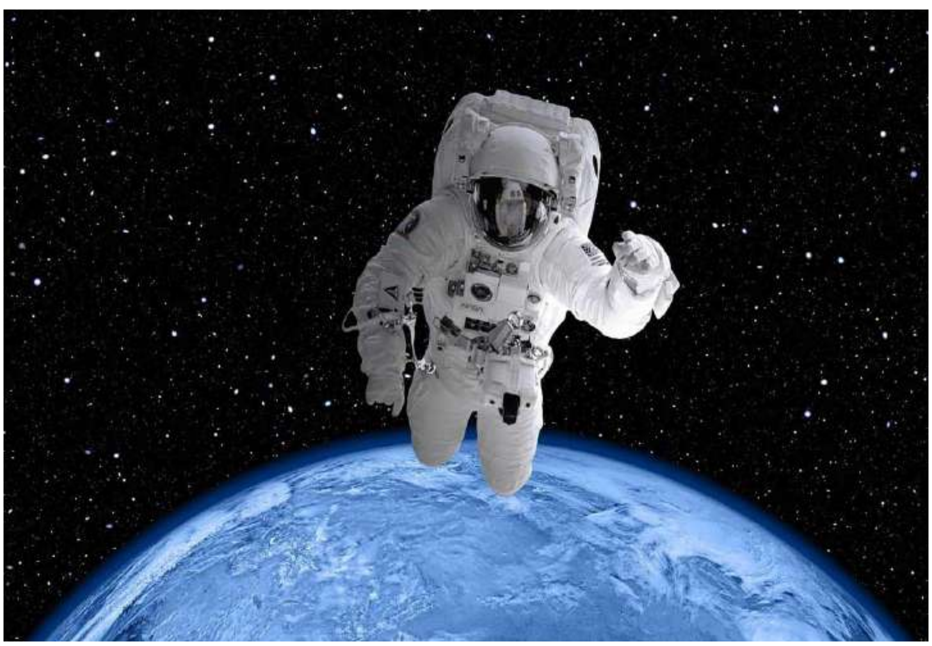

भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और बैरी विल्मोर धरती से लगभग ३२० किलोमीटर दूर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में फंसे हुए थे। जून की शुरुआत में भेजे गए दोनों अमेरिकी एस्ट्रोनॉट्स को अंतरिक्ष से आठ दिन बिताकर वापस आना था, लेकिन बोइंग स्टारलाइनर अंतरिक्ष यान में हीलियम लीक के होने के कारण उन्हें आठ-नौ महीने तक वहीं रहना पड़ा।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण बल नही होता। अगर कोई सामान ऊपर से गिराया जाए तो वो जमीन पर नहीं आता, बल्कि हवा में ही तैरता रहता है। ऐसे में, वहां रिसर्च करने जा रहे एस्ट्रोनॉट को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। असल में, अंतरिक्ष में पृथ्वी से भोजन और पानी की सप्लाई की जाती है, जिसे बहुत ही सावधानीपूर्वक इस्तेमाल किया जाता है। शरीर से निकलने वाले तरल पदार्थ जैसे मूत्र को वाटर रिकवरी सिस्टम से रिसाइकल करके फिर से उसे पिया जाता है।

पृथ्वी की तरह अंतरिक्ष में टॉयलेट की कोई व्यवस्था नहीं है। माइक्रोग्रैविटी के कारण अंतरिक्ष में पदार्थ स्पेस स्टेशन में तैरता रहता है। इसलिए अंतरिक्ष यात्री एक नली में पेशाब करते हैं, जिसमें आगे कंटेनर लगा होता है। इसे फिर, पुनःउपयोग के लिए रिसाइकिल किया जाता है। पृथ्वी जैसे अंतरिक्ष पर स्नान करना संभव नहीं होता है। गुरुत्वाकर्षण की कमी की वजह से अंतरिक्ष में एस्ट्रोनॉट काफी कम पानी का इस्तेमाल करते हैं। नहाने के लिए वे स्मार्ट तरीके से पानी का उपयोग करते हैं। एस्ट्रोनॉट नहाने के लिए अपने शरीर को गीले तौलिये से पोंछते हैं। वे शरीर को सुखाने के लिए सूखे तौलिये का उपयोग करते हैं।

Wholesale Furniture Market

Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

जज के घर करोड़ों का कैश!

१.सुप्रीम कोर्ट के जज संपत्ति का ब्योरा सार्वजनिक करेंगे
२.जानकारी वेबसाइट पर अपलोड होगी;
३. दिल्ली हाईकोर्ट जज के घर कैश मिलने के बाद फैसला लिया

जस्टिस यशवंत वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित घर में १४ मार्च की रात आग लगी। उनके घर के स्टोर रूम जैसे कमरे में ५००-५०० रुपए के जले नोटों के बंडलों से भरे बोरे मिले। सवाल खड़ा हुआ कि इतना कैश कहां से आया। मामले ने तूल पकड़ा।

१४ मार्चः कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने यह मामला राज्यसभा में उठाया। उन्होंने न्यायिक जवाबदेही का मसला उठाते हुए सभापति से इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जज के खिलाफ महाभियोग के संबंध में लंबित नोटिस का जिक्र किया था।

२२ मार्चः CJI संजीव खन्ना ने जस्टिस वर्मा पर लगे आरोपों की इंटरनल जांच के लिए

ज्यूडीशियरी में ट्रांसपेरेंसी और जनता का भरोसा बनाए रखने के लिए सुप्रीम कोर्ट के सभी जजों ने पदभार ग्रहण करने के दौरान ही अपनी संपत्ति का ब्योरा सार्वजनिक करने का फैसला किया है। अप्रैल को हुई फुल कोर्ट मीटिंग में सभी ३४ जजों ने चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया संजीव खन्ना की मौजूदगी में अपनी संपत्ति का खुलासा करने का फैसला लिया है। जजों ने यह भी कहा कि संपत्तियों से जुड़ी डीटेल सुप्रीम कोर्ट की ऑफिशियल वेबसाइट पर अपलोड की जाएगी। हालांकि, वेबसाइट पर संपत्ति की घोषणा स्वैच्छिक होगी। यह फैसला दिल्ली हाईकोर्ट के जज यशवंत वर्मा के घर से कैश मिलने के विवाद के बाद लिया गया है। जस्टिस वर्मा के सरकारी बंगले में १४ मार्च को आग लगी थी। फायर सर्विस टीम को वहां अधजले नोट मिले थे।

तीन सदस्यीय समिति बनाई थी। उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट चीफ जस्टिस से जस्टिस वर्मा को कोई भी काम न सौंपने को कहा था।

२२ मार्चः देर रात सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस के घर से १५ करोड़ कैश मिलने का वीडियो जारी किया। ६५ सेकेंड के वीडियो में नोटों से भरी जली बोरियां दिखाई दे रही हैं। मामले के खुलासे के बाद से जस्टिस वर्मा खुद ही छुट्टी पर हैं।

२१ मार्चः जस्टिस वर्मा का ट्रांसफर इलाहाबाद हाईकोर्ट होने का प्रस्ताव बनाया गया।

जस्टिस यशवंत वर्मा इलाहाबाद हाईकोर्ट में ही बतौर जज नियुक्त हुए थे। इसके बाद अक्टूबर २०२१ में उनका दिल्ली हाईकोर्ट ट्रांसफर कर दिया गया था। जज बनने से पहले वह इलाहाबाद हाईकोर्ट में राज्य सरकार के चीफ स्टैंडिंग काउंसिल भी रहे हैं।

२३ मार्चः कैश कांड के लिए ३ सदस्यीय कमेटी बनी

सुप्रीम कोर्ट के CJI संजीव खन्ना के आदेश पर कैश कांड की जांच के लिए तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित की गई। इसमें जस्टिस शील नागू (पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस), जी एस संधावालिया (हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस) और कर्नाटक हाईकोर्ट के जस्टिस अनु शिवरामन शामिल हैं।

मामले की जांच कितने समय में पूरी होनी है, फिलहाल यह तय नहीं किया गया है। अगर जांच कमेटी इस नतीजे पर पहुंचती है कि आरोप सही हैं, तो जस्टिस वर्मा को हटाने की कार्यवाही शुरू करने के लिए CJI संजीव खन्ना ये कदम उठा सकते हैं...

CJI संजीव खन्ना जस्टिस वर्मा को इस्तीफा देने या स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने की सलाह दे सकते हैं। अगर जस्टिस वर्मा CJI की सलाह को नहीं मानते हैं तो वे दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस को उन्हें कोई काम न देने का आदेश जारी करेंगे। इसके बाद CJI, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को तीन सदस्यीय समिति की रिपोर्ट देकर उसके नतीजे बताएंगे। जिसके बाद जस्टिस वर्मा को पद से हटाने की कार्यवाही शुरू हो सकेगी।

सुप्रीम कोर्ट की रिपोर्ट में जस्टिस वर्मा का भी पक्ष

रिपोर्ट में जस्टिस वर्मा का पक्ष भी है, जिसमें

उन्होंने कहा है कि जिस स्टोर रूम में नोटों की गड्डियां मिलने की बात की जा रही है, वहां उन्होंने या उनके परिवार ने कभी कोई पैसा नहीं रखा। वो एक ऐसी खुली जगह है, जहां हर किसी का आना-जाना होता है। उन्हें इस मामले में फंसाया जा रहा है। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डीके उपाध्याय ने इंटरनल इन्क्वायरी के बाद सुप्रीम कोर्ट को २१ मार्च को रिपोर्ट सौंपी थी। सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस वर्मा को ज्यूडिशियल काम देने से मना कर दिया है। अब जस्टिस वर्मा के ६ महीने की कॉल डिटेल्स की जांच की जाएगी।

बार एसोसिएशन के अध्यक्ष बोले- किसी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी

दिल्ली हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मोहित माथुर ने कहा- मैं मानता हूं कि बार एसोसिएशन जजों के जज के तौर पर काम करता है। जस्टिस वर्मा के खिलाफ आजतक किसी भी वकील ने मुझसे शिकायत नहीं की।

उन्होंने कहा- जस्टिस वर्मा दिल्ली हाईकोर्ट के बेहतरीन जजों में से एक हैं। हालांकि उन पर लग रहे आरोप और पब्लिक डोमेन में चल रहे सबूत बेहद गंभीर हैं। वीडियो क्लिप साफ नहीं है, इसलिए किसी फैसले पर आना जल्दबाजी होगी।

रिपोर्ट के बाद आगे क्या...

CJI संजीव खन्ना के ३ सवाल

घर के परिसर में मिले इतने कैश को जस्टिस वर्मा कैसे जस्टिफाई करेंगे?

जितनी भी रकम मिली है, जस्टिस वर्मा यह भी बताएं कि उसका सोर्स क्या है?

१५ मार्च की सुबह किस व्यक्ति ने जले हुए नोटों को कमरे से हटाया था?

CJI के ३ आदेश

जस्टिस वर्मा के घर सिक्योरिटी ऑफिसर्स और गार्ड की डिटेल्स भी दी जाए।

पिछले ६ महीने में जस्टिस वर्मा की ऑफिशियल और पर्सनल कॉल डिटेल निकाली जाए। जस्टिस वर्मा से अपील की जाती है वो अपने मोबाइल से मैसेज या डेटा डिलीट न करें।

सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध इंटरनल इन्क्वायरी रिपोर्ट का एक हिस्सा।

जस्टिस वर्मा की सफाई- वीडियो में जो दिखा, ये वैसा नहीं, जैसा मैंने देखा था

जस्टिस वर्मा ने दिल्ली हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को सौंपे जवाब में कहा- १४/१५ मार्च की रात बंगले के स्टाफ क्वार्टर के पास स्टोर रूम में आग लगी। कमरा पुराने फर्नीचर, बोतलें, क्रॉकरी, गद्दे, बागवानी उपकरण, सीपीडब्ल्यूडी की सामग्री रखने के लिए इस्तेमाल होता था।

कमरा खुला रहता था। इसमें स्टाफ क्वार्टर के पिछले दरवाजे से भी जा सकते थे। यह मेरे मुख्य आवास से अलग था।

घटना के दिन, पत्नी और मैं भोपाल में थे। मेरी बेटी और वृद्ध मां घर पर थीं। मैं १५ मार्च की शाम पत्नी के साथ दिल्ली लौटा। आग लगने के बाद आधी रात को बेटी और निजी सचिव ने दमकल विभाग को फोन किया।

आग बुझाने के दौरान, सभी स्टाफ और मेरे घर के सदस्यों को सुरक्षा कारणों से घटनास्थल से दूर रहने को कहा गया था। आग बुझाने के बाद वे वहां गए, तो उन्हें वहां कोई नकदी या पैसे नहीं मिले। मैंने और न मेरे परिवार के किसी सदस्य ने कभी उस स्टोर रूम में नकदी रखी। यह राशि मेरी नहीं है। १५ मार्च की शाम दिल्ली लौटने पर आपका पहला फोन आया था। आपके आग्रह पर आपके पर्सनल प्रोटोकॉल सेक्रेटरी भी घटनास्थल गए। वहां कोई नकदी नहीं मिली। यह बात उस रिपोर्ट से भी स्पष्ट है, जो मुझे सौंपी गई है।

अगले दिन अदालत शुरू होने से पहले आपने पहली बार वह वीडियो और तस्वीरें दिखाईं, जो आपसे पुलिस आयुक्त ने साझा थीं। इन वीडियो को देखकर मैं स्तब्ध रह गया क्योंकि इसमें दिखाया गया दृश्य उस स्थल से मेल नहीं खा रहा था, जिसे मैंने स्वयं देखा था। इसी कारण मैंने पहली बार यह कहा था कि यह मुझे फंसाने और मेरी छवि धूमिल करने की साजिश प्रतीत होती है। घटना ने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि यह केवल षड्यंत्र का हिस्सा है, जो दिसंबर २०२४ में सोशल मीडिया पर मेरे खिलाफ लगाए गए निराधार आरोपों से जुड़ा हो सकता है। मैं आरोप को नकारता हूं कि हमने स्टोर रूम से नकदी हटाई। हमें कभी कोई जली हुई नकदी नहीं दिखाई गई और न ही हमें जली हुई नकदी दी गई। वहां से केवल कुछ मलबा हटाया गया।

एक जज के लिए उसकी प्रतिष्ठा और चरित्र से बढ़कर कुछ नहीं होता। यह घटना मेरी वर्षों की मेहनत और साख को नुकसान पहुंचाने वाली है।सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध इंटरनल इन्क्वायरी रिपोर्ट का दूसरा हिस्सा।

दिल्ली HC के चीफ जस्टिस ने ये जानकारियां दीं...

दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डीके उपाध्याय ने २१ और २२ मार्च को सीजेआई को भेजी रिपोर्ट में ये जानकारियां दीं-

१५ मार्च को मैं होली की छुट्टी के चलते लखनऊ में था। शाम ४:५० बजे दिल्ली पुलिस कमिश्नर ने फोन पर बताया कि १४ मार्च की रात ११:३० बजे जस्टिस वर्मा के बंगले में आग लग गई थी। कॉल जस्टिस वर्मा के निजी सचिव ने की थी। सचिव को आग लगने की जानकारी आवास पर कार्यरत नौकर ने दी। जिस कमरे में आग लगी वह गार्ड रूम के बगल है। स्टोर रूम आमतौर पर बंद रहता था। मैंने अपने रजिस्ट्रार को मौके पर भेजा, उन्होंने बताया- जिस कमरे में आग लगी वहां ताला नहीं था।

१६ मार्च की शाम दिल्ली पहुंचने पर मैं आपसे (सीजेआई) मिला और रिपोर्ट दी। फिर जस्टिस वर्मा से संपर्क किया। उन्होंने १७ मार्च सुबह ८:३० बजे हाई कोर्ट गेस्ट हाउस में अपना पक्ष रखा और षड्यंत्र की आशंका जताई।

मेरी जांच के मुताबिक प्रथमदृष्टया जिस कमरे में आग लगी वहां किसी बाहरी का प्रवेश संभव नहीं दिखता। केवल वहां रहने वाले व्यक्ति, नौकर, और सीपीडब्ल्यूडी कर्मी ही जा सकते थे। इसलिए, मेरी राय है कि मामले की गहराई से जांच हो।

पुलिस की रिपोर्टः जज के पीए ने दी आग लगने की सूचना

भारतीय मुद्रा पुलिस ने हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को दी रिपोर्ट में कहा है कि १४ मार्च रात ११:४५ बजे पीसीआर को जस्टिस वर्मा के ३०, तुगलाक क्रेसेंट बंगले में आग लगने की जानकारी मिली। दो दमकल वाहनों को बुलाया गया। आग कोठी की चारदिवारी के कोने में स्थित कमरे में लगी। इन्हीं से लगे कमरे में सुरक्षाकर्मी रहते हैं। शॉर्ट सर्किट से लगी आग पर तुरंत काबू पाया गया। आग बुझने के बाद कमर में अधजले नोट से भरी ४-५ अधजली बोरियां मिलीं। आग की जानकारी जज के निजी सचिव ने दी।

२०१८ में भी ९७.८५ करोड़ रुपए के घोटाले में नाम जुड़ चुका

इससे पहले २०१८ में गाजियाबाद की सिम्भावली शुगर मिल में गड़बड़ी के मामले में जस्टिस वर्मा के खिलाफ CBI ने FIR दर्ज की थी। NDTV की रिपोर्ट के मुताबिक ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स ने मिल में गड़बड़ी की शिकायत की थी। शिकायत में कहा था कि शुगर मिल ने किसानों के लिए जारी किए गए ९७.८५ करोड़ रुपए के लोन का गलत इस्तेमाल किया है।

जस्टिस वर्मा तब कंपनी के नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर थे। इस मामले में CBI ने जांच शुरू की थी। हालांकि जांच धीमी होती चली गई। फरवरी २०२४ में एक अदालत ने CBI को बंद पड़ी जांच दोबारा शुरू करने का आदेश दिया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश को पलट दिया और CBI ने जांच बंद कर दी।

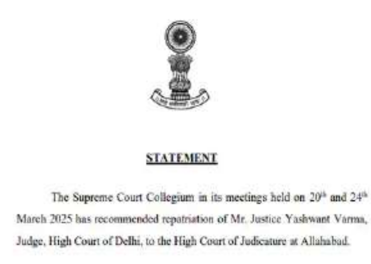

STATEMENT

The Supreme Court Collegium in its meetings held on 20th and 24th March 2025 has recommended repatriation of Mr. Justice Yashwant Varma, Judge, High Court of Delhi, to the High Court of Judicature at Allahabad.

जस्टिस यशवंत वर्मा का इलाहाबाद हाईकोर्ट ट्रांसफरःन्यायिक काम न सौंपने के निर्देश पुलिसकर्मियों के फोन फोरेंसिक लैब भेजे गए...

कैश मामले में घिरे जस्टिस यशवंत वर्मा को दिल्ली हाईकोर्ट से इलाहाबाद हाईकोर्ट ट्रांसफर कर दिया गया। सुप्रीम कोर्ट की सिफारिश और राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद आदेश जारी किया गया है। हालांकि इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस को निर्देश दिया गया है कि जस्टिस वर्मा को कोई न्यायिक काम न सौंपा जाए। इधर, सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस वर्मा पर ईई दर्ज करने की मांग वाली जनहित याचिका खारिज कर दी। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्जल भुइयां की बेंच ने कहा मामले में सुप्रीम कोर्ट की इंटरनल कमेटी जांच कर रही है। रिपोर्ट में कुछ गड़बड़ मिल ा तो FIR होगी या मामला संसद को भेजा जाएगा। जस्टिस वर्मा के सरकारी बंगले में १४ मार्च को आग लग गई थी। आग बुझाने पहुंची फायर सर्विस टीम को उनके स्टोर रूम में बोरियों में भरे ५००-५०० रुपए के अधजले नोट मिले थे। तब से ही यह पूरा मामला सुर्खियों में बना हुआ है।

३४ साल पुराने फैसले को चुनौती दी गई

जस्टिस वर्मा के खिलाफ FIR की मांग को लेकर एडवोकेट मैथ्यूज जे नेदुम्परा और तीन अन्य ने याचिका दायर की थी। याचिका में ३४ साल पुराने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले को भी चुनौती दी गई थी। १९९१ में के वीरस्वामी केस में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया था कि CJI की परमिशन के बिना हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के किसी जज के खिलाफ कोई क्रिमिनल केस शुरू नहीं किया जा सकता।

उधर जस्टिस यशवंत वर्मा को दिल्ली हाईकोर्ट के एडमिनिस्ट्रेटिव पैनल से हटा दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, २६ मार्च को हाईकोर्ट में प्रशासनिक कामों से जुड़ी कमेटियों का पुर्नगठन किया गया था। इसमें जस्टिस वर्मा को शामिल नहीं किया गया।

जस्टिस वर्मा को इलाहाबाद हाईकोर्ट भेजने का वहां की बार एसोसिएशन विरोध कर रही है। इसके लिए बार एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने २७ मार्च को CJI संजीव खन्ना और कॉलेजियम के सदस्यों से मिल कर ट्रांसफर पर पुनर्विचार करने की मांग की थी। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने २४ मार्च को जस्टिस वर्मा के ट्रांसफर की शिकायत की थी। इसका बार एसोसिएशन ने विरोध किया था और २५ मार्च को हड़ताल शुरू कर दी थी। ट्रांसफर ऑर्डर आने के बाद बार एसोसिएशन ने इसकी आलोचना की है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी ने शुक्रवार को 'भारत की न्यायपालिका के लिए सबसे काला दिन' बताया। उन्होंने घोषणा की कि वे जस्टिस वर्मा के शपथ ग्रहण समारोह का बहिष्कार करेंगे। सुप्रीम कोर्ट की बनाई इन-हाउस कमेटी के सामने जस्टिस यशवंत वर्मा की पेशी इसी हफ्ते हो सकती है। समिति के समक्ष पेश होने से पहले बुधवार को सीनियर वकीलों से मुल ाकात की। इनमें एडवोकेट सिद्धार्थ अग्रवाल, अरुंधति काटजू, तारा नरूला, स्तुति गुर्जर और एक अन्य जस्टिस वर्मा के घर पहुंचे।

वकीलों ने जांच समिति के सामने दिए जाने वाले जवाबों को फाइनल करने में मदद की। दरअसल, जस्टिस वर्मा अपना फाइनल जवाब तैयार कर रहे हैं, यही आगे की कार्रवाई का आधार बनेगा। २७ मार्च को दिल्ली फायर सर्विस चीफ अतुल गर्ग की भी सुप्रीम कोर्ट जांच पैनल के समक्ष पेश हुए। सूत्रों के मुताबिक अतुल गर्ग ने चाणक्यपुरी में हरियाणा स्टेट सर्किट हाउस में जांच पैनल के समक्ष गवाही दी और अपना बयान दर्ज कराया। हालांकि, गर्ग ने अग्निशमन कर्मियों के नकदी बरामद किए जाने के दावों से इनकार किया है।

कैश मामले में दिल्ली पुलिस के ८ कर्मियों के मोबाइल फोन जब्त कर फोरेंसिक विभाग को भेजा गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक तुगलक रोड थाने के स्टेशन हाउस ऑफिसर (SHO), जांच अधिकारी हवलदार रूपचंद, सब-इंस्पेक्टर रजनीश, मोबाइल बाइक पेट्रोलिंग पर मौके पर पहुंचे दो कर्मियों और तीन PCR कर्मियों के मोबाइल की जांच की जा रही है।

अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि आग लगने के दौरान जब अधिकारी मौके पर पहुंचे तो क्या इनके मोबाइल फोन पर कोई वीडियो रिकॉर्ड किया गया था या नहीं। और अगर वीडियो रिकॉर्ड किया था, तो क्या उसके साथ कोई छेड़छाड़ की गई है। दिल्ली पुलिस ने इन सभी के बयान भी दर्ज किए हैं।

कैश मामले में दिल्ली पुलिस के ८ कर्मियों के मोबाइल फोन जब्त कर फोरेंसिक विभाग को भेजा गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक तुगलक रोड थाने के स्टेशन हाउस ऑफिसर (SHO), जांच अधिकारी हवलदार रूपचंद, सब-इंस्पेक्टर रजनीश, मोबाइल बाइक पेट्रोलिंग पर मौके पर पहुंचे दो कर्मियों और तीन PCR कर्मियों के मोबाइल की जांच की जा रही है। अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि आग लगने के दौरान जब अधिकारी मौके पर पहुंचे तो क्या इनके मोबाइल फोन पर कोई वीडियो रिकॉर्ड किया गया था या नहीं। और अगर वीडियो रिकॉर्ड किया था, तो क्या उसके साथ कोई छेड़छाड़ की गई है। दिल्ली पुलिस ने इन सभी के बयान भी दर्ज किए हैं।

इलाहाबाद हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने ट्रांसफर का किया विरोध

दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के इलाहाबाद उच्च न्यायालय में स्थानांतरण के विरोध में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वकील ों ने विरोध प्रदर्शन किया। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी ने कहा कि मुख्य बात यह है कि हमारी लड़ाई किसी जज के खिलाफ नहीं बल्कि सिस्टम के खिलाफ है। यहां मेहनती जज हैं, अब उनकी छवि खतरे में है। इलाहाबाद हाईकोर्ट को डंपिंग ग्राउंड माना जा रहा है। अगर किसी कोर्ट के जज का भ्रष्टाचार के आरोप में तबादला हो रहा है तो उसे इलाहाबाद हाईकोर्ट में ट्रांसफर किया जा रहा है। तिवारी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट इल ाहाबाद उच्च न्यायालय की स्थिति जानता है। दोष को दूर करने के बजाय, यदि आप और अधिक दोषपूर्ण लोगों को यहां स्थानांतरित करेंगे, तो व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी।

यह दूसरी बार है जब बार एसोसिएशन ने न्यायमूर्ति वर्मा के स्थानांतरण का विरोध किया है; पिछले सप्ताह, उनके वापस लौटने की खबर आने के कुछ ही घंटों बाद, एसोसिएशन ने कहा था कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय कोई कचरादान नहीं है।

इससे पहले आज सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस वर्मा के तबादले के आदेश जारी किए। यह तबादला - पैसे मिलने के तुरंत बाद २० मार्च को प्रस्तावित - केंद्र द्वारा इस कदम को हरी झंडी मिलने के बाद ही किया जाएगा। पैसे मिलने और जज की नई पोस्टिंग को जोड़ने वाली रिपोर्टें - जिनमें तबादले के बारे में सवाल उठाए गए थे - पर प्रतिक्रिया देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एक का दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि उसने पंजाब और हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों की सदस्यता वाली एक समिति गठित की है, जो मामले की आंतरिक जांच करेगी। न्यायाधीश को लेकर विवाद पिछले सप्ताह तब शुरू हुआ, जब उन्हें आवंटित बंगले के बाहर एक बाहरी घर में जले हुए पैसे के ढेर मिलने की खबरें आईं।

जस्टिस वर्मा के अहम फ़ैसले

जस्टिस यशवंत वर्मा इलाहाबाद और दिल्ली हाई कोर्ट में पिछले लगभग ११ साल से जज के रूप में काम कर रहे हैं. इस दौरान उन्होंने कई अहम मामलों की सुनवाई की और फ़ैसले दिए.

डॉ. कफ़ील ख़ान को जमानतः साल २०१८ में इलाहाबाद हाई कोर्ट में अपने कार्यकाल के दौरान जस्टिस यशवंत वर्मा ने डॉ. कफ़ील ख़ान को जमानत दी थी.

अगस्त, २०१७ में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में कथित तौर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बाधित होने के कारण ६० बच्चों की मौत हो गई थी. मामले में डॉ. कफ़ील ख़ान पर चिकित्सीय लापरवाही का आरोप लगा था और उन्हें सात महीने तक हिरासत में रहना पड़ा था.

तब जस्टिस वर्मा ने डॉ. ख़ान को ज़मानत देते हुए कहा था, 'ऑन रिकॉर्ड ऐसी कोई सामग्री नहीं मिली है जिससे यह बात साबित हो सके कि याचिकाकर्ता (कफ़ील ख़ान) ने चिकित्सीय ल ापरवाही की है.'

उनके इस फ़ैसले ने चिकित्सीय जवाबदेही, सरकारी लापरवाही और मानवाधिकारों के मुद्दों पर लोगों का ध्यान खींचा था.

कांग्रेस की याचिका खारिजः पिछले साल मार्च में कांग्रेस पार्टी ने इनकम टैक्स को लेकर एक याचिका दायर की थी. दरअसल, कांग्रेस पार्टी को इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने १३ फरवरी २०२४ को १०० करोड़ से ज़्यादा बकाया टैक्स की वसूली के लिए नोटिस भेजा था.

आयकर विभाग ने कांग्रेस पर २१० करोड़ का जुर्माना लगाया था और कांग्रेस पार्टी का दावा था कि उसके बैंक खाते फ्रीज़ कर दिए गए. इस कार्रवाई के खिलाफ़ कांग्रेस नेता और वकील विवेक तन्खा ने इनकम टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल में याचिका लगाई थी लेकिन इसे खारिज कर दिया गया.

इसके बाद कांग्रेस ने दिल्ली हाई कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाया. मामले की सुनवाई जस्टिस यशवंत वर्मा और जस्टिस पुरूषेन्द्र कुमार कौरव की बेंच की. हाई कोर्ट ने कांग्रेस की याचिका खारिज करते हुए इनकम टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल के आदेश को बरकार रखा.

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की शक्तियां: जनवरी २०२३ में जस्टिस वर्मा की सिंगल बेंच ने फ़ैसला सुनाया कि ईडी मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत मनी लॉन्ड्रिंग के अलावा किसी दूसरे अपराध की जांच नहीं कर सकती है. जांच एजेंसी खुद से यह नहीं मान सकती कि कोई अपराध किया गया है. २४ जनवरी, २०२३ को दिए गए फ़ैसले में जस्टिस वर्मा ने कहा, 'पूर्व निर्धारित अपराध की जांच और सुनवाई आवश्यक रूप से उस संबंध में क़ानून द्वारा सशक्त अधिकारियों द्वारा की जानी चाहिए.' इस फ़ैसले से ईडी के अधिकारों संबंधी सीमाओं पर स्पष्टता आई और इसे जांच शक्तियों के दुरुपयोग को रोकने की कोशिश के तौर पर देखा गया.

दिल्ली आबकारी नीति मामले की मीडिया रिपोर्टिंगः नवंबर, २०२२ में दिल्ली के कथित शराब घोटाले में जस्टिस वर्मा आम आदमी पार्टी नेता और शराब नीति मामले में अभियुक्त विजय नायर की याचिका से संबंधित सुनवाई कर रहे थे.

इस दौरान उन्होंने कथित ग़लत रिपोर्टिंग के लिए कुछ न्यूज़ चैनलों से जवाब मांगा था.

पहले भी न्यायाधीशों पर लगे है आरोप...

दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा सरकारी आवास से बेहिसाब अधजले नोट मिलने के बाद जांच का सामना कर रहे हैं. उनसे न्यायिक कार्य वापस ले लिए गए हैं. इसके साथ ही न्यायमूर्ति वर्मा को मूल कोर्ट इलाहाबाद हाईकोर्ट स्थानांतरित कर दिया गया है. हालांकि, इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने न्यायमूर्ति वर्मा को इलाहाबाद हाईकोर्ट भेजे जाने के कोलेजियम के फैसले के विरोध में अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा कर दी है.

भ्रष्टाचार और यौन उत्पीड़न के आरोप

यह साल १९९३ की बात है, जब सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी रामास्वामी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप में महाभियोग की कार्यवाही शुरू की गई थी. हालांकि, लोकसभा में लाया गया महाभियोग प्रस्ताव दो तिहाई बहुमत हासिल करने में नाकाम रहा था. सुप्रीम के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंजन गोगोई भी साल २०१९ में विवादों में आए थे, जब सुप्रीम कोर्ट की एक पूर्व स्टाफ ने उन पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था.

आर्थिक और पद के दुरुपयोग का आरोप

साल २०११ में राज्यसभा ने कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सौमित्र सेन को आर्थिक दुरुपयोग का दोषी पाया था और उनके खिलाफ उच्च सदन में महाभियोग भी शुरू किया गया था. हालांकि, जब तक लोकसभा में महाभियोग की कार्यवाही शुरू होती, न्यायमूर्ति सेन ने पद से इस्तीफा दे दिया था.

इसी तरह से साल २०१६ में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति नागार्जुन रेड्डी पर एक दलित जज को निशाने पर लेने के लिए अपने पद के दुरुपयोग का आरोप लगा था. राज्यसभा के ६१ सदस्यों ने उनके खिलाफ अभियोग प्रस्ताव पेश किया था. हालांकि, बाद में इनमें से नौ सदस्यों ने कार्यवाही के प्रस्ताव से अपने हस्ताक्षर वापस ले लिए थे.

हाईकोर्ट के न्यायाधीश जा चुके जेल

किसी हाईकोर्ट के वर्तमान न्यायाधीश को जेल भेजने का पहला मामला बंगाल में सामने आया था, जब कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सीएस कर्नन को न्यायपालिका के खिलाफ टिप्पणी करने पर जेल भेज दिया गया था. उनको छह महीने के लिए जेल भेजा गया था. जस्टिस कर्नन ने कोलेजियम सिस्टम को निरंकुश करार दिया था.

साल २०१५ में राज्यसभा के ५८ सांसदों ने गुजरात हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला के खिलाफ महाभियोग का नोटिस दिया था, क्योंकि उन्होंने आरक्षण के मुद्दे पर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी. पाटीदार नेता हार्दिक पटेल से जुड़े एक मामले में उन्होंने यह टिप्पणी की थी. हालांकि, राज्यसभा के तत्कालीन सभापति हामिद अंसारी को महाभियोग का नोटिस दिए जाने के कुछ ही घंटों के भीतर न्यायमूर्ति ने अपने फैसले से उस टिप्पणी को हटा दिया था.

विवाह पर टिप्पणी कर बटोरी थीं सुर्खियां

यह साल २०१२ की बात है. कर्नाटक हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति भक्तवत्सल ने शारीरिक उत्पीड़न करने वाले पति से तलाक की अर्जी देने वाली एक महिला के मामले में टिप्पणी की थी कि सभी महिलाएं शादी में परेशानी झेलती हैं. ऐसे ही एक मामले को लेकर अपने ब्लॉग में टिप्पणी करने के कारण सुप्रीम कोर्ट के रिटायर न्यायाधीश जस्टिस मार्कंडेय काटजू को व्यक्तिगत रूप से पेश होकर सफाई देने का आदेश दिया गया था.

न्यायिक दुर्व्यवहार के भी लगे आरोप

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अरुण मिश्रा ने साल २०२० में अपने पद पर रहते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को विजनरी नेता बता कर पूरी न्यायपालिका के पक्षपातहीन होने पर विवाद खड़ा कर दिया था. फिर भूमि अधिग्रहण के एक मामले में सरकार के पक्ष में फैसला देकर उनको एक बार फिर न्यायिक पक्षपात के आरोपों का सामना करना पड़ा था. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा के खिलाफ साल २०१८ में विपक्षी पार्टियों ने न्यायिक दुर्व्यवहार के आरोप में महाभियोग प्रस्ताव पेश किया था. हालांकि, यह प्रस्ताव खारिज हो गया था. न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा का नाम प्रसाद मेडिकल कॉलेज के घूस मामले में लगाए गए आरोपों में भी उछला था.

उत्तपम

सामग्री-
१/२ उड़द दाल
२ बड़े चम्मच चना दाल (चना दाल के चिप्स)
२ कप चावल
१/२ छोटा चम्मच मेथी दाना
१/४ कप पोहा (ऑप्शनल)
१/२ सेंधा नमक
१/४ कप छाछ
१-२ कप पानी
३ बड़े चम्मच मक्खन
१ बड़ा प्याज
१ मीडियम टमाटर
१/४ गाजर बारीक कटी हुई
२ बारीक कटी हरी मिर्च
१/४ कप हरा धनिया, बारीक कटा

इसे भी पढ़ेंः साउथ इंडियन फूड के हैं शौकीन, तो एक बैटर से बनाएं ४ अलग-अलग डिश

बनाने का तरीका-

सबसे पहले उड़द दाल, चना दाल और मेथी को अच्छी तरह धोकर कम से कम ४-५ घंटे के लिए भिगोएं।

अब एक दूसरे कटोरे में चावल को भी धोकर भिगो लें। आप चाहें तो इसमें पोहा भी डाल सकती है, लेकिन उसे १५ मिनट पहले ही भिगोएं।

निर्धारित समय बाद, पानी निकालकर दोनों चीजों को अलग-अलग ग्राइंड कर लें। इसमें पानी डालकर दाल और चावल के बैटर की कंसिस्टेंसी को ठीक करें। अब दाल के बैटर में चावल का बैटर डालने के साथ सेंधा नमक डाल कर मिलाएं। इसमें छाछ डालकर तब तक मिल एं, जब तक कि बैटर फ्रॉथी न हो जाए। अब इस तैयार बैटर को रात भर ढककर गर्म जगह रख दें। एक प्लेट में सारी सब्जियों को काटकर रख लें। अब एक तवे को गर्म करें और ठंडे पानी के छींटों से तापमान सेट करें। उसमें मक्खन डालकर ग्रीस करें। अब एक करछी बैटर लेकर फैला लें। इसमें बारीक कटी सब्जियां डालकर इसे दोनों तरफ से सेक लें। मीडियम आंच पर उत्तपम को अच्छी तरह से सेक लें और फिर सांभर, हरी चटनी और नारियल की चटनी के साथ सर्व करें।

दाल के पापड़

सामग्रीः
मसूर दाल आटा-१ कप,
बेसन-१ चम्मच,
चावल का आटा-१/२ चम्मच,
हींग- १ चुटकी,
काली मिर्च पाउडर-१/३ चमच,
नमक-स्वादानुसार,
तेल-तलने के लिए,
हल्दी-१ चम्मच,
चाट मसाला-१/२ चम्मच

विधिः मसूर दाल पापड़ बनाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में मसूर दाल आटा, चावल का आटा और बेसन को डालकर अच्छे से फेंट लें। अब इस मिश्रण में काली मिर्च, नमक, हल्दी हींग, चाट मसाला और नमक को डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब ज़रूरत के हिसाब से मिश्रण में पानी को डालकर आटे की तरह गूंथ लें। मिश्रण गूथने के बाद लगभग १५ मिनट के लिए अलग रख दें ताकि मिश्रण सेट कर जाए। १० मिनट बाद मिश्रण में से लेकर छोटी-छोटी लोइयां बनाकर गोल बेल लें और १-२ दिन के लिए धूप में रख दें। अब एक पैन में तेल को डाल कर गर्म करें और मसूर दाल के पापड़ को अच्छे से फ्राई कर लें।

पपीता शेक

सामग्रीः
ताजा पपीता - ५०० ग्राम
चीनी - ७-८ छोटी चम्मच
दूध - ४०० ग्राम
बर्फ के क्यूब्स - १ गिलास

विधिः पपीता को धोइये और छील कर टुकड़े में काट लीजिये, बीज निकाल कर अलग कर दीजिये. पपीता के टुकड़े और चीनी मिक्सर जार में डाल कर बारीक पीस लीजिये. दूध और बर्फ के क्यूब्स डालिये और मिक्सर चला कर अच्छी तरह मिला दीजिये. आपका पपीता मिल्क शेक तैयार है। ठंडा ठंडा पपीता मिल्क शेक पीजिये।

सामग्रीः
कद्दू- १ किलो
चीनी या गुड़ - ५० ग्राम
टमाटर-१
हरी मिर्च - ४ - ५
हल्दी पाउडर -१/२ - चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - १ - चम्मच
धनिया पाउडर - २ चम्मच
हींग -१चुटकी
जीरा - १/२ चम्मच
मेथी दाना - १/२ चम्मच
सूखी लाल मिर्च -२
गरम मसाला -१ चम्मच
काला नमक - १/२
नमक - स्वादानुसार
तेल -आवश्यक्तानुसार

विधिः कद्दू को छोटे टुकड़ों में काट लें इसके साथ टमाटर और हरी मिर्च को भी बारीक काट लें। एक कड़ाही में तेल डालकर गर्म करें और सूखी लाल मिर्च, जीरा, मेथी दाना और हींग डाल कर भून लें। खड़े मसाले भुन जाने के बाद इसमें बारीक कटे टमाटर, हरी मिर्च और अदरक डालें। इसके साथ सभी सूखे मसाले और नमक डालकर अच्छी तरह से भूनें। जब मसाले से तेल अलग होने ल गे तब इसमें चीनी या गुड़ डालकर कुछ देर और पकने दें। चीनी घुलने के बाद इसमें कद्दू डालकर सभी मसालों में मिक्स कर दें। सब्जी को ढककर पकाएं, भंडारे वाली कद्दू की सब्जी तैयार है इसका मजा उठाएं।

हक्का नूडल्स

सामग्री
दो लोग तोस
१/२ पैकेट हक्का नूडल्स
१ लीटर पानी
१ कप पत्ता गोभी
२ गाजर लम्बाई मे कटी हुई
२ शिमला मिर्च लम्बाई मे कटी हुई
२ प्याज लम्बाई मे कटी हुई
हरा प्याज दो डनडी महीन कटी
तेल
टोमेटो केचप
सोया श्वास
चिली सवास
अजीनो मोटो
नमक
सफेद कालीमिर्च

विधिः सबसे पहले पानी को नमक और तेल डालकर उबलते पानी मे नूडल्स डाल कर पका ले। फिर छलनी की सहायता से नूडल्स को छान ले। गैस पर कढाई गर्म होने पर तेल डालकर। उसमे प्याज को हल्का साटे कर ले. फिर गाजर और शिमला मिर्च पत्ता गोभी को भी साटे कर ले। नूडल्स डालकर उसमे नमक कालीमिर्च और सभी सासॅ मिलाकर तेज आचॅ पर चलाए। ऊपर सै कटे हुए हरे प्याज से गारनिश करे। प्लेट में निकाल कर गर्मा गर्म हक्का नूडल्स सर्व करें।

झुणका

सामग्रीः
बेसन- 1 कप
कटे प्याज- 1 कप
धनिया पत्ता- 4 चम्मच
जीरा- 1 चम्मच
हल्दी- 1 चम्मच
राई- 1 चम्मच
हरी मिर्च- 2 चम्मच
नमक स्वादानुसार

विधिः इसे बनाने के लिए सबसे पहले एक बॉउल में बेसन लें। इसमें पानी डालकर इसका बैटर बनाएं। अब एक पैन में तेल गर्म करें। इसमें राई के दाने, जीरा, हरी मिर्च डालकर भूनें। इसके बाद इसमें प्याज डालकर पका लें। इसके बाद इसमें तैयार बैटर डालें। इसे चलातें रहें और थोड़ा पानी मिलाएं। इसमें हल्दी, नमक डालकर मिलाएं। इसे 10 मिनट तक पका लें। इसे धनिया पत्ता से सजाकर सर्व करें। तैयार है झुणका।

आखिर लड़के लड़कियों पर क्यों करते हैं शक!

आज के दौर में युवाओं के रिश्तों में ब्रेकअप होना बहुत ज्यादा बढ़ गया है। जिसकी मुख्य वजह होती है पार्टनर का शक करना। अगर आप भी अपने पार्टनर या गर्लफ्रेंड पर शक करते हैं, तो इस आदत को जल्द बदल लें। क्योंकि धीरे-धीरे ये शक करने की बीमारी बन जाती है। जिससे आपको शक करने के नुकसान के रुप में अपने सबसे प्यारे और करीबी रिश्ते से दूर होना पड़ सकता है।

१. आज के दौर में कॉलेज हो या ऑफिस हर जगह लड़कियां और लड़के साथ में काम करते हैं, जिससे कई बार लोगों के बीच अच्छी दोस्ती हो जाती है। लेकिन कई बार लड़कियों के ज्यादा लड़कों से क्लोज फ्रेंडशिप होने पर अक्सर बॉयफ्रेंड्स या पति शक करने लगते हैं। ऐसा वो हमेशा जलन की भावना के वजह से करते हैं। जिससे रिश्ते में तनाव आ जाता है।

२. अगर किसी लड़के की पार्टनर या गर्लफ्रेंड अचानक से उससे बात करना कम कर दे, उसके मैसेज्स और कॉल्स का रिप्लाई न दे। इसके अलावा आउटिंग के प्लान्स को हमेशा कैंसिल कर देना। उसकी पार्टनर (लड़के) में अरुचि यानि दिलचस्पी कम होने का संकेत देता है। जिसकी वजह लड़कों को न चाहते हुए भी अपनी पार्टनर पर शक होने लगता है।

३. अगर आपकी पार्टनर अचानक आपके साथ टाइम स्पेंड करने की जगह फोन पर अकेले में लंबी-लंबी बातें करती है। तो इससे लड़कों को लड़कियों पर अक्सर शक होने लगता है।

४.आज के दौर में युवाओं में आए खुलेपन (नाइट लाइफ) की वजह से भी लड़के, लड़कियों पर शक करने लगते हैं। जबकि कई बार कामकाजी लड़कियों के घर देर से आने पर पार्टनर और फैमिली भी उस पर शक करते हैं।

५. अगर आपकी पार्टनर कुछ दिनों से आपकी छोटी-छोटी बातों को समझे बगैर या गलत समझकर अक्सर लड़ना शुरु कर देते हैं या पार्टनर में कमियां तलाशने लगते हैं, तो ऐसे में लड़कियों के बदले अंदाज से लड़के उन पर शक करने लगते हैं। ■

खूबसूरती के लिए फायदेमंद हैं टमाटर

घर की किचन में मिलने वाला टमाटर यूं तो अक्सर खाने मे काम लिया जाता है लेकिन टमाटर का इस्तेमाल ना सिर्फ खाने में बल्कि ये आपकी खूबसूरती के लिए भी फायदेमंद है। टमाटर में कई ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो त्वचा के लिए फायदेमंद होते हैं। ये त्वचा को कुदरती तौर पर निखारने का काम करता है। बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करता है और सनस्क्रीन की तरह त्वचा की देखभाल करता है। आप टमाटर से तैयार फेस पैक का यूज अपनी स्किन के लिए कर सकते है या फिर इसके रस को सीधे फेस पर लगा कर दाग धब्बे हटा सकते है। टमाटर आपकी ऑयली स्किन की परेशानी को दूर करने के लिए भी काफी लाभकारी है। अगर आपके पास समय की कमी है तो केवल एक टमाटर को कुचल कर फेस पर लगाए और दस मिनट तक के लिये लगाकर रहने दें ऐसा करने से आपके स्किन पर सन टैनिंग की परेशानी दूर होगी।

तरबूज को अपनी डाइट में करें शामिल ...

१-तरबूज में फैट और कोलेस्ट्रॉल न के बराबर होता है। इसका सेवन करने से व्यक्ति को पोषण मिलने के साथ उसका मोटापा भी कम होने में सहायता मिलती है।

२-डेली मेल में प्रकाशित एक खबर की मानें तो तरबूज वजन नियंत्रित करने में काफी असरदार होता है। जिसकी वजह से रक्त वाहिकाओं के भीतर चर्बी जमा नहीं होती। शोधकर्ताओं का कहना है कि तरबूज के पोषक तत्वों का राज उसके रस में पाए जाने वाले सिट्रूल इन में छिपा होता है।

३-शरीर को डिटॉक्स करके वजन कम करने के लिए तरबूज का रस पी सकते हैं। इसमें मौजूद पानी पेशाब बन कर शरीर की गंदगी को बाहर निकालने में मदद करता है।

४-तरबूज में मौजूद विटामिन ए, सी, बी-६ और मिनरल व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाते हैं।

५-तरबूज में शुगर की मात्रा कम होती है। १०० ग्राम तरबूज में ६.२ ग्राम शुगर होता है। कम शुगर का सेवन मोटापा कम करने का एक बेहतर उपाय है।

विशेषज्ञों की मानें तो तरबूज का सेवन रात को नहीं करना चाहिए। दिन के मुकाबले रात को व्यक्ति का डाइजेस्टिव सिस्टम काफी धीमी गति से काम करता है। तरबूज में मौजूद एसिड कि वजह से उसे रात को पचाने में परेशानी हो सकती है। तरबूज खाने का सबसे सही समय दोपहर १२ से १ बजे के बीच होता है। रात को तरबूज खाने से अगले दिन व्यक्ति का पेट भी खराब हो सकता है।

सेहत के लिए लाभदायक मखाना

मखाना केवल सेक्स से संबंधित समस्याओं में राहत नहीं देता, बल्कि इसे खाने से तनाव भी कम होता है. नींद अच्छी आती है. रात में जब सोएं, तो पहले गर्म दूध के साथ ६-७ मखाना खाएं, नींद गहरी आएगी . मखाना शुक्राणुओं की क्वालिटी (Sperm quality) को भी बेहतर बनाकर, उसकी संख्या को बढ़ाता है.मखानों का नियमित सेवन करने से शरीर की कमजोरी दूर होती है और शरीर सेहतमंद रहता है.मखाने में कैलोरी बहुत कम होती है और फाइबर काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है. इसका सेवन किडनी और दिल की सेहत के लिए फायदेमंद है. इससे आपकी शारीरिक कमजोरी दूर होती है और शरीर में तुरंत एनर्जी आती है.

मखाना कैल्शियम से भरपूर होता है इसलिए हड्डियों के लिए बहुत फायदेमंद होता है. मखाना में मौजूद तत्व हमारी बॉडी को कई तरह के हेल्थ बेनिफिट्स देते हैं. इसकी १०० ग्राम मात्रा में ३५० कैलोरी होती है. इसके अलावा इसमें ९.७ प्रतिशत प्रोटीन, ७६ प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट, १२.८प्रतिशत नमी, ०.१ प्रतिशत हेल्दी फैट, ०.५ प्रतिशत सोडियम, ०.९ प्रतिशत फॉस्फोरस एंव १.४ मिलीग्राम आयरन, कैल्शियम, अम्ल और विटामिन-वी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं.

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम १६ अलौकिक गुणों से सम्पन्न हैं। वे चरित्रवान हैं। वे मानवीय मूल्यों के पारावार हैं। वे पतितपावन हैं। इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के इन सभी विलक्षण गुणों की पुष्टि हमारे सभी महाकवियों ने की है। आदिकवि वाल्मीकि जो ब्रह्माजी के दसवें पुत्र प्रचेता के पुत्र हैं वे सम्पूर्ण विश्व में पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय समन्वय के यथार्थ आदर्श हैं।

श्रीराम भारत की आत्मा तथा भारतीय अस्मिता के जीवंत प्रमाण हैं...

श्रीराम का शरीर जितना ही मोहक और भव्य है उतना ही उनका शील उदात्त गुणों से विभूषित है। उनकी कांति मनमोहक है। उनके कंधे सिंह के जैसे बलिष्ठ एवं ताकतवर हैं। वे धीर, वीर और गंभीर हैं। वे महान बल शाली योद्धा हैं। उनकी आंखें कजरारी और बड़ी-बड़ी हैं। उनकी चाल हाथी के जैसी मतवाली है।उनकी भुजाएं उनके घुटनों तक हैं। वे एक पत्नीव्रतधारी हैं। वे सत्य, न्याय और धर्म के रक्षक हैं। वे नवधा भक्ति के जन्मदाता हैं। वे सगुण-निर्गुण समन्वय के साकार स्वरुप हैं। वे धर्मपरायण, न्यायप्रिय, लोक रक्षक, आज्ञाकारी, दृढ़ निश्चयी, जनमत का सम्मान करनेवाले और कठोरव्रती हैं। वे भारतीय वन संस्कृति के पालक हैं। श्रीराम सगुण-निर्गुण साकार हैं। वे धर्मपरायण, न्याय परायण, लोक रक्षक, आज्ञाकारी, दृढ़ निश्चयी, कठोरव्रती श्रीराम हैं।

त्रेता युग से ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारत की आत्मा तथा भारतीय अस्मिता के जीवंत प्रमाण हैं। श्रीरामचन्द्र भारतवर्ष के एकमात्र तपस्वी राजा हैं। वे करुणा के सागर हैं। वे श्याम सुंदर छविवाले हैं। श्रीराम का शरीर जितना ही मोहक और भव्य है उतना ही उनका शील उदात्त गुणों से विभूषित है। उनकी कांति मनमोहक है। उनके कंधे सिंह के जैसे बलिष्ठ एवं ताकतवर हैं। वे धीर,वीर और गंभीर हैं। वे महान बलशाली योद्धा हैं। उनकी आंखें कजरारी और बड़ी-बड़ी हैं। उनकी चाल हाथी के जैसी मतवाली है। उनकी भुजाएं उनके घुटनों तक हैं। वे एक पत्नीव्रतधारी हैं।वे सत्य, न्याय और धर्म के रक्षक हैं। वे नवधा भक्ति के जन्मदाता हैं। वे सगुण-निर्गुण समन्वय के साकार स्वरुप हैं। वे धर्मपरायण, न्यायप्रिय, लोक रक्षक, आज्ञाकारी, दृढ़ निश्चयी, जनमत का सम्मान करनेवाले और कठोरव्रती हैं। वे भारतीय वन संस्कृति के पालक हैं। श्रीराम सगुण-निर्गुण साकार हैं। वे धर्मपरायण, न्याय परायण, लोक रक्षक,

आज्ञाकारी, दृढ़ निश्चयी, कठोरव्रती श्रीराम हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम १६ अलौकिक गुणों से सम्पन्न हैं। वे चरित्रवान हैं। वे मानवीय मूल्यों के पारावार हैं। वे पतितपावन हैं। इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के इन सभी विलक्षण गुणों की पुष्टि हमारे सभी महाकवियों ने की है। आदिकवि वाल्मीकि जो ब्रह्माजी के दसवें पुत्र प्रचेता के पुत्र हैं वे सम्पूर्ण विश्व में पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय समन्वय के यथार्थ आदर्श हैं। गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारतवर्ष के भावपुरुष हैं। कालिदास ने अपनी अमर रचना रघुवंश के १०वें सर्ग से लेकर १५वें सर्ग तक में श्रीराम को तेजस्वी और पराक्रमी राजा बताया है। धर्मपरायण और न्यायप्रिय बताया है। उन्हें लोकरक्षक, आज्ञापालक, दृढ़निश्चयी और कठोरव्रती बताया है। महाकवि भवभूति तथा जैन महाकवि स्वयंभू आदि ने भी स्पष्ट रुप से अपनी-अपनी अमर रचनाओं में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मानवीय गुणों की कुल १६ विलक्षण प्रतिभाओं का उल्लेख किया है। वे लिखते हैं-

तुम ही जग हौं,जग तुमही में।
तुमहि विरचि मरजाद दुनी में।।

स्वयंभू ने अपने जैन रामायण में श्रीराम को एक साधारण मानव के रुप में चित्रित करते हुए उन्हें भारतीय संस्कृति की अस्मिता का प्रतीक बताया है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध लिखते हैं-

रघुनंदन हैं धीर दुरंधर,
धर्मप्राण भव-हित रत हैं।

केशवदास ने अपनी रचना रामचंद्रिका में श्रीराम को सत्यस्वरुप,गुणातीत और मायातीत बताया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं-हो गया निर्गुण-सगुण साकार है,ले लिया अखिलेश ने अवतार है।

ठीक इसी प्रकार की बात गुप्तजी स्वयं राम से कहलवाते हैं-संदेश नहीं स्वर्ग का लाया,भूतल को स्वर्ग बनाने आया। इसीप्रकार हिन्दी के अमर कवि जयशंकर प्रसाद कहते हैं-रोम-रोम रम रहे कैसे तुम राम हो।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी अपनी अमर रचना राम की शक्ति पूजा में श्रीराम को अपराजेय योद्धा बतलाते हैं। सूफी संत कवि कबीरदास कहते हैं-

कबीर वन-वन में फिरा,कारनि अपने राम।
राम सरीखे जन मिले,तिन सारे सब काम।।

स्वर्गीय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के राम स्वयं कहते हैं-

संदेश नहीं मैं स्वर्ग का लाया,
भूतल को स्वर्ग बनाने आया।

गुप्तजी के राम ब्रह्म अवतारी होते हुए भी आधुनिक युग के अनुरुप आदर्श पुरुष हैं।

२०वीं सदी के सम्पूर्ण विश्व के सबसे बड़े महाकवि जयशंकर प्रसाद जी लिखते हैं-

जीवन जगत् के,विकास विश्व वेद के हो,
परम प्रकाश हो,स्वयं ही पूर्णकाम होष्ठ
रोम-रोम में रम रहे कैसे तुम राम हो।

सच तो यह है कि जिस प्रकार महाभारत में जो सम्मान शांतिदूत श्रीकृष्ण ने गीता के उपदेश के माध्यम से अर्जुन को दिया था वहीं संदेश श्रीराम ने शबरी को नवधा भक्ति प्रदानकर दिया है।सापेक्ष रुप में, श्रीराम का मर्यादित चरित्र भारत की आत्मा तथा भारतीय अस्मिता का जीवंत प्रमाण है।

-अशोक पाण्डेय

चैत्र नवरात्रि वसंत ऋतु में आती है और इसे वसंत नवरात्रि भी कहा जाता है। यह नवरात्रि विशेष रूप से उत्तर भारत में बहुत धूमधाम से मनाई जाती है। इस दौरान भक्त उपवास रखते हैं और देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा करते हैं।

चैत्र नवरात्रि २०२५ की तिथि और शुभ मुहूर्तः

प्रारंभ तिथिः ३० मार्च २०२५ (रविवार)
अवसान तिथिः ७ अप्रैल २०२५ (सोमवार)
कलश स्थापना का शुभ मुहूर्तः
प्रातः ६:२३ से १०:२२ तक
अभिजीत मुहूर्तः दोपहर १२:१०
राम नवमी तिथिः ७ अप्रैल २०२५

मेष राशि

अप्रैल महीना मेष राशि वालों के लिए मिलाजुला साबित हो सकता है। आपको नई जिम्मेदारियां मिल सकती है। भागदौड़ ज्यादा रहने वाली हैं, लेकिन इसका आपको फायदा भी मिलेगा। धन लाभ के अवसरों मे वृद्धि होगी। नौकरी में नया कुछ हासिल करने में कामयाब होंगे। निवेश से आपको सतर्क रहने की जरूरत है। शनि के मीन राशि में गोचर करने के कारण मेष राशि पर साढ़ेसाती शुरू हो चुकी है। ऐसे में आपको कुछ मामलों में सावधान रहना होगा।

वृषभ राशि-

अप्रैल माह में वृषभ राशि वालों के लिए अच्छे परिणाम मिलने की प्रबल संभावना है। निवेश से आपको अच्छा रिर्टन हासिल होगा। कमाई के कई स्त्रोत बन सकते हैं जिसमें आपको अचानक धन लाभ भी शामिल है। परिवार और प्रेम संबंधों में मिठास इस पूरे महीने रहने वाला होगा। नौकरी में प्रमोशन और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग हैं।

मिथुन राशि-

मिथुन राशि वालों के लिए अप्रैल का महीना कार्यो में सफलता प्राप्त रहने वाला साबित होगा। अवसरों में वृद्दि होगी। लंबी यात्राओं का योग बन रहा है। व्यापार में फायदा और योजनाएं इस महीने कामयाब हो सकती है। प्रेम जीवन में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

कर्क राशि-

यह महीना कर्क राशि वालों के लिए मिलाजुला रहने वाला होगा। कुछ कामों में जल्दी सफलता मिलेगी वहीं कुछ में बाधाओं का सामना भी करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में इजाफा हो सकता है ऐसे में आपको ज्यादा सावधान रहना होगा। इस पूरे माह आपको अपने पर संयम भी रखना होगा नहीं तो वाद-विवाद की स्थितियां पैदा हो सकती हैं।

सिंह राशि-

साल का यह चौथा महीना सिंह राशि वालों के लिए बहुत ही शुभ साबित होगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यो में आपकी सराहना होगी। आपको अपनी नियमित आमदनी के मुकाबले बहुत बड़ा लाभ भी मिल सकता है। शत्रुओं पर आपकी जीत होगी। नौकरी में प्रमोशन और वेतन वृद्धि के योग भी इस माह बन रहे हैं।

कन्या

कन्या राशि वालों को इस माह कुछ चुनौतियों का सामना करना

पड़ सकता है, लेकिन इससे आपके साहत और पराक्रम में वृद्धि होगी। लाभ मिलने की अच्छी संभावना भी है। पूरे माह आपको भागदौड़ भी करनी पड़ सकती है। माह के अंत में आपको कुछ सुनहरे अवसर भी मिल सकते हैं। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिल सकता है।

तुला राशि-

आर्थिक मोर्चे के लिए लिहाज से तुला राशि वालों के लिए अप्रैल का महीना किसी वरदान से कम नहीं है। नए-नए अवसरों की प्राप्ति हो सकती है। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि देखने को मिलेगी। कार्यक्षेत्र में कोई बड़ी उपलब्धियां भी हासिल हो सकती है। लेकिन इस माह बाकी की तुलना में आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि होगी। आपका आत्मविश्वास बढ़ा हुआ रहेगा और मन में सकारात्मक विचार आएंगे।

वृश्चिक राशि-

वृश्चिक राशि वालों के लिए यह महीना बहुत ही शुभ साबित होगा। लाभ के अवसरों में वृद्धि होगी। कामकाज में बदलाव का संकेत है। महीने के कुछ दिन आपको एक के बाद एक अच्छी खबरें सुनने को मिल सकती है। जीवन में नया कुछ करने का अवसर इस माह आपको मिल सकता है।

धनु राशि-

धनु राशि वालों के लिए अप्रैल का महीना मिलाजुला साबित होगा। भागदौड़ से यह महीना भरा रह सकता है। आमदनी कम खर्चों अधिक हो सकते हैं। नौकरी में कुछ नया करने से आपके वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न हो सकते हैं। परिवारिक जीवन में सुखद परिणाम देखने को मिल सकता है। धन लाभ और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है।

मकर राशि-

मकर राशि वालों के लिए अब राहत भरा दिन शुरू होने वाला है। दरअसल शनि के मीन राशि में गोचर करने से मकर राशि वालों पर चल रही शनि की साढ़ेसाती अब खत्म हो गई है। ऐसे में मकर राशि वालों को कार्यो में सफलता मिलनी आरंभ होने लगेगी। धन लाभ के अवसरों में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से संबंधित कोई बड़ा लाभ इस महीने आपको मिल सकता है। नौकरी में वेतन वृद्धि और व्यापार में अच्छा मुनाफा मिलने के योग हैं।

कुंभ राशि-

कुंभ राशि वालों के लिए अप्रैल का महीना बहुत ही अच्छा साबित होगा। ग्रहों की शुभ द्दष्टि इस माह कुंभ राशि के जातकों पर पड़ने से माह के पूरे दिनों में अच्छा फायदा मिल सकता है। नौकरीपेशा जातकों को लाभ के सुनहरे अवसरों में वृद्धि होगी। कोई बड़ा काम पूरा हो सकता है जो आपके भाग्य में परिवर्तन साबित होगा। घर-परिवार में कोई बड़ा आयोजन हो सकता है।

मीन राशि-

मीन राशि वालों के लिए अप्रैल का महीना शुभ और सफलता दिलाने वाला साबित होगा। लाभ के अवसरों में वृद्धि होगी। भाग्य का अच्छा साथ मिलने से जो काम पिछले महीना नहीं हुए थे वह अब पूरा होगा। धन के निवेश से आपको अच्छा खासा लाभ मिलने के योग है।

श्री कृष्ण के जन्म स्थान मथुरा का दर्शन...

मथुरा भगवान श्री कृष्ण का निवासस्थान है और हिन्दू समाज में इसका बड़ा धार्मिक महत्त्व है। यहाँ का इतिहास अत्यंत पुराना है। यहाँ तक कि महाग्रंथ रामायण में भी मथुरा का उल्लेख है। यह प्रमाणित है कि मथुरा कुषाण शासक कनिष्क (वर्ष १३० ईस्वी) की अनेक राजधानियों में एक था।'

आगरा से करीब एक घंटे की सड़क यात्रा करने के बाद यमुना के किनारे भगवान श्री कृष्ण का जन्म स्थल मथुरा स्थित है। इस पूरे क्षेत्र में भव्य मंदिर निर्मित हैं जो श्री कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। मथुरा और वृंदावन के जुड़वा शहर, जहां श्री कृष्ण का जन्म और लालन पालन हुआ, आज भी उनकी लीला और उनकी जादुई बांसुरी की ध्वनि से गुंजित रहते हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिर हैः गोविन्द देव मंदिर, रंगजी मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर, बांकेबिहारी मंदिर और इस्कॉन मंदिर यहाँ

मथुरा-वृंदावन आध्यात्मिक स्थल होने के साथ-साथ देशी विदेशी पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। यहाँ के प्राचीन मंदिर, उनसे जुड़ी गौरव गाथाएँ और यहाँ की संस्कृति देश की अमूल्य धरोहर हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिर हैंः गोविन्द देव मंदिर, रंगजी मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर, बांकेबिहारी मंदिर और इस्कॉन मंदिर। मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े प्रमुख स्थान हैं गोकुल, बरसाना और गोवर्धन। गोकुल में श्रीकृष्ण का पालन उनके मामा कंस की नजर से दूर चोरी छिपे किया गया था। श्रीकृष्ण की सहचरी राधा बरसाना में रहती थीं, जहां आज भी होली के अवसर पर लठ्ठमार होली धूम धाम से खेली जाती है। गोवर्धन में श्रीकृष्ण ने स्थानीय निवासियों को वर्षा के देवता इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी ऊँगली पर उठा लिया था। मथुरा भगवान श्रीकृष्ण का निवास स्थान है और यहाँ का इतिहास अत्यंत पुराना है।

के प्रमुख मंदिरों में से हैं।

श्री कृष्ण के जीवन से जुड़े अन्य स्थान हैं गोकुल, बरसाना और गोवर्धन। गोकुल में श्री कृष्ण का पालन उनके मामा कंस की नजर से दूर चोरी छिपे किया गया था। श्री कृष्ण की सहचरी राधा बरसाना में रहती थीं, जहां आज भी होली के अवसर पर लट्ठमार होली धूम धाम से खेली जाती है। गोवर्धन में श्री कृष्ण ने स्थानीय निवासियों को वर्षा के देवता इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी ऊँगली पर उठा लिया था। आगरा से ५६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित मथुरा और उससे थोड़ी ही दूर स्थित वृंदावन, पौराणिक ब्रज भूमि के जुड़वां शहर हैं।

बृज भूमि के आस-पास स्थित सभी स्थल एवं चिन्ह आपको धार्मिक यात्रा का आनंद देने में सक्षम है।

इन जुड़वां शहरों से जुड़ी हैं भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएं, सांस्कृतिक परंपराएं। यहां की रोज़मर्रा की जिन्दगी में भी ईश्वरीय उपस्थिति का एहसास होता है। मंत्रमुग्ध कर देने वाल ` मंदिरों, बाग-बगीचों, गीत -संगीत, नृत्य और कला के

बीच सामने आते भगवान कृष्ण से जुड़े रूपक पर्यटकों को भक्ति भाव से सराबोर करते हैं। चरकुला नृत्य, रासलीला और लोक गीत-संगीत प्रेम और समर्पण का अद्भुत ताना-बाना बुनता है। मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित रखा ऐतिहासिक खजाना प्राचीन आलीशान दौर को देखने का मौका देता है। मथुरा गायों की भूमि है अतः यहां दूध से बनी मिठाइयां ल ोकप्रिय हैं। मथुरा के पेड़े सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हैं। मथुरा की पूड़ी-कचोड़ी भी कम लोकप्रिय नहीं। इसके अलावा अन्य नमकीन व्यंजनों के लिए भी यह प्रसिद्ध है। हस्तशिल्प के सामान खासकर भगवान कृष्ण से जुड़े आभूषण भी यहां अधिसंख्य दुकानों में मिलते हैं।

मथुरा-वृंदावन की होली विश्व भर में प्रसिद्ध

है। इसके अलावा भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव जन्माष्टमी भी बहुत धूम-धाम और हर्ष-उल्लास के साथ पूरे ब्रज में मनाया जाता है।

कैसे पहुंचें

हवाई मार्ग से

खेरिया, आगरा-६२ किमी की दूरी पर स्थित नज़दीकी हवाई अड्डा है।

रेल मार्ग से

मथुरा उत्तर प्रदेश और देश के प्रमुख शहरों मसलन दिल्ली, आगरा, मुंबई, जयपुर, ग्वालियर, हैदराबाद, चेन्नै, लखनऊ से जुड़ा हुआ है।

प्रमुख रेलवे स्टेशनः मथुरा जंक्शन (उत्तर-मध्य रेलवे) और मथुरा कैंट (उत्तर-पूर्व रेलवे)

सड़क मार्ग से मथुरा नेशनल हाईवे के जरिये सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। प्रमुख शहरों से सड़क यात्रा के लिए दूरी इस प्रकार है- गोकुल- १० किमी, महावन- १४ किमी, वृंदावन- १५ किमी, बलदेव- २० किमी, गोवर्धन-२६ किमी, भरतपुर-३९ किमी, डीग-४० किमी, बरसाना-४७ किमी, नंदगाँव- ५३ किमी, आगरा-५६ किमी एवं दिल्ली-१४५ किमी। ■

हाईएस्ट टैक्स भरने वाले सेलिब्रिटी बने अमिताभ!

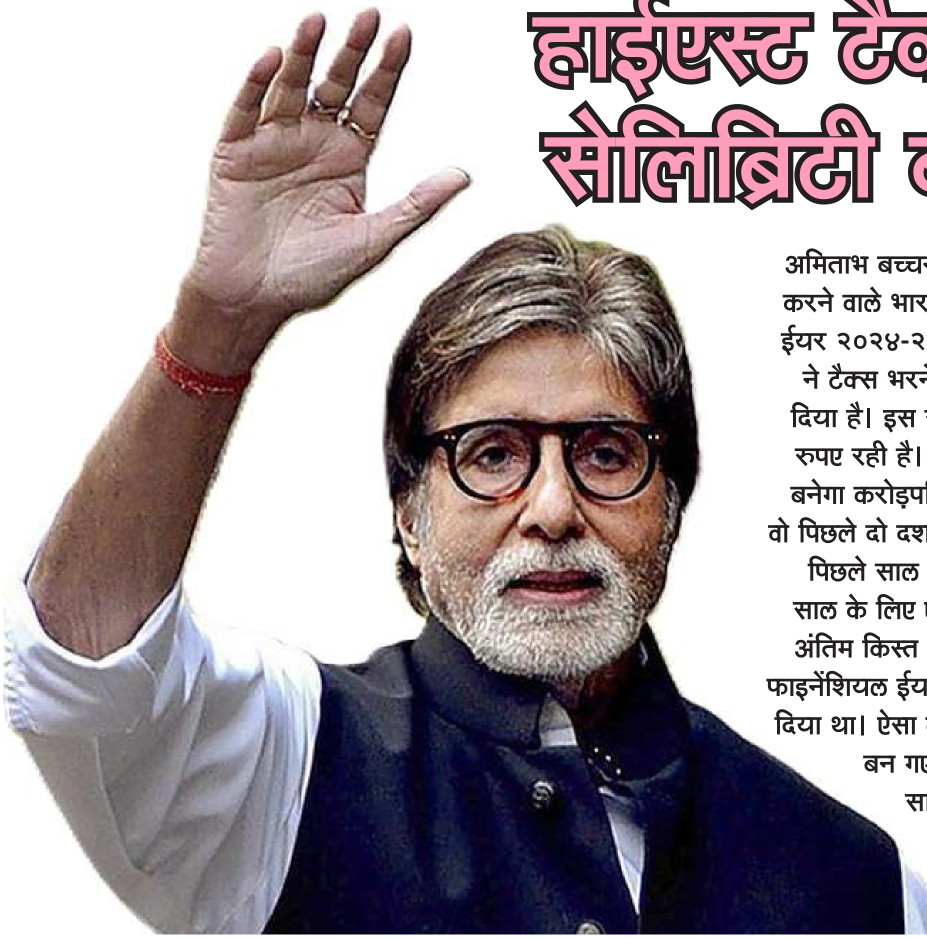

अमिताभ बच्चन साल २०२४-२५ में सबसे ज्यादा टैक्स भुगतान करने वाले भारतीय सेलिब्रिटी बन गए हैं। एक्टर ने फाइनेंशियल ईयर २०२४-२५ में १२० करोड़ रुपए का टैक्स भरा है। बिग बी ने टैक्स भरने के मामले में एक्टर शाहरुख खान को पीछे छोड़ दिया है। इस साल अमिताभ बच्चन की कुल कमाई ३५० करोड़ रुपए रही है। उन्होंने ये कमाई ब्रांड एंडोर्समेंट, फिल्में और कौन बनेगा करोड़पति शो के होस्ट के रुपए में कमाया है। इस शो के वो पिछले दो दशक से होस्ट हैं। पिंकविला की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल एक्टर ने ७१ करोड़ रुपए का टैक्स भरा था। इस साल के लिए एक्टर की तरफ से १५ मार्च २०२५ को टैक्स की अंतिम किस्त ५२.५ करोड़ रुपए भरी गई है। बता दें कि पिछले फाइनेंशियल ईयर में शाहरुख खान ने ९२ करोड़ रुपये का टैक्स दिया था। ऐसा करके वो सबसे बड़े भारतीय टैक्सपेयर सेलिब्रिटी बन गए थे। वहीं, सलमान खान ने ७५ करोड़ रुपए और साउथ एक्टर थलपति विजय ने ८० करोड़ रुपए का टैक्स भुगतान किया था।

इंटिमेट सीन के वक्त घबराए बॉबी देओल !

प्रकाश झा के निर्देशन में बनी वेब सीरीज आश्रम को दर्शकों का जबरदस्त प्यार मिला। यह सीरीज बॉबी देओल के करियर के लिए एक बड़ा टर्निंग पॉइंट साबित हुई। बॉबी देओल एमएक्स प्लेयर पर स्ट्रीम हुई वेब सीरीज 'आश्रम सीजन ३ पार्ट २' में बाबा निराला के किरदार से लोगों का दिल जीत रहे हैं। इसी के साथ एक्ट्रेस अदिति पोहनकर भी अपनी बेहतरीन एक्टिंग के लिए जानी जाती हैं। इसी बीच बॉबी देओल के साथ उन्होंने आश्रम में कई इंटिमेट सीन्स दिए थे। ऐसे में अब उन्होंने बॉबी संग इंटिमेट सीन करने को लेकर अपना एक्सपीरियंस शेयर किया है। अदिति पोहनकर, जो वेब सीरीज में 'पम्मी' का किरदार निभा चुकी हैं, उन्होंने बताया कि इंटिमेट सीन शूट करने से पहले बॉबी देओल काफी नर्वस थे। अदिति ने आगे बताया कि उन्होंने (बॉबी देओल) मुझसे कहा- तू इतनी रिलैक्स्ड कैसे है पम्मी? वो मुझे पम्मी बोलते हैं। फिर बोले- तू बहुत चिल्ड आउट है। एक्ट्रेस ने बताया कि वह चाहती थीं कि सीन नैचुरल लगे और बॉबी देओल सहज महसूस करें।

मारुति की कारें अप्रैल से महंगी

रॉ मटेरियल के दाम बढ़ने के बाद फैसला

ऑटोमोबाइल कंपनियां हर साल जनवरी और अप्रैल में अपनी गाड़ियों की कीमतें बढ़ाती हैं। मारुति सुजुकी की ७ कारें ८ अप्रैल से ६२ हजार रुपए तक महंगी हो जाएंगी। कंपनी ने एक्सचेंज फाइलिंग में बताया कि, रॉ मटेरियल और ऑपरेशनल कॉस्ट के बढ़ने की वजह से यह फैसला किया है। मारुति सुजुकी ने २०२५ में अब तक तीसरी बार अपने वाहनों के दाम बढ़ाए हैं। पहली बढ़ोतरी जनवरी २०२५ में हुई थी, जिसमें कंपनी ने ४% तक की बढ़ोतरी की घोषणा की थी। दूसरी बार फरवरी २०२५ में दाम बढ़ाए गए, जिसमें मॉडल के आधार पर १% से ४% तक की बढ़ोतरी हुई। सबसे ज्यादा बढ़ोतरी सेलेरियो मॉडल में ₹३२,५०० तक की गई थी।

अन्य ऑटोमोबाइल कंपनियों, हुंडई मोटर इंडिया, महिंद्रा एंड महिंद्रा, मर्सिडीज बेंज,रेनो इंडिया, किआ मोटर्स, होंडा BMW मोटर्स और ऑडी जैसी कंपनियां भी अप्रैल-२०२५ से अपनी गाड़ियों की कीमतों में बढ़ोतरी का ऐलान कर चुकी हैं। कीमतें बढ़ाने के पीछे सभी ऑटोमोबाइल कंपनियों ने लगभग एक जैसा ही कारण दिया है। इनपुट कॉस्ट और लॉजिस्टिक्स में बढ़ोतरी के चलते ओवर ऑल मैन्युफैक्चरिंग कॉस्ट बढ़ रही है। इस कारण कंपनियां कीमतें बढ़ा रही हैं। कंपनियों के इस फैसले का सीधा असर ग्राहकों की जेब पर पड़ेगा, खासकर उन ग्राहकों पर जो नई कार खरीदने का विचार कर रहे हैं।

मारुति सुजुकी ने मार्च में १,९२,९८४ गाड़ियां बेची हैं, जबकि एक साल पहले इसी महीने में कुल १,८७,१९६ गाड़ियां बेची थीं। सालाना आधार पर मारुति की कुल बिक्री में ३% का इजाफा हुआ है। कंपनी के अनुसार, पिछले महीने देश में उसने १,५०,७४३ पैसेंजर व्हीकल (PV) बेचे, जबकि मार्च २०२४ में कंपनी की PV की डोमेस्टिक सेल्स १,५२,७१८ यूनिट थी।

ऑल्टो और एस-प्रेसो जैसी छोटी कारों की बिक्री पिछले महीने घटकर ११,६५५ यूनिट रह गई, जो मार्च-२०२४ में ११,८२९ यूनिट था। वहीं, बलेनो, डिजायर, इग्निस और स्विफ्ट जैसी 'कॉम्पैक्ट' कारों की बिक्री भी मार्च में घटकर ६६,९०६ यूनिट रह गई, जो एक साल पहले इसी महीने में ६९,८४४ यूनिट थी। ग्रैंड विटारा, ब्रेजा, अर्टिगा और XL6 जैसी यूटिलिटी गाड़ियों की बिक्री पिछले महीने बढ़कर ६१,०९७ यूनिट हो गई, जो पिछले साल मार्च में ५८,४३६ थी। वैन ईको की बिक्री पिछले महीने १०,४०९ यूनिट रही, जबकि पिछले साल मार्च में यह १२,०१९ यूनिट थी। वहीं, लाइट कॉमर्शियल व्हीकल सुपर कैरी की बिक्री घटकर २,३९१ यूनिट रह गई, जो पिछले साल मार्च में ३,६१२ यूनिट थी। कंपनी ने मार्च में ३२,९६८ गाड़ियों का निर्यात किया, जबकि पिछले साल इसी महीने में २५,८९२ यूनिट एक्सपोर्ट की थी।

मारुति सुजुकी ने अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार ई-विटारा को जनवरी में भारत ग्लोबल मोबिलिटी एक्सपो-२०२५ में रिवील किया था, कंपनी इसे इसी साल लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। कंपनी ने बताया कि पिछले वित्त वर्ष (२०२४-२५) में उसने कुल २२,३४,२६६ गाड़ियां बेचीं, जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष में उसकी बिक्री २१,३५,३२३ यूनिट थी। कंपनी ने कहा कि उसने लगातार दूसरे साल २० ल ाख से ज्यादा गाड़ियां बेची हैं।

पिछले वित्त वर्ष में कंपनी ने भारत में कुल १७,६०,७६७ यूनिट पैसेंजर व्हीकल बेचे, जबकि FY२०२३-२४ में १७,५९,८८१ यूनिट बेची थी। कंपनी ने कहा कि पिछले वित्त वर्ष (२०२४-२५) में उसने ३,३२,५८५ गाड़ियां एक्सपोर्ट की थीं। वहीं, FY२०२३-२४ में कंपनी ने २,८३,०६७ गाड़ियां निर्यात की थीं। मारुति का शेयर आज २०९.९० (१.८३%) बढ़कर ११,६९१ रुपए पर बंद हुआ। इस साल शेयर ४.३१% चढ़ा है। वहीं, ६ महीने में इसमें ७.५६% की गिरावट आई है। मारुति सुजुकी को वित्त वर्ष २०२४-२५ की तीसरी तिमाही में ३,७२७ करोड़ रुपए का शुद्ध मुनाफा (कॉन्सोलिडेटेड नेट प्रॉफिट) हुआ था। सालाना आधार पर यह १६% बढ़ा था।

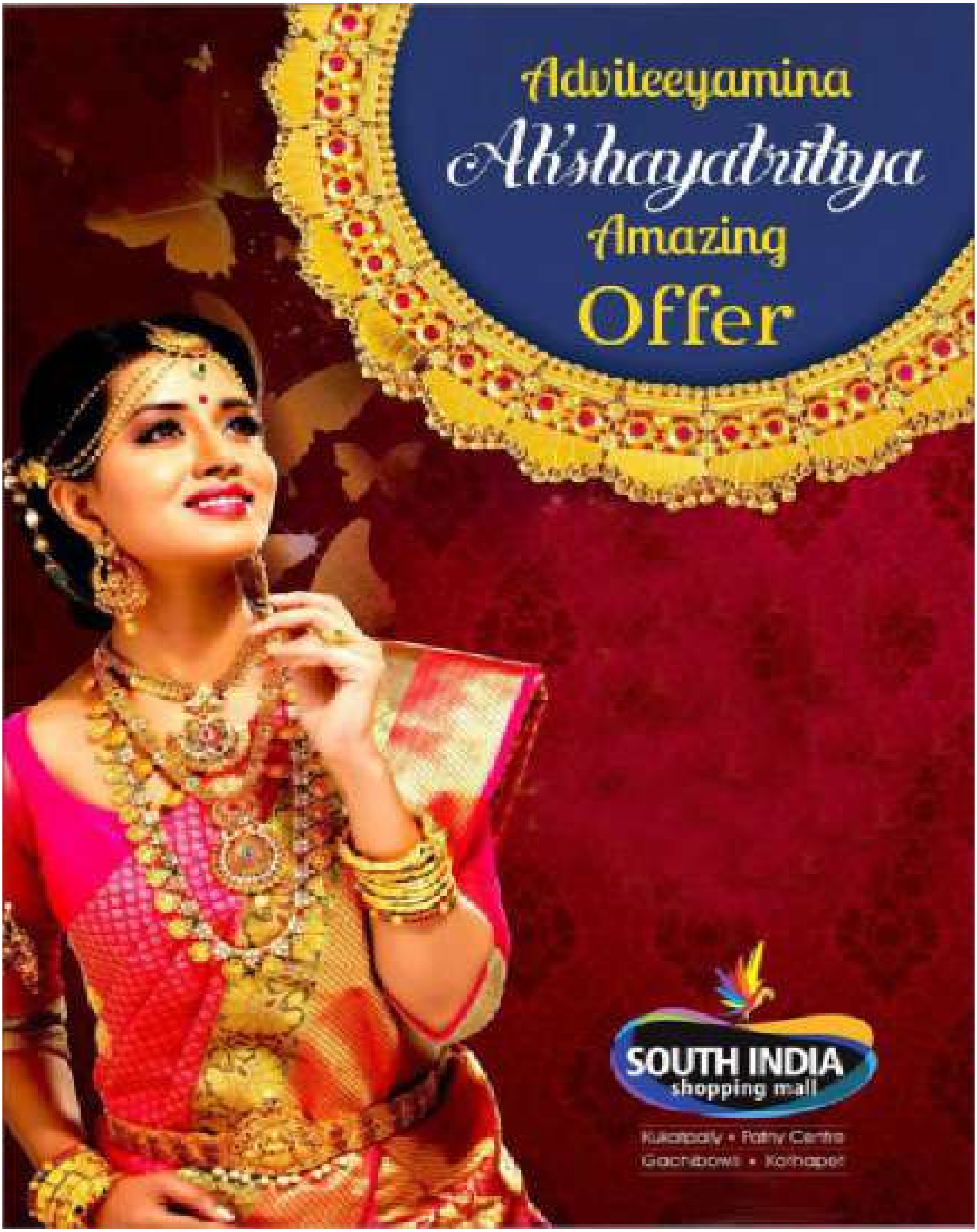
Adviteeyamina
Akshayatritya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

डॉ. अच्युत सामंता ने 'कीस' और 'कीट' के माध्यम से ओड़िशा को दी विश्वस्तरीय पहचान

प्रोफेसर सामंत ने अपने संबोधन में यह बताया कि पिछले लगभग ३० वर्षों से ओड़िशा को वे कीट-कीस-कीम्स के माध्यम से सतत विकास के प्रगति पथ पर ले जा रहे हैं। गौरतलब है कि कीट-कीस में ४०-४० हजार छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं जबकि वहां पर लगभग २५ हजार अधिकारी व कर्मचारीगण कार्यरत हैं। यही नहीं, कीट-कीस-कीम्स के माध्यम से प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से लगभग पांच लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है। प्रोफेसर सामंत ने बताया कि विकास एक सतत प्रक्रिया है और उनकी यह कोशिश रहेगी कि ओड़िशा के विकास की यह यात्रा वे स्वयं आगे बढ़ाएंगे। उनकी बातों का समर्थन ओड़िशा सरकार के मंचस्थ सभी मंत्रियों ने किया।

यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि १९९२-९३ ओड़िशा को प्रगतिपथ पर आगे बढ़ाने में सहायक हैं महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत और उनकी विश्वस्तरीय संस्थाएं-कीट-कीस और कीम्स। हाल ही में (१९मार्च,२५ को) प्रोफेसर सामंत के क्षेत्रीय ओड़िया कलिंग टेलीविजन के ११वें स्थापना दिवस पर स्थानीय मेफेयर कंवेंशन में एक कनक्लेव रखा गया था जिसका थीम थाः प्रगति पथ पर ओड़िशा। मंचासीन थे समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में ओड़िशा सरकार कै राजस्व तथा आपदाप्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी सम्मानित अतिथि के रुप में ओड़िशा सरकार के आबकारी, कानून, निर्माण (नियुक्ति, सिंचाई, तटबंध, जलनिकास और बिजली मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन, भाजपा ओड़िशा के प्रांतीय अध्यक्ष मनमोहन सामल, बीजेडी के पूर्व मंत्री तथा वर्तमान में बीजेडी विधायक अरुण साहू, कलिंग टेलीविजन के संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत, कलिंग टेल ीविजन के कार्यकारी हेड डॉ हिमाशु शेखर खटुआ तथा सम्पादक सौम्यरंजन पटनायक आदि। अपने स्वागत संबोधन में प्रोफेसर अच्युत सामंत ने मंचस्थ तथा सभागार में उपस्थित सभी विशिष्ट और आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए यह बताया कि उन्होंने १९९२-९३ में अपनी कुल जमा पूंजी पांच हजार रुपये से अपनी दो संस्थाएं कीट-कीस खोली। आज वे दोनों संस्थाएं दो डीम्ड विश्वविद्यालय (कीट डीम्ड विश्विद्यालय तथा कीस डीम्ड विश्वविद्यालय)। उन्होंने बताया कि ओड़िशा प्रदेश आदिवासी बाहुल्य प्रदेश है जहां की कुल आबादी का लगभग २४ प्रतिशत आदिवासी हैं और वे उन्हीं आदिवासी समुदाय के बच्चों को आवासीय सह शैक्षिक सुविधाएं फ्री उपलब्ध कराकर उन्हें केजी कक्षा से पीजी कक्षा तक पढ़ाते हैं।

उनकी संस्था कीस मानव निर्माण की विश्व की एकमात्र ऐसी संस्था है जहां पर चरित्रवान, जिम्मेवार तथा सच्चे देशभक्त नागरिक तैयार होते हैं जिसकी आवश्यकता आज ओड़िशा के साथ-साथ भारत को है।

कीट के पास आज समस्त और अत्याधुनिक खेल संसाधनों से संपन्न इनडोर और आऊटडोर स्टेडियम हैं। कीट-कीस के पास लगभग पांच हजार राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय खिलाडी हैं। कीट में खेलों के कई अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त खेल के मैदान तैयार कराये। कीट के पास दुती चांद जैसे अनेक ओलंपियन हैं। स्वयं प्रोफेसर अच्युत सामंत भारतीय बालीवाल परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

ओड़िशा सरकार का संकल्प है कि वर्तमान मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी की प्रदेश सरकार २०३६ तक ओड़िशा को एक विकसित प्रदेश बना देगी। प्रोफेसर सामंत ने अपने संबोधन में यह बताया कि पिछले लगभग ३० वर्षों से ओड़िशा को वे कीट-कीस-कीम्स के माध्यम से सतत विकास के प्रगति पथ पर ले जा रहे हैं। गौरतलब है कि कीट-कीस में ४०-४० हजार छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं जबकि वहां पर लगभग २५ हजार अधिकारी व कर्मचारीगण कार्यरत हैं। यही नहीं, कीट-कीस-कीम्स के माध्यम से प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से लगभग पांच लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है। प्रोफेसर सामंत ने बताया कि विकास एक सतत प्रक्रिया है और उनकी यह कोशिश रहेगी कि ओड़िशा के विकास की यह यात्रा वे स्वयं आगे बढ़ाएंगे। उनकी बातों का समर्थन ओड़िशा सरकार के मंचस्थ सभी मंत्रियों ने किया।

मुख्य अतिथि सुरेश पुजारी ने कहा कि आज ओड़िशा के आदिवासी समुदाय के बच्चों को प्रोफेसर अच्युत सामंत निःशुल्क और उत्कृष्ट शिक्षा प्रदानकर प्रदेश के आदिवासियों का कल्याण कर रहे हैं। प्रोफेसर सामंत के चहुमुखी योगदानों जैसेः शिक्षा, स्वास्थ, खेल आदि के प्रति आभार ओड़िशा सरकार आभारी है। वहीं मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने बताया कि प्रोफेसर अच्युत सामंत का कलिंग टेलीविजन क्षेत्रीय चैनल प्रदेश का एकमात्र सकारात्मक चैनल है जो वर्तमान सरकार की अपलब्धियों की जानकारी देता है।

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल का कहना था कि जिस प्रकार का जनहितकारी कार्य प्रोफेसर अच्युत सामंत पिछले लगभग ३० सालों से करते आ रहे हैं उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ओड़िशा प्रगति के पथ पर सतत अग्रसर है। विधायक अरुण साहू के अनुसार वे और उनका बीजेडी दल वर्तमान सरकार को ओड़िशा को प्रगति के पथ पर सही रुप से आगे बढ़ाने में एक प्रतिपक्षी दल के रुप में कार्य करेगा। गौरतलब है कि कीट के पास आज समस्त और अत्याधुनिक खेल संसाधनों से संपन्न इनडोर और आऊटडोर स्टेडियम हैं। कीट-कीस के पास लगभग पांच हजार राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय खिलाडी हैं। कीट में खेलों के कई अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त खेल के मैदान तैयार कराये। कीट के पास दुती चांद जैसे अनेक ओलंपियन हैं। स्वयं प्रोफेसर अच्युत सामंत भारतीय बालीवाल परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

-अशोक पाण्डेय

Art of Giving

A philosophy of life
(Founder- Dr. Achyuta Samanta)

Dear KIIT & KISS Family,

Warm wishes to you all!

You all know about **Art of Giving**, which I started in 2013, and I am grateful for your continuous support. This year, to spread its message even further, we have started a 60-day **social media drive** from **17th March to 17th May**.

I humbly request you to join this initiative and encourage your family and friends to do the same. You can contribute by sharing a short video (**10-30 seconds**) on Art of Giving and its impact.

Please post it on **your social media pages** with the given hashtags:

#ArtOfGiving
#AchyutaSamanta

Your participation will make a difference. Let's spread the spirit of Art of Giving far and wide!

Address -
Koel Campus, Annex Building, KIIT,
Bhubaneswar, Odisha, India – 751024

/artofgiving.in.net
/artofgiving_net
info@artofgiving.in.net
artofgiving.in.net

अक्षय तृतीया ३० अप्रैल को

ओड़िशा प्रदेश की संस्कृति जगन्नाथ संस्कृति है जिसमें अक्षय तृतीया मनाने का प्रचलन ओड़िशा प्रदेश के घर-घर, गांव-गांव और शहर-शहर में अनादि काल से है। पुरी में अक्षय तृतीया के मनाये जाने की सुदीर्घ तथा अत्यंत गौरवशील परम्परा रही है। यह भगवान जगन्नाथ के प्रति ओड़िया लोक आस्था और विश्वास का प्रतीक है। प्रतिवर्ष अक्षय तृतीया के पवित्र दिवस पर पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ होता है। जगन्नाथ भगवान की विजय प्रतिमा मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा चंदन तालाब में अनुष्ठित होती है।

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया शंख क्षेत्र पुरी धाम में अक्षय तृतीया के रुप में अनुष्ठित होती है। २०२५ की अक्षय तृतीया ३० अप्रैल को है। ओड़िशा प्रदेश की संस्कृति जगन्नाथ संस्कृति है जिसमें अक्षय तृतीया मनाने का प्रचलन ओड़िशा प्रदेश के घर-घर, गांव-गांव और शहर-शहर में अनादि काल से है। पुरी में अक्षय तृतीया के मनाये जाने की सुदीर्घ तथा अत्यंत गौरवशील परम्परा रही है। यह भगवान जगन्नाथ के प्रति ओड़िया लोक आस्था और विश्वास का प्रतीक है। प्रतिवर्ष अक्षय तृतीया के पवित्र दिवस पर पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ होता है। जगन्नाथ भगवान की विजय प्रतिमा मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा चंदन तालाब में अनुष्ठित होती है।

अक्षय तृतीया के दिन से ही ओड़िशा के किसान अपने-अपने खेतों में जुताई-बोआई का कार्य आरंभ करते हैं। स्कन्द पुराण के वैष्णव खण्ड के वैशाख महात्म्य में यह स्पष्ट उल्लेख है कि जो वैष्णव भक्त अक्षय तृतीया के सूर्योदयकाल में प्रातः पवित्र स्नान कर भगवान विष्णु की विधिवत पूजा करता है। उनकी कथा सुनता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है। राममय भारतवर्ष में अक्षय तृतीया मनाने का महत्त्व अलग-अलग रुपों में है। जैसेःअक्षय तृतीया के दिन को युगादि तृतीया कहते हैं। अक्षय तृतीया के दिन से ही त्रैतायुग तथा सत्युग का शुभारंभ हुआ था। अक्षय तृतीया के दिन से ही भगवान बदरीनाथजी का कपाट उनके भक्तों के दर्शन के लिए खोल दिया जाता है। सबसे बड़ी बात यह कि श्रीकृष्ण ने स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर को अक्षय तृतीया महात्म्य की कथा सुनाई थी। ओड़िशा के प्रत्येक सनातनी वैष्व के इष्टदेव, गृहदेव, ग्राम्यदेव तथा राज्य देव भगवान जगन्नाथ ही हैं। इसीलिए तो ओड़िशा में अक्षय तृतीया का विशेष सामाजिक और धार्मिक महत्त्व है।

ऐसी बात कही जाती है कि अक्षय तृतीया के दिन ही द्वारकाधीश के बाल सखा सुदामा उनसे मिलने के लिए द्वारका गये थे। अक्षय तृतीया के दिन पुरी धाम में श्रीजगन्नाथ भगवान को चने की दाल का भोग निवेदित किया जाता है। ओडिशा के सनातनी लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की चिर शांति हेतु अक्षय तृतीया के दिन फल, फूल आदि का दान करते हैं। जो भक्त अक्षय तृतीया के दिन सायंकाल भगवान जगन्नाथ को शर्बत निवेदित करता है वह अपने सभी पापों से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

अक्षय तृतीया के दिन भगवान श्री जगन्नाथ कथा श्रवण एवं दान- पुण्य का अति विशिष्ट महत्त्व माना जाता है। कहते हैं कि अक्षय तृतीया के दिन जो भक्त भगवान जगन्नाथ की पूजा करता है, वह अपने पूरे कुल का उद्धारकर बैकुण्ठ लोक को प्राप्त करता है। प्रतिवर्ष शंख क्षेत्र पुरी धाम में मनाई जानेवाली अक्षय तृतीया का सीधा संबंध भगवान जगन्नाथ में समस्त ओड़िशावासियों के अटूट विश्वास तथा जगन्नाथ संस्कृति में पूर्ण आस्था से है।

-अशोक पाण्डेय

बच्चों को समय और संस्कार दें...

आज माता-पिता अपने बच्चों के सामने पूरा भौतिक संस्कार परोस रहे हैं, पूरी पश्चिमी संस्कृति परोसी जा रही है, सभी सुख-सुविधाएं उसके पास उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इसके साथ-साथ उसके सामने हौड़ का लक्ष्य रखा रहता है हमेशा, बड़े-बड़े पद रखे रहते हैं उसके सामने और खूब धन-दौलत जोड़ने के सपने होते हैं उसके सामने। लेकिन अफसोस की बात है कि माता-पिता के पास इतना भी समय नहीं है कि वे उनसे दो पल तो शगुन से बतिया सकें, घर-समाज-स्कूल और देश की चर्चा कर सकें, अपनेपन की, बचपन की मीठी-मीठी बातें कर सकें, उनको जीवन निर्माण में आने वाली महत्वपूर्ण चीजों के बारे में चर्चा कर सकें और यही कारण है कि ऐसा सब नहीं होने से आज बच्चे अपने बचपन में ही पचपन जैसी बातें करते देखे जाते हैं, जिद्दी-सनकी, चिड़चिड़े, गुस्से में दिखाई देते हैं क्योंकि उनके सामने सकारात्मक वातावरण नहीं है, संयुक्त परिवार नहीं है, नानी-दादी के गीत-किस्से नहीं है और गौरवशाली चरित्रों की जानकारी नहीं है।

बच्चों को देने की जो सबसे जरूरी बात है उसे समय कहते हैं, संस्कार कहते हैं और ये चीजें बच्चों के जीवन को सार्थक बनाती है, सच्चा और सरल बनाती हैं। इसलिए उनके साथ बच्चे बनें, समय दें, खेलें और खूब हंसे। बच्चों के व्यक्तित्व का सही विकास हो, इसके लिए उनके जीवन को लेकर एक सार्थक योजना जरूर बनाएं। इस योजना की पहली बात है कि बच्चे अकेले नहीं रहें क्योंकि अकेलापन उनको कुंठित कर देगा, उनके विकास के कदमों को बढ़ने से रोक देगा, उन्हें बहुत सारे विकारों से ग्रस्ति कर उनके जीवन के उद्देश्य को ही बदल देगा, जीवन को ही बदल देगा। इसलिए यदि माता-पिता दोनों ही व्यस्त हैं तो भी बच्चों के लिए जो समय तो देना ही पड़ेगा, बेशक इसके लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़े। एक और बात है कि यदि बच्चों के सामने हमेशा पोजिटिव एनवायरमेंट रखा जाए, उनके जीवन के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर कोई कार्य योजना बनाएं जिसमें शिक्षा, संस्कार, पिकनिक, कैरियर, खेल, मनोरंजन, सामान्य-ज्ञान, कॉमन सेंस, क्रिमटिविटी, टेक्नोलॉजी और संस्कृति-साहित्यिक गतिविधियों का समावेश जरूर करें। यदि बच्चों के जीवन में विविधता होगी, अलग-अलग चीजें होंगी, स्वस्थ वातावरण होगा, भयमुक्त और प्रेरक माहौल होगा तो फिर ऐसे बच्चे जरूर से अच्छे बनेंगे, सच्चे बनेंगे और मानव प्रेमी बनेंगे। आइए, जीवन की सबसे अनमोल धरोहर को बनाएं, बनाएं और सबसे बड़ा करें।

सुसंस्कारों का महत्त्व !

१. सुसंस्कारित मन जीव को भटकने नहीं देता!

'सुसंस्कारित मन जीव को कहीं भी भटकने नहीं देता । इसीलिए बच्चों का मन सुसंस्कारित करना, यह बडों का, हिंदु धर्माचरण करनेवालों का, समाज का कर्तव्य है । ईश्वरद्वारा प्राप्त यह समष्टि सेवा है; परंतु समाज के यह ध्यान में नहीं आता और वह भटके हुए युवकों की भांति दूरदर्शन तथा दूरदर्शन की धारावाहिकों में बह गया है ।

२. कुसंस्कार होने का महत्त्वपूर्ण कारण है, सर्वत्र फैला भोगवाद

'हमारे बचपन में हमें यह सब नहीं मिला । हमारा पूरा बचपन हमने बडों के नियंत्रण में रहकर मिटा दिया। अब मिल रहा है, तो लालची मनुष्य की भांति खाएंगे। मनानुसार ही करेंगे', ऐसे विचार लोगों के मन में प्रबलता से होते हैं। ऐसा कुसंस्कारित मन आगे की पिढीपर कौन से संस्कार कर पाएगा?

इसीलिए आगे की, अर्थात वर्तमान पीढ़ी पूर्णतः भटक गई है । ऐसे में प्रसारमाध्यम, सडकोंपर भी सहजता से दिखाई देनेवाले अयोग्य विज्ञापन, भ्रमणभाष, ई-मेल, फेसबूक ऐसे अनंत आधुनिक उपकरण सहजता से उपलब्ध होने से इसमें वृद्धि ही हुई है। इससे जो योग्य है, वह सिखने की अपेक्षा जो आवश्यक नहीं है, ऐसे मार्गपर नई पीढ़ी बहती जा रही है। प्रत्येक सुसंस्कार हमें ईश्वर की ओर ले जाता है; परंतु कुसंस्कार असुरों के राज्य में ही ले जाता है और अराजकता भी निर्माण करता है। यही आज हमें सर्वत्र दिखाई दे रहा है।

३. समाज को आज सुराज्य की आवश्यकता है!

समाज को आज चाहिए एक सुराज्य। इसमें होगा धर्माचरण। राष्ट्र, धर्म, ईश्वर का सम्मान करनेवाला आदरणीय समाज। वही इस युवा पिढी को सन्मार्ग दिखाएगा। इसीलिए सनातन संस्था और कुछ हिंदुत्ववादी संगठन सतत कार्यरत है। इसी के साथ चाहिए ईश्वर का अधिष्ठान। समर्थ रामदासजी ने कहा है, "सामर्थ्य है आंदोलन का। जो जो करेगा उसी का। परंतु वहां ईश्वर का। अधिष्ठान होना चाहिए। यही सात्त्विक कार्य सनातन संस्था के संस्थापक परात्परगुरु प.पू. डॉ. जयंत बाळाजी आठवले कर रहे हैं । इसमें अनेक संत और साधक हाथ बंटा रहे हैं ।

४. आगे की पीढ़ी सुसंस्कारित करने के लिए प्रयत्न करना, यही खरी सत्सेवा!

नागरिको, आदर्श राज्य आनेवाला ही है; परंतु इसके लिए आगे की पीढ़ी सुसंस्कारित होनी चाहिए। इसलिए प्रत्येक को प्रयत्न करना आवश्यक है। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने कानी उंगलीपर गोवर्धन पर्वत उठाया ही था; परंतु उसमें स्थूल से प्रत्येक गोप-गोपी लाठी लगाकर सहभागी हुए थे, वैसी ही स्थिति आज भी है। हमें भी वही कार्य कर केवल हाथ लगाने के लिए सज्ज होना है। 'आइए चलें, आगे की पिढी सुसंस्कारित करने के लिए सिद्ध हो जाएंगे!

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-95

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

१. भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति कहाँ हुई थी?

२. आर्य समाज की स्थापना किसने की ?

३. पंजाबी भाषा की लिपि कौनसी है ?

४. भारत की मुख्य भूमि का दक्षिणतम किनारा कौनसा है ?

५. भारत में सबसे पहले सूर्य किस राज्य में निकलता है ?

६. इंसुलिन का प्रयोग किस बीमारी के उपचार में होता है ?

७. बिहू किस राज्य का प्रसिद्ध त्योहार है ?

८. कौनसा विटामिन आंवले में प्रचुर मात्रा में मिलता है ?

९. भारत का प्रथम गवर्नर जनरल कौन था ?

१०. कागज का आविष्कार किस देश में हुआ ?

११. 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना किसने की ?

१२. वास्कोडिगामा भारत कब आया ?

१३. वास्कोडिगामा कहाँ का रहने वाला था ?

१४. हवा महल कहाँ स्थित है ?

१५. सिख धर्म का संस्थापक किस सिख गुरु को माना जाता है ?

१६. सिखों का प्रमुख त्यौहार कौन-सा है ?

१७. 'लौह पुरुष' किस महापुरुष को कहा जाता है ?

१८. नेताजी किस महापुरुष को कहा जाता है ?

१९. दिल्ली स्थित लाल बहादुर शास्त्री की समाधि का क्या नाम है ?

२०. महाभारत के रचियता कौन हैं ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....
....
....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

नारी के सोलह श्रृंगार में छुपा अच्छे स्वास्थ्य का रहस्य...

सोलह श्रृंगार का महिलाओं के जीवन में चिरकाल से संबन्ध रहा है। पुरातत्ववेत्ताओं ने खुदाई के समय विभिन्न धातुओं के आभूषण प्राप्त किये हैं जो तत्कालीन समाज में महिलाएँ धारण करती थी। पत्थर, ताँबा, पीतल, गिलेट, शंख-सीप, सोना, चाँदी आदि कई प्रकार की धातुएँ उस समय प्रचलित थीं। फूलों के भी सुन्दर आभूषण महिलाएँ धारण करती थीं। महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञान शाकुन्तल में शकुन्तला फूलों से निर्मित आभूषण ही पहनती थी। नयनाभिराम वस्त्रों के साथ-साथ नख-शिख तक सुन्दर आभूषण नारी सौन्दर्य की श्रीवृद्धि कर देते हैं।

नारी के सोलह श्रृंगार के अन्तर्गत बिन्दी, गजरा, टीका, सिन्दूर, काजल, मंगलसूत्र, कंठहार, लाल चूनर, मेहंदी, बाजूबन्द, नथ, चूड़ी, कंगन, अँगूठी, हाथफूल, कमरबन्द, पायल, बिछिया आदि प्रचलित प्रमुख आभूषण है। देशकाल वातावरण के अनुसार इनमें परिवर्तन देखा जा सकता है। वर्तमान समय में भारी आभूषणों का स्थान हल्के वजन वाले आभूषणों ने ले लिया है।

१. बिन्दी- यश गौरव,पराक्रम तथा तेजस्विता की प्रतीक बिन्दी भारतीय नारी के अटल सौभाग्य और सम्मान का प्रतीक है। प्रत्येक शुभअवसर पर लाल रंग की बिन्दी विशेषरूप से प्रचलन में है। बिन्दी के विभिन्न आकार हैं। महिलाएँ अपनी मुखाकृति के अनुसार बिन्दी का प्रयोग करती हैं। किसी कवि ने कहा है -

नारी का अभिमान है बिन्दी,
नारी का श्रृंगार है बिन्दी"।

बिन्दी सौभाग्य सूचक तो है ही यह स्वास्थ्य के लिए भी अतिलाभप्रद है। मस्तिष्क के मध्य भाग में आज्ञाचक्र होता है जिससे मन शान्त रहता है। बिन्दी मन की चंचलता को स्थिर करती है। सिरदर्द और अनिद्रा में आज्ञाचक्र वाले स्थान पर

बिन्दी लगाने से आराम मिलता है। प्राचीनकाल में हल्दी और चूने से बनाए जाने वाले कुंकम से माथे पर बिन्दी लगाई जाती थी। यह बिन्दी कीटाणु रोधक होती थी।

२. गजरा - मोगरा, जूही, गुलदाउदी आदि सुगन्धित पुष्पों से सिर पर जूड़ा या वेणी को सजाने का प्रचलन है। सम्पूर्ण भारत विशेषकर दक्षिण भारत में केश सज्जा में सुगंधित पुष्पों का विशेष महत्व है।

३ टीका,रखड़ी - मस्तिष्क पर माँग पर लगाए जाने वाले टीके का श्रृंगार के साथ ही स्वास्थ्य के लिए भी विशेष महत्व है। मानसिक तनाव को दूर करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शरीर की गर्मी को दूर करता है। मस्तिष्क में ठंडक करता है।

४ सिन्दूर - भारतीय संस्कृति में विवाह की शुभ वेला में वर - वधू की माँग सिंदूर से भरता है। यह सौभाग्य सूचक है। यदि सिन्दूर शुद्ध हो तो यह स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।

५ काजल - प्राचीन समय में औषधि मिश्रित काजल वयोवृद्ध महिलाएँ घर पर ही निर्मित करती थी। आधुनिक समय में विभिन्न प्रकार की काजल-पेंसिल बाजार में उपलब्ध हैं। महिलाएँ इनका उपयोग अपनी आँखों के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए करती है। कारे - कारे कजरारे नैन वधू के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देते हैं।

६ मंगलसूत्र, हार - नारी के गले के सौन्दर्य को बढ़ाने वाला यह महत्वपूर्ण आभूषण है। वर-वधू को विवाह मंडप में मंगलसूत्र धारण करवाता है। इसे पहनने के पश्चात् ही कन्या सौभाग्यवती कहलाती है। यह स्वास्थ्यवर्धक है। हृदय सम्बन्धी व्याधियों को दूर करता है। ब्लडप्रेशर को नियंत्रित करता है। कंठहार गले की आवाज पर नियंत्रण रखता है। कंठ रोग नियंत्रित रहते हैं।

७ लालचूनरी - विवाह में वधू को लाल चूनरी पहिनाई जाती है। सौभाग्य की निशानी होती है। प्रत्येक महिला किसी भी शुभ कार्य में लाल चूनर ही पहनती है। लालरंग पहनकर मन चुस्त, फुर्तीला और प्रसन्न रहता है।

८ मेंहदी - सोलह श्रृंगार का वर्णन मेंहदी के बिना अधूरा है। जब तक वर-वधू के हाथों में मेंहदी नहीं लगती है तब तक विवाह का आनन्द अधूरा है। कहा जाता है जिस मेंहदी का गहरे रंग में रचना वर और वधू के भविष्य में आपसी प्यार और सुखद भविष्य का द्योतक है। मेंहदी स्वास्थ्यवर्धक भी है।

९ बाजूबन्ध - भुजाओं में पहने जाने वाला यह आभूषण स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी है। कंधे के तथा भुजाओं के दर्द में राहत देता है।

१० नथ - नाक में पहने जाने वाला यह आभूषण गर्भाशय तथा नाक,कान तथा गले के रोगों की रोकथाम में सहायक है। यह विभिन्न आकृतियों में प्राप्त होती है। नाक में लौंग भी पहनी जाती है।

११ चूड़ीकंगन - ये विभिन्न प्रकार की होती हैं। सोना,डायमंड के कंगन व चूड़ियाँ हाथ के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। इन्हें शुभ अवसरों पर पहना जाता है। काँच,मेटल तथ लाख की सुन्दर - सुन्दर चूड़ियाँ साड़ियों के मेचिंग कलर में उपलब्ध हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से ये गहना आवश्यक है। इससे पॉज़िटिव ऊर्जा का संचार होता है। हार्टबीट नियंत्रित रहती है। ब्लडप्रेशर में भी लाभदायक है। गले सम्बन्धी रोगों को भी नियंत्रित रखती है।

१२ अँगूठी - विभिन्न ऊँगलियों में पहने जाने वाली अँगूठियों का अलग - अलग महत्व है। स्वास्थ्य की दृष्टि से अँगूठी पहनना आवश्यक है। विवाह में पहनाए जाने वाली अँगूठी का हृदय से सम्बन्ध रहता है।

१३ कर्णफूल, बाली - कान में पहनने वाले आभूषण भी स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक है। कर्णभूषण एक्यूप्रेशर का कार्य करते हैं। सोचने समझने की तर्क शक्ति बढ़ाते हैं। मासिक धर्म में होने वाली विभिन्न समस्याओं में महिलाओं के लिए सहायक है। कुँआरी कन्याओं के स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपयोगी है।

१४ कमरबन्द - कमर में धारण किया जाने वाला यह आभूषण,चाँदी,डायमण्ड तथा स्वर्ण में उपलब्ध है। पाचनतंत्र पर कमरबन्ध का प्रभाव पड़ता है।

१५ बिछिया - पैर के बीच की तीन ऊँगलियों में बिछिया पहनी जाती है। यह चाँदी का आभूषण है। इसे धारण करने से चन्द्रमा की कृपा बनी रहती है। पैरों में स्वर्ण धारण करना वर्जित है। सोना गर्म धातु है। इसकी तस्वीर गर्म होती है। बिछिया पहनना स्वास्थ्यवर्धक है। इसे पहनने से मासिकधर्म नियमित रहता है। यह एक्यूप्रेशर का कार्य करती है। तलवे से लेकर नाभिमंडल तक सभी नाड़ियाँ व्यवस्थित रहती है। आजकल तीन-तीन बिछुड़ियों का चलन नगरीय क्षेत्रों में नहीं दिखलाई देता है। गर्भाशय तथा हृदयतंत्र तक यह स्वस्थ रखती है। ब्लडप्रेशर नियंत्रित रखती है। चाँदी विद्युत की सुचालक है। शरीर को ताजगी प्रदान करती है। अँगूठे में भी चाँदी का छल्ला धारण किया जाता है। सीतामाता का रावण ने अपहरण किया था तब सीताजी ने रास्ते में जो आभूषण गिराये थे उनमें पैर के आभूषणों में बिछिया और पायल का वर्णन है।

१६ पायल - पैरों में धारण की जाने वाली पायल नकारात्मक ऊर्जा दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। आयुर्वेद के अनुसार जिन महिलाओं को मासिकधर्म के समय कष्ट होता हो उन्हें वजनदार पायल धारण करना चाहिए। इससे दर्द में भी राहत मिलती हे। पेट तथा नितंब की वसा पर पायल नियंत्रण रखती है। इससे हड्डियाँ भी मजबूत होती है। यह आभूषण हेमोग्लोबीन के असन्तुलन को नियंत्रित रखता है।

इनके अतिरिक्त चूड़ामणि,हँसली, हाथफूल, गोखरू, नवलखाहार, माला, चेन छोटे तथा लम्बे हार, कान के झुमके, लटकन, बाली,पैरों में चाँदी के कड़े, आयल साँकले तथा विभिन्न आकृतियों की मुद्रिका तथा डायमण्ड के सभी प्रकार के आभूषणों के इस लेख में केवल नाम ही दिये गये हैं। मैंने उनका वर्णन नहीं किया है। लिपस्टिक, नेलपॉलिश, हेअर-कलर, नेलआर्ट, हेअर स्टाइल, आईब्रो, मेडिक्योर, पेडीक्योर आदि सभी नारी के आधुनिक श्रृंगार के अन्तर्गत आते हैं। ब्यूटी पार्लरों में भी इन सब श्रृंगार के लिए सुविधाएँ उपलब्ध हैं। नारी के सौंदर्य को निखार प्रदान करने वाले ये आभूषण प्राचीनकाल से ही उपयोगी माने गये हैं। एक समय था जब बैंक आदि में पैसा जमा करने के साधन नहीं हुआ करते थे, तब विभिन्न प्रकार के आभूषण ही वित्तीय संकट में, विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति की सहायता करते थे। ■ - उमा मेहता

आजादी

ये समाज क्यों सोचता है कि लड़की अकेली है इसका मतलब वह गलत ही है, उसके पास भी हृदय हैं, उसके भी कुछ सपने कुछ फीलिंग हैं वो खुद अपनी जिम्मेदारी उठा सकती हैं। कई रातों से मैं सो नहीं पायी थी मन एकदम अशान्त रहने लगा था, ऊब गई थी मैं ऐसे घुट -घुट कर ये घुटन दिन प्रतिदिन असह्य होती जा रही थी। मन में ख्याल आया एक और आखिरी बार कोशिश करके देख लेती हूँ शायद मान जाय। शाम को नवीन घर आया मेरे पूछने पर उसने बहुत ही तीखा जवाब दिया 'प्रिया तुम समझती क्यों नहीं हो मेरी समाज में कुछ रेपोटेशन है क्यों खराब करना चाहती हो तुम और हां.... ओह अब समझी क्यों नहीं जाने देते हो तुम्हारी रेपोटेशन खराब हो जाएगी आज के जमाने में भी तुम ये सब सोच रहे हो ,किस दुनिया में जी रहे हो नवीन तुम ,अगर तुम्हारी रेपोटेशन इतनी ही खराब हो रही हैं तो छोड़ क्यों नहीं देते तुम मुझे हा.. ,क्यों मार रहे हो मुझे घुट-घुट कर, घुटन होती हैं मुझे यहाँ (नवीन के बात को बीच में काटकर मैंने एक ही साँस में कह डाली थी ये सारी बातें)।

शाम होने को था मैं तैयार हुए नवीन का इंतजार कर रही थी उसका अभी तक कोई पता नहीं था, कई बार फोन भी ट्राई कर चुकी थी ल`किन नॉट रिचेबल आ रहा था! अब तक दामिनी का कई बार फोन आ चुका था, मैं उससे कई बहाने बनाये जा रही थी 'बस यार तैयार हो रही हूँ, अभी निकल रही हूँ.

पर अब तो हद हो गई थी ६ बजने वाले थे नवीन का अब तक कोई पता नहीं था, जबकि जाते वक्त मैंने बोला भी था आज जल्दी आ जाना दामिनी के वहाँ जाना है उसके बेटी का बर्थडे हैं और हाँ कोई गिफ्ट भी लेते आना..

हाँ आ जाऊँगा बोल के गया था और अब तक ना आना और फोन भी ना लगना गुस्सा आ रहा था मुझे और टेंशन भी हो रही थी कम से कम एक फोन ही कर देता पर नहीं... (मैं सोच ही रही थी कि दरवाजे की घंटी बजी दरवाज़ा खोल ा तो सामने नवीन खड़ा था)

देखो प्रिया तुम चली जाओ मैं नहीं आ पाऊँगा और हाँ गाड़ी में गिफ्ट है ये लो चाभी निकालेना। (दरवाज़ा खोलते ही वो बोल पड़ा)

तुम नहीं आ रहे? क्या मतलब हैं तुम्हारा? हाँ चले जाऊँ मैं अकेले और तुमने जो दामिनी से आने के लिए बोला था उसका क्या? (मैंने तेज आवाज़ में एक साथ कई सारे सवाल पूछ पड़ी)

मैं नहीं आ रहा बस मुझे बहुत सारे काम अधूरे पड़े हैं उन्हें पूरा करना है इसलिए तुम्हें जाना है, तो जाओ वरना मत जाओ, मुझे फोर्स मत करो। (उसने गाड़ी की चाभी मेरे हाथ पर रखकर अन्दर जाते हुए बोला)

मैं वही खड़ी उसे अन्दर जाते हुए देख रही थी, कैसे बदल गया था ये। पहले तो मन में आया मैं भी ना जाऊँ फिर दामिनी से किया आने का वादा भी तो निभाना था। मैंने अपना पर्स उठाया और दामिनी के घर चल दी (घर से थोड़े ही दूर पर था दामिनी का घर)

मुझे पहले ही आ जाना चाहिए था, नहीं करना चाहिए था नवीन का इंतजार मुझे ,मैं अच्छी तरह जानती तो थी उसे, नहीं आने वाल ा था वो मेरे साथ, बस तसल्ली के लिए इंतजार किया की शायद वो साथ चला आये इन्हीं बातों में उलझी मैं दामिनी के घर जा पहुँची।

प्रिया नवीन नहीं आया? (दामिनी ने मुझे गले लगाते हुए पूछा) ना दरअसल उसे कुछ काम था आने वाला था पर काम की वजह से..... (कहते-कहते मैं रुक गई)

चल कोई ना आ जा अन्दर मैं तेरा ही इंतजार कर रही थी। कार्यक्रम ख़त्म होने के बाद मैं घर आयी तो नवीन लैपटॉप लिए सोफे पर बैठा बैठा सो गया था, मैंने लैपटॉप बन्द किया और उसका पैर ऊपर कर उसपर कम्बल डाल दिया, पहल`सोचा जगाऊँ फिर सोचा नहीं रहने देती हूँ क्या पता अधूरा काम नींद खुले तो पूरा करे, मैं अपने कमरे में आ गई।

कमरे में आयी तो बहुत रोना आ रहा था कप. डा चेंज कर बिस्तर पर लेटे मैं सोचने लगी, क्या यही है मेरी जिन्दगी? क्या यही करना चाहती थी मैं? ऐसे ही कितने सवालों में मैं उलझती जा रही थी और ना जाने कितने ही ऐसे असंख्य सवाल मेरे मन को छलनी कर रहे थे।

शादी को डेढ़ साल हो गया था, मेरे और नवीन के बीच हमेशा मनमुटाव रहता था, मुझे समझ नहीं आता था की मैं उसे नहीं समझती या वो मुझे नहीं समझता? दो अलग विचारों के लोगों को बाँध दिया गया था एक ऐसे बंधन में जिसे तोड़ना इतना आसान नहीं था।

मैं एक स्वतंत्र विचारों की थी, जबकि नवीन को समाज की रुढ़ियों ने जकड़ रखा था, उसे लगता था महिलायें चारदीवारी में ज्यादा सुरक्षित हैं बाहर की दुनिया उनके लिए नहीं है, आज के जेनेरेशन में भी वह ऐसा सोचता था, शादी के पहले तो वो ऐसा नहीं कहता था फिर शादी के बाद ये बंदिश कैसी, जब भी मैं उससे अपनी नौकरी की बात करती वह झल्ला उठता था, मैंने अपने सपनों को पीछे छोड़ बस टीचिंग ही तो करना चाहती थी, कौन सा दूर जाना था पास में ही तो था कॉलेज , ना जाने क्या प्रॉब्लम थी उसे? ऐसे बहुत सारे प्रश्न थे मेरे मन में।

आज के उसके इस व्यवहार से मैंने तय कर लिया था चाहे जो हो जाए कल मैं इससे बात

करके रहूँगी, नहीं रह सकती मैं एक कैद पक्षी के भाँति इस चारदीवारी में, जब और किसी बात से इसे प्रॉब्लम नहीं हैं तो फिर मेरे नौकरी करने से क्यों दिक्कत है इसे, इसी उधेड़बुन में ना जाने कब मुझे नींद आ गई।

सुबह नींद खुली तो नवीन बैड पर बैठा लैपटॉप में कुछ कर रहा था।

गुड मॉर्निंग प्रिया उठ गई तुम!

गुड मॉर्निंग बोल के बैड से उतरी तो सोचा अभी पूछ लुँ की 'नवीन आज तुम्हारे जाने के बाद मैं दामिनी से मिल आऊँ ताकी उसके कॉलेज जा कर मैं अपना रिज्यूम दे आऊँ ,दामिनी बता रही थी सीट खाली है सो मैं अप्लाई कर देती हूँ ,फिर सोचा अभी हाइपर हो जाएगा पहले नहा धो लूँ ब्रेकफास्ट करते वक्त पूछ लूँगी। नवीन आ जाओ ब्रेकफास्ट तैयार हैं (मैं नाश्ता प्लेट में लगाते हुए बोली और हिम्मत करके सोचा पूछ लूँगी)

अगर आज नवीन ने मना कर दिया तो ये मेरी तीसरी नाकाम कोशिश होगी।

प्रिया तुम भी बैठो (नवीन कुर्सी पर बैठते हुए बोला)

क्या हुआ प्रिया? (उसने मेरे तरफ देखकर पूछा)

हाँ.... मैं सोच रही थी कि.....

क्या प्रिया बोलो?

नवीन वो मैं तुम्हारे ऑफिस जाने के बाद घर पर अकेली रह जाती हूँ, बहुत बोर होती हूँ मैं, तो........

हां तो बुला लो नैना दी को कुछ दिनों के लिए (मेरे बात को बीच में काटते हुए नवीन बोला)

नहीं नवीन दी के ऊपर बहुत जिम्मेदारी है, उनके दो बच्चे, जीजु और फिर स्कूल भी देखना होता है वो नहीं आ पायेंगी मैं सोच रही कि मैं भी कॉलेज जॉइन कर लूं तुम्हारे ऑफिस जाने के बाद मैं कॉलेज चली जाऊँगी और फिर कॉलेज में कम समय ही देना होता है तो तुम्हारे आने के पहले आ भी जाती मेरी बोरियत भी मिट जायेगी और मैं घर भी देख लुंगी, नवीन प्लीज .....

देखो प्रिया मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ बार-बार एक ही बात कहना अच्छा नहीं लगता (मेरे बातों को बीच में काटता हुआ बोला और नाश्ता छोड़कर चला गया)

उस समय बहुत रोना आ रहा था, मुझे पता नहीं क्या दिक्कत थी इसे मेरी नौकरी से बता देता तो भी तसल्ली हो जाती।

बहुत देर तक मैं स्थिर वही बैठी रही जैसे एक बार फिर मेरी स्वतंत्रता को छिन कर कैद कर लिया गया हो, ऐसा तो नहीं सोचा था मैंने, अपने सपनों को फिर एक बार नवीन के पैरो तले रौंदते देखते रह गयी थी मैं, पहले माँ पापा ने शादी करके मेरे सपनों को कैद किया और जिससे शादी हुयी उसने मेरे सारे सपने तोड़ कर चकनाचूर कर दिया।

क्यों सुन रही थी मैं नवीन की बातों को अपने सपनों को पूरा करने के लिए ही तो मैं शादी नहीं करना चाहती थी कि किसी की कोई रोक टोक नहीं होगी, अपनी मरजी से जीना चाहती थी अपना जीवन, पर एक अकेली लड़की को समाज कहा जीने देता, बिन ब्याही लड़की तो जैसे समाज का कलंक हो, करनी तो पड़ती एक न एक दिन शादी मेरी भी हो गयी थी.......

शाम को नवीन बहुत देर से घर आया आते ही बोला मैं खाना खा कर आया हूँ तुम खा लो।

पिछले कुछ दिनों से नवीन ज्यादा बदल गया था उसे मेरी कोई फिक्र नहीं थी। सुबह जल्दी चले जाना और शाम को देर से आना उसकी आदत हो गई थी, जब भी कुछ कहने की कोशिश करती तो मेरी बातों को सुने बिना ही घिसे कैसेट की तरह एक ही बात कहता देखो प्रिया मैं नहीं चाहता की तुम जाकर कही कोई नौकरी करो।

मैंने बात बन्द कर दी थी नवीन से जरुरत से ज्यादा नहीं बोलती थी मैं उससे उसके ऑफिस जाने के बाद जब मैं अकेली होती तो ऐसा लगता था कि मुझे बिना पिंजरे के कैद किया गया हो ऊब गयी थी मैं ऐसे जिन्दगी से...

हम लोग के बीच की दूरियाँ बढ़ने लगी थी हमारा रिश्ता उस रबड़ की भाँति हो गया था जिसके दोनों सिरों को खींचा जा रहा था कब टूट जाय कोई भरोसा नहीं था। मैं शायद माँ के उन बातों से अबतक टिकी थी 'शादी के बाद पति ही एक लड़की का संसार होता है उसका परमेश्वर होता है, एक अकेली लड़की को समाज कभी इज्जत नहीं देता '

ये समाज क्यों सोचता है कि लड़की अकेली है इसका मतलब वह गलत ही है, उसके पास भी हृदय हैं, उसके भी कुछ सपने कुछ फीलिंग हैं वो खुद अपनी जिम्मेदारी उठा सकती हैं। कई

मैंने बात बन्द कर दी थी नवीन से जरुरत से ज्यादा नहीं बोलती थी मैं उससे उसके ऑफिस जाने के बाद जब मैं अकेली होती तो ऐसा लगता था कि मुझे बिना पिंजरे के कैद किया गया हो ऊब गयी थी मैं ऐसे जिन्दगी से...

हम लोग के बीच की दूरियाँ बढ़ने लगी थी हमारा रिश्ता उस रबड़ की भाँति हो गया था जिसके दोनों सिरों को खींचा जा रहा था कब टूट जाय कोई भरोसा नहीं था। मैं शायद माँ के उन बातों से अबतक टिकी थी 'शादी के बाद पति ही एक लड़की का संसार होता है उसका परमेश्वर होता है, एक अकेली लड़की को समाज कभी इज्जत नहीं देता '

रातों से मैं सो नहीं पायी थी मन एकदम अशान्त रहने लगा था, ऊब गई थी मैं ऐसे घुट -घुट कर ये घुटन दिन प्रतिदिन असह्य होती जा रही थी। मन में ख्याल आया एक और आखिरी बार कोशिश करके देख लेती हूँ शायद मान जाय। शाम को नवीन घर आया मेरे पूछने पर उसने बहुत ही तीखा जवाब दिया 'प्रिया तुम समझती क्यों नहीं हो मेरी समाज में कुछ रेपोटेशन है क्यों खराब करना चाहती हो तुम और हां......

ओह अब समझी क्यों नहीं जाने देते हो तुम्हारी रेपोटेशन खराब हो जाएगी आज के जमाने में भी तुम ये सब सोच रहे हो ,किस दुनिया में जी रहे हो नवीन तुम ,अगर तुम्हारी रेपोटेशन इतनी ही खराब हो रही हैं तो छोड़ क्यों नहीं देते तुम मुझे हा.. ,क्यों मार रहे हो मुझे घुट-घुट कर, घुटन होती हैं मुझे यहाँ (नवीन के बात को बीच में काटकर मैंने एक ही साँस में कह डाली थी ये सारी बातें)।

दूसरे दिन नवीन के ऑफिस जाने के बाद

मैंने काम खत्म कर गाँव वाले घर पर गई जहाँ नवीन के मम्मी पापा रहते थे, वहाँ जाकर मुझे एक सुकून का अनुभव हुआ। दो छोटे छोटे कमरे, एक छोटा सा और चारदीवारी के भीतर आम के दो तीन पेड़ छोटे -छोटे फूलों के पौधे जो मालिक के अभाव में सूख रहे थे मन को एक असीम सुख दे रहे थे। मैंने जल्दी -जल्दी सफाई की और घर के तरफ बढ़ी।

शाम के ७ बज रहे थे नवीन घर आ गया था।

कहा गई थी? आते ही नवीन पूछ पड़ा मेरा जवाब न पाकर वह फिर पूछूं कहा गई थी प्रिया?

मैं बैठते हुए शान्त लहजे बोली नवीन अब मैं यहाँ नहीं रहूँगी, ऊब गई हूँ मैं।

गॉव वाला घर मैंने साफ कर लिया है वही रहने वाली हूँ मैं और हा दामिनी के कॉलेज में जो सीट खाली थी मैंने अप्लाई कर दिया है कल जा रही हु वहाँ कभी -कभी वीक-एन्ड पर आ जाना अगर तुम्हारी मरजी हो तो जबरदस्ती नहीं है कोई। क्यों जाना चाहती हो तुम वहाँ? क्या पड़ी हैं तुम्हें नौकरी की? क्या कमी हैं तुम्हें यहाँ? मैं जितना कमाता हूँ कम है क्या वो? (एक साथ कई सारे सवाल पूछ पड़ा वो)

बात पैसों की नहीं है नवीन ना ही कोई कमी है मुझे और कोई शिकायत भी नहीं है तुमसे मैं....

फिर क्यों...

मैं स्वतंत्र रहना चाहती हूं। नवीन यहाँ चारदीवारी में घुटन होती है मुझे। और यहाँ से बाहर मैं जा नहीं सकती, क्योंकि तुम्हारा रेपोटेशन खराब हो जाएगा ना , पूरे दो साल हो गये हैं हमारी शादी को। कभी जानना चाहा है क्या चाहती में हूं मैं क्या पसन्द है मुझे कभी समय दिया है मुझे,खुद तो कभी समय दिया नहीं और अगर मैं नौकरी करुं तो तुम्हारा रेपोटेशन खराब हो जाएगा, मैं भी इंसान हूं नवीन, मेरी भी भावनाएं हैं (नवीन के बातों को बीच में काटते हुए बोल गई थी मैं सबकुछ) रोते हुए कमरे में चली गई।

कुछ देर बाद नवीन कमरे में आया सोच लिया है तुम्हें जाना है? हाँ... कुछ देर कमरे में सन्नाटा रहा नवीन उठ के कमरे से बाहर चला गया।

सुबह नवीन जल्दी ऑफिस चला गया आज भी उसे फुरसत नहीं थी मैंने काम निपटा के बैग पैक किया अभी निकलने वाली तभी नवीन घर आ गया था कितने दिन के बाद वो आज जल्दी घर आया था पता नहीं क्यों! ३ बजने वाले थे, मैंने ऑटो में समान रखा ओर खुद भी बैठ गई। वहाँ पहुँची तो शाम होने थी मैं बैग एक कोने में रख बाहर आकर आम के पेड़ के पास खड़े होकर डुबते सूरज को देख रही थी, इस डुबते सूरज के साथ मैं छोड़ आई थी सब पीछे। एक अजीब से सुकून का अनुभव हो रहा था जैसे किसी पिंजरे में बंद पक्षी को एक लंबे अरसे के बाद स्वतंत्र किया गया हो...

-संजना पटेल

देशभर में १०३ दवाओं के सैंपल फेल, अलर्ट किया गया जारी

देशभर में बनी १०३ दवाओं के सैंपल फेल साबित हुए है। जिसमें से ३८ दवाईयां हिमाचल में बनी है। जिसको लेकर केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) व स्टेट ड्रग अथॉरिटी ने ड्रग अलर्ट जारी किया। इन दवाईयों में से सर्दी, खांसी, जुकाम, एलर्जी व दर्द निवारण सहित विटामिन व हृदय रोग के लिए प्रयोग होने वाली दवाओं के सैंपल फेल हुए हैं। खराब पाई ३८ दवाओं का उत्पादन हिमाचल के उद्योगों में हुआ है। वहीं, उत्तराखंड में ११, गुजरात और पंजाब की नौ-नौ दवाएं गुणवत्ता की कसौटी पर खरी नहीं उतरीं। बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, असम, व तमिलनाडु के उद्योगों में बनी दवाओं के सैंपल भी फेल हुए हैं। वहीं, सीडीएससीओ के अलर्ट में ४७ दवाओं के सैंपल फेल हुए, इसमें २१ दवाएं हिमाचल में बनी हैं। स्टेट ड्रग अथॉरिटी के अलर्ट में देशभर की ५६ दवाओं की गुणवत्ता सही नहीं पाई गई। इसमें हिमाचल में बनी १७ दवाएं शामिल हैं। सीडीएससीओ ने सभी राज्यों के दवा नियंत्रकों को सूची जारी कर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा पंजाब के फिल्लौर के उद्योग में बना अजिथ्रोमाइसिन ओरल खराब पाया है। एल्बेंडाजोल, एमोक्सिसिलिन, पेरासिटामोल एंड डिक्लोफिनेक, लिवोसिट्राजिन, कैल्शियम विद विटामिन डी३, फालिक एसिड सहित अन्य कई ऐसी नामचीन दवाओं के सैंपल फेल मिले हैं।

रिपोर्ट में पाया गया है कि अधिकतर दवाओं में धूल के कण मिले हैं। वहीं मिस ब्रांडेड यानी लेवल में भी गलतियां मिली हैं। बताई मात्रा के अनुरूप भी दवा में सामग्री नहीं डाली है। कुछ दवाएं नकली भी पाई जा रही हैं। वेबसाइट पर बैच के साथ जानकारी अपलोड सीडीएससीओ ने लोगों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए दवाओं की जानकारी संबंधित बैच के साथ वेबसाइट पर अपलोड कर दी है। संबंधित राज्यों के दवा नियंत्रकों द्वारा अब खराब दवाओं को बाजार से वापस मंगवाने के निर्देश दिए जा रहे हैं।

MONAD
UNIVERSITY
Recognized & Approved by :
UGC
UP Govt.
PCI
BCI
NCTE
AIU
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

जमी हुई झील

पार्टी देर रात तक चली, शायद ढाई बज गए होंगे। बस, कुछ गिने-चुने घंटे बचे होंगे सुबह होने में। मैंने मनसा के स्टूडियो में पडे दीवान पर बस कमर सीधी भर की होगी कि भिनसारे की रोशनी चमकने लगी। कैट भी चाय पीती दिखाई दी और कुछ देर बाद ही हम चल दिये। मनसा ने इस बार फिर बस तक छोड़ा। बस में चढ़कर वह मेरे पास आया और फुसफुसा कर बोला,'माफ करना दोस्त। तुम दोनों को अलग कमरा नहीं दे पाया। मेहमान कुछ ज्यादा ही रुक गए थे।' 'नहीं यार, ' मैंने कहा, 'अलग कमरे की कोई जरूरत ही नहीं थी। '

हमारी कैब को चेक पोस्ट पर रोक दिया गया। मैंने तो समझा था कि यह महज औपचारिकता भर होगी। पासपोर्ट, विसा वगैरह जाँच कर जाने दिया जायेगा। सिक्योरिटी पर बेहद लम्बी और बेहद स्मार्ट औरत थी। उसने मेरा पासपोर्ट तो तुरंत लौटा दिया पर कैट का पासपोर्ट अपनी कठोर मुट्ठी में दबा कर उसे कार से उतरने को कहा।

कैट, यानी कैथरीन, के पासपोर्ट में तकनीकी आपत्ति थी। वह डाइवोर्सी थी और पासपोर्ट में अभी तक उसके पूर्व पति का नाम काटा नहीं गया था। पूर्व पति अमेरिकी था पर साथ में मुझे देख कर उस ऑफिसर ने मान लिया था कि मैं कैट का पति हूँ। उस जिद्दी ऑफिसर को यह समझाने में हमें काफी मशक्कत करनी पडी कि हम दोनों का रिश्ता क्या है। पर आखिर में वह समझ गई और हम दोनों पर शरारती मुस्कान फेंक कर बोली, 'ठीक है, एनज्वाय योरसेल्फ!'

वहाँ से चलने के बाद और होटल के रास्ते तक मैं उसके इस वाक्य का प्रयोजन समझने की कोशिश करता रहा। हम दोनों कनाडा की सीमा पार बर्लिंगटन में रात बिता कर लौट रहे थे। कल जब हमने बफैलो के होटल में चेकइन किया था, जैसा कि पहले से तय था, मैंने अपने मित्र मनसा को फोन कर दिया था कि हम बफैलो पहुँच गये हैं। उन्होंने कहा कि हम होटल में चेक न करें और दिन भर नायग्रा फाल और आसपास घूम कर शाम को सीमा पार करके उनके यहाँ आ जाएँ। वे बस अड्डे पर कार लेकर आ जाएँगे और हमें लिवा ले जाएँगे।

सब ठीकठाक रहा। बस अड्डे पर मनसा मिलगए थे और दस-पंद्रह मिनट में हम उनके घर पर थे। मनसा की पत्नी ने स्वागत किया और जब हम लिविंग रूम में गए तो पाया कि वहाँ काफी लोग पहले से ही मौजूद हैं और पार्टी चल रही है। बाद में पता लगा कि यह सब मनसा ने पहले से प्लान कर रखा था क्योंकि मैंने बफैलो का प्रोग्राम उसे बताया हुआ था। मनसा ने अपने कई एशियाई परिवारों को बुला रखा था जो सभी मुझसे मिल ना चाहते थे। उनमें भारतीय तो थे ही, कुछ पाकिस्तानी और बांगलादेशी भी थे। एक जोडा श्रीलंका का भी था। बाद में मैंने पाया कि वे सब कैट से ज्यादा प्रभावित हो रहे थे। एक तो उसका आकर्षक व्यक्तित्व, दूसरे उसकी धाराप्रवाह हिन्दी बोल सकने की योग्यता। दरअसल उसकी इसी योग्यता की वजह से मैंने भी अपनी पूरी अमेरिका यात्रा के दौरान उसे अपना सहयोगी चुना था। यहाँ ही नहीं, मैं जब भी भारतीयों के बीच होता, उसकी इस विशेषता को लोग आश्चर्य भरी नज़र से देखते थे। वह तीन वर्ष भारत में रह चुकी थी। प्रेमचंद के साहित्य पर रिसर्च कर चुकी थी और इस दौरान लमही और वाराणसी में काफी वक्त बिताया था।

लगभग एक महीने से हम दोनों साथ थे और 'कभी खुशी, कभी गम' के लमहे हमने साथ बिताए थे। पर उस सुरक्षा अधिकारी का वाक्य मैंने पहली बार सुना था और उसकी जैसी वह शरारती मुस्कान भी पहली दफे नोटिस की थी।

कैट केवल सहयोगी और दुभाषिया ही नहीं, वरन मेरी ड्राइवर भी थी। हम जब भी किसी दूसरे शहर जाते तो एयरपोर्ट पर ही 'एविस' या 'केट' की कार हमारा इंतज़ार कर रही होती थी। यह सब व्यवस्था कैट की ही होती थी। तमाम एप्वाइंटमेंट तय करना, एयरलाइन को फोन से अग्रिम चेकइन करना, सीट बुक करना और खाने की पसंद बताना और घूमने का कार्यक्रम बनाना आदि सब उसके ही जिम्मे था। इतना ही नहीं, दिन भर हम जिनसे मिलते या इंटरव्यू लेते, उसकी पूरी रिपोर्ट वह अपने लैपटॉप पर टाइप करके उसका प्रिंटआउट सुबह सौंप देती थी। कई बार मैं सोचता कि अगर वह न होती

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

सुनो कैट, 'मैं उसके और पास आ गया, 'कनाडा की तरफ से नीचे उतर कर हमने जमा हुआ नायग्रा देखा था न? पानी की धार गिरती थी और उस भयंकर सरदी में बर्फ बन जाती थी। पर ऊपर वेग से लाखों लिटर आता हुआ झरने का पानी तो नहीं जम पाता था। क्यों?' वह मेरी ओर घूमी और मेरी आँखों में आँखें गडा कर देखने लगी। 'ऐसा विपुल आवेग के कारण था' मैं अपनी ही रौ में बोलता गया, 'झील का पानी ठहरा हुआ था, इसलिए जम सका जबकि वेग और परिमाण के कारण नायग्रा नहीं जम पाया। इसी तरह जब अंतरंगता का आवेग और उष्णता हो तो रिश्तों पर बर्फ कैसे जम सकती है ? ऐसे में तो तमाम वर्जनाएँ अपने आप टूट जाती हैं।'

तो मेरा ट्रिप सार्थक न हो पाता।

पार्टी देर रात तक चली, शायद ढाई बज गए होंगे। बस, कुछ गिने-चुने घंटे बचे होंगे सुबह होने में। मैंने मनसा के स्टूडियो में पडे दीवान पर बस कमर सीधी भर की होगी कि भिनसारे की रोशनी चमकने लगी। कैट भी चाय पीती दिखाई दी और कुछ देर बाद ही हम चल दिये। मनसा ने इस बार फिर बस तक छोड़। बस में चढ़कर वह मेरे पास आया और फुसफुसा कर बोला,'माफ करना दोस्त। तुम दोनों को अलग कमरा नहीं दे पाया। मेहमान कुछ ज्यादा ही रुक गए थे।'

'नहीं यार, ' मैंने कहा, 'अलग कमरे की कोई जरूरत ही नहीं थी। '

ये बीच फरवरी के दिन थे। खूब सरदी पड़ रही थी। कल मैंने कनाडा साइड से नीचे उतर कर जमा हुआ नायग्रा देखा था। ऊपर से गिरता पानी जम कर बर्फ की परतें बना रहा था। बर्फ से जमी हुई झील तो मैं देख चुका था विस्कॉन्सिन राज्य के मेडिसिन में, जैसे कि वह झील न हो, सफेद बर्फ का दूर तक फैला मैदान हो। पर नायग्रा वाला दृश्य तो अद्भुत ही था। जगह-जगह झरने से झरती पानी की धारें बर्फ की चिलमन जैसी लग रही थीं। इस अविस्मरणीय दृश्य को मैंने अपने कैमरे में कैद कर लिया था।

और आज जब बर्लिंगटन से हम निकले थे तो कुछ दूर बाद ही बर्फ गिरने लगी थी। खिड़कियाँ पूरी तरह बंद थीं पर उनकी गंध से तेज हवा अपना रास्ता ढूँढ ही ले रही थी। बस में हीटर या तो था ही नहीं, या काम नहीं कर रहा था। हवा का बर्फीला झोंका तीर की तरह चुभता था और दाँत किटकिटाने लगते थे। हम दोनों के पास ओवरकोट तो थे पर वे कनाडा की सरदी के लिए नाकाफ़ी थे। मनसा ने चलते वक्त एक ऊनी शाल दे दिया था, जिसे मैंने लपेट लिया था पर कैट के बचाव के लिए बस, उसका ओवरकोट ही था।

मैंने उसकी तरफ एक गर्म नज़र फेंकी। उसने भी उसका मुस्करा कर जवाब दिया। बिना कुछ बोले मैंने अपना शाल उसकी तरफ बढ़ा दिया। थोड़ी वह झिझकी, पर फिर उसने शाल शेयर कर लिया और वह थोडा नज़दीक भी घिसट आई।

प्रकट में निकट होने का यह उसका पहला उपक्रम था। यों ग्रैंड कैनियान के चौंकाने वाले अवलोकन के बाद शाम को निकट के एक पब में डांस फ्लोर पर जब उसने मुझे डांस सिखाने की कोशिश की थी, तब भी हम दोनों कई बार निकट तो हुए थे पर वह एक शालीन असंपृक्तता बनाए रखती रही थी।

डांस करते-करते हम ग्रैंड कैनियान की रहस्यमयता की बात करते रहे थे। खासकर, मुझे यह कुतूहल हो रहा था कि किसने १८वीं सदी में गैंड कैनियान के माउंट्स के नाम हिंदू देवताओं के नाम पर कैसे और क्यों रखे होंगे।

वहाँ ब्रह्मा माउंट था, विष्णु और कैलास माउंट भी। उत्तर कैट के पास भी नहीं था पर उसने कहा था कि कल हम यहाँ की लाइब्रेरी और बुक शॉप में देखेंगे। शायद वहाँ कुछ संदर्भ मिल सके। मैंने 'हाँ' कहा और यह भी कि फिलहाल तो हमें पब और डांस की रोमानियत पर ही ध्यान देना चाहिए।

उसने भी अनुमोदन किया और डांस का अगला स्टेप सिखाने लगी।

पर जब से बफैलो की उस बेहद लम्बी ऑफिसर ने वह वाक्य बोला था, मुझे उसमें कुछ बदलाव जैसा लगने लगा था या हो सकता है कि यह सिर्फ मेरा भ्रम हो।

फिनिक्स में हम एरिज़ोना के अमेरिकी इंडियनों की बस्ती में गए थे। उन आदिवासियों को देखकर मैंने अपने बस्तर वाले आदिवासियों और उनके रहन-सहन की उनसे जब तुलना की तो लगा कि अमेरिकी आदिवासी तो जैसे माडर्न बन चुके हैं। उनके घरों में एसी और माक्रोवेव तक दिखाई दिये। हाँ, पहरावा और व्यवहार शहरी अमेरिकी जैसा नहीं था।

जब हम ट्राइबल विलेज से लौट रहे थे तो एक सड़क के किनारे कैट ने कार रोक दी।

मैंने पूछा कि क्या हुआ। तो बोली,'बहुत थक गई हूँ। थोडा आराम कर लूँगी तो ठीक हो जाऊँगी। हाँ, आप कार से मत उतरना और न शीशा खोलना। बगल में जो नहर है, उसमें घड़ियाल हैं।'

मैंने खिड़की से झाँका पर मुझे कोई घडियाल़ दिखाई नहीं दिया। फिर भी मैंने खिड़की नहीं खोली।

कैट आँखें बंद करके अपनी सीट पर अधलेटी थी। लगता था कि जैसे उसके सिर में दर्द है। वह इस समय छोटी बच्ची जैसी लग रही थी। उसके प्रति सहानुभूतिजन्य ममत्व जाग उठा। उसे पहली बार इतनी पास से देखा था। उसके गोरे माथे पर शिकन पड़ रही थी। मन हुआ कि उसका सिर दबा दूँ। पर अपने पर काबू रखे उसके जगने का इंतज़ार करता रहा।

वह आधी जर्मन-आधी अमेरिकी थी। उसकी माँ जर्मन थी और पिता अमेरिकी इसलिए उसके चेहरे पर कोमलता थी, अमेरिकनों जैसी औपचारिक कठोरता नहीं।

आधा घंटे बाद वह जग गई तो मैंने पूछा, 'क्या सिर में दर्द था?'

'हूँ, थोडा-सा।'

'अब कैसा लग रहा है ?'

'अब मैं ठीक हूँ। चलें ?' और उसने कार स्टार्ट कर दी।

न्यूयार्क में हमारी बफैलो से आनेवाली फ्लाइट थोडी लेट हो गई थी इसलिए जब हम लोग होटल पहुँचे तो रिसेप्शन पर बताया गया कि हमारे बुक किये गए कमरे किसी और को दे दिये गए हैं। अब

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

क्या होगा, मैं सोच में पड़ गया कि इतनी रात में हम कहाँ जाएँगे। कैट ने होटल मैनेजर को खूब सुनाया, पर न्यूयॉर्क तो पूरी तरह कमर्शियल शहर है। होटल को फायदा दिखाई दे रहा था तो वह हमारे कंसेशनल रेट पर बुक किये कमरों को क्यों रोके रखता ?

आखिर जिस एजेंसी ने हमारा टूर अरेंज किया था, कैट ने उसकी अधिकारी को फोन किया और अंततः एक अन्य होटल में जगह मिल ी, जिसका टैरिफ थोड़ा ज्यादा था। वहाँ पहुँचे तो पता लगा कि सिर्फ एक सुईट खाली है। छोटे कमरे कल ही मिल सकेंगे। कैट ने अर्थपूर्ण नज़र से मेरी तरफ देखा। विकल्प ही क्या था ? जो मिल रहा था, उसे तो ले ही लेना था। बाकी फिर देखेंगे।

सुईट अच्छा था। दरवाजा खोलते ही एक कमरा था जिससे अटैच थी एक किचनेट और आगे एक और रूम था। दोनों में बेड थे और बीच में पार्टीशन के रूप में मोटा परदा पड़ा था। ईस्ट कोस्ट के होटलों में किचनेट तो होता ही है जबकि वेस्ट कोस्ट के होटलों में नहीं।

मैंने बाहरवाला बेड लिया क्योंकि उसके साथ वाशरूम जुड़ा था।

कपड़े बदल कर और हाथ-मुँह धोकर अपने बेड पर अधलेटा एक किताब पढ़ रहा था कि कैट आई। उसके हाथ में चेंज के लिए कपडे थे।

'अरे, आप तो फ्रेश हो चुके। मैं वाशरूम इस्तेमाल कर लूँ?'

'ओह, क्यों नहीं !'

आधा घंटे बाद जब वह वाशरूम से निकली तो एकदम ताज़ी लग रही थी। गुलाबी रंग की नाइटी में उसका गोरा रंग और भी निखर आया था।

मैं एकटक उसे देखता ही रह गया।

'लुकिंग ग्रेट' मुँह से बेसाख्ता निकला।

'थैंक्स' टॉवल से बालों को सुखाते हुए बोली। उसने अपने पार्टीशन की तरफ कदम बढाए फिर एकाएक रुक गई। 'अभी नींद न आ रही हो तो कुछ देर बात कर लें।'

'हाँ, क्यों नहीं!' और वह सिटिंग एरिया में बैठ गई। मैं उठ बैठा और एक कुर्सी उसके नजदीक खींच कर आ बैठा।

'यह आपके टूर का आखिरी पड़ाव है। कल मुझे अपने सीनियर को रिपोर्ट भी भेजनी होगी। आपको यह पूरा दौरा कैसा लगा ? '

मैं थोड़ी देर रुक कर बोला,' बहुत अच्छी रही पूरी यात्रा। बहुत कुछ नया अनुभव भी हुआ।'

'कितनी लाभप्रद रही यह यात्रा आपके व्यवसाय के लिए? क्या प्राप्त किया इसमें ?'

'कई नए अनुभव हुए जिनका लाभ भविष्य में अवश्य मिलेगा।' कुछ ठहर कर फिर कहा, ' सबसे बडी उपलब्धि ?'

'हाँ।'

मुस्कुराहट के साथ अनायास ही मैं कह गया, ' वह तो तुम हो।'

वह शरमा कर नीचे देखने लगी।

'हाँ, निःसंदेह' मैं कहता गया,'एक अच्छा संवेदनशील और समझदार साथी पाया मैंने इस सफर में। तुम्हें इसमें संदेह है क्या ?'

वह भी मुस्कुराई और बोली,'पर मैं प्रोफेशनल अचीवमेंट की बात कर रही हूँ।'

मैं चुप ही रहा पर एक तीखी नज़र से उसे देखता रहा।

'देखिए, अब तक हमारा रिश्ता प्रोफेशनल ही रहा है। उसमें निजी रिश्तों की गुंजाइश कहाँ रहती है?'

'कल तो यह प्रोफेशनल रिलेशनशिप खत्म हो रही है। अब तो हम निजी रिश्तों की बातें भी कर सकेंगे।' मैंने कहा।

'मसलन?' उसने पूछा।

'मसलन...। तुमको क्या लगता है ?' मैंने शरारत से उसे देखा।

'कुछ नहीं। पहले मैं रिपोर्ट तैयार कर लूँ।'

'नहीं, वह तो लगभग बन ही गई। अब हम उससे मुक्त होकर सोचें। क्यों ठीक है न ?'

'जैसे ?' उसने मेरी आँखों में अपनी नज़र गड़ा कर पूछा। 'जैसे बफैलो वाली सुरक्षा अधिकारी की बात।'

अब वह खिलखिलाकर हँसी,'आप अभी तक वही सोच रहे हैं ?'

'हँसी की नहीं, बहुत सीरियस बात थी वह।' मैंने कहा।' पहले तो तुम मुझे 'आप' कहना बंद करो। अब प्रोफेशनल रिलेशनशिप नहीं रही तो यह आप वाला दुराव क्यों?'

इस पर भी वह हँसी और बोली, 'अच्छा बाबा, मान लिया। अब आगे बोलो।'

'उस दिन तो उस कैनेडियन की बात पर तुमने प्रतिक्रिया नहीं की थी, अब क्या विचार है?' टेबुल पर रखा उसका हाथ मैंने दबा दिया। उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया और बोली, 'आपको... नहीं, तुम्हें विस्कांसिन की वह जमी हुई झील याद है? '

'हाँ, क्यों?'

'पता है कि झील पर जमे हुए पानी की परत बडी भ्रामक होती है। लगता तो है कि उस बर्फ की चादर पर चढ़ कर हम झील पार कर सकेंगे। पर यह मुमकिन नहीं होता। बर्फ की वह परत बस, एक छलावा जैसी होती है, कहीं मजबूत तो कहीं एकदम झीनी होती है। आपने उस पर पाँव रखा कि वह चटख गई और आप धम्म से झील के पानी में डूब रहे होंगे।'

'हाँ, पर यह तुम किस संदर्भ में कह रही हो?' मैंने कुछ न समझ सकने पर पूछा।

'समझने की कोशिश करो।'

'हूँ।' मेरे मुँह से निकला।

'चलो, पहले चाय बनाते हैं। सैन फ्रांसिसको के होटल से शुगर और व्हाइटनर के सैशे मैंने बचा लिये थे। टीबैग तो आपके, सॉरी, तुम्हारे पास हैं ही।' और वह उठ कर सब सामान लेने चली गई। मैंने भी अपने बैग से टीबैग निकाल लिये।

अगले कुछ मिनटों में वह किचनेट के सामने थी और चाय के लिए पानी गर्म कर रही थी। मैं भी टीबैग लेकर वहीं पहुँच गया।

'सुनो कैट, 'मैं उसके और पास आ गया, 'कनाडा की तरफ से नीचे उतर कर हमने जमा हुआ नायग्रा देखा था न? पानी की धार गिरती थी और उस भयंकर सरदी में बर्फ बन जाती थी। पर ऊपर वेग से लाखों लिटर आता हुआ झरने का पानी तो नहीं जम पाता था। क्यों?'

वह मेरी ओर घूमी और मेरी आँखों में आँखें गडा कर देखने लगी। 'ऐसा विपुल आवेग के कारण था' मैं अपनी ही रौ में बोलता गया, 'झील का पानी ठहरा हुआ था, इसलिए जम सका जबकि वेग और परिमाण के कारण नायग्रा नहीं जम पाया। इसी तरह जब अंतरंगता का आवेग और उष्णता हो तो रिश्तों पर बर्फ कैसे जम सकती है ? ऐसे में तो तमाम वर्जनाएँ अपने आप टूट जाती हैं।'

'पर...' वह आगे कुछ बोले इससे पहले ही मैंने उसके नरम ओंठों पर अंगुली रख दी और कहा, ' अब बस कैट। किसी बहस की गुंजाइश नहीं है अब।'

और अगले क्षण तमाम वर्जनाएँ टूट चुकी थीं।

अब भला चाय की जरूरत कहाँ रह गई थी? ■

-मनमोहन सरल

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

वक्फ बोर्ड विवाद...

अमित शाह ने वक्फ बोर्ड की खोली परतें!

लोकसभा ने बुधवार को विभिन्न विपक्षी दलों के सदस्यों के कड़े विरोध के बीच वक्फ (संशोधन) विधेयक, २०२५ को पारित कर दिया जिसमें वक्फ (संशोधन) विधेयक पिछले साल आठ अगस्त को लोकसभा में पेश किए जाने के बाद आठ अगस्त, २०२४ को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) को भेजा गया था।

लोकसभा ने बुधवार को विभिन्न विपक्षी दलों के सदस्यों के कड़े विरोध के बीच वक्फ (संशोधन) विधेयक, २०२५ को पारित कर दिया जिसमें वक्फ (संशोधन) विधेयक पिछले साल आठ अगस्त को लोकसभा में पेश किए जाने के बाद आठ अगस्त, २०२४ को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) को भेजा गया था। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बैठक में संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) द्वारा प्रस्तावित १४ संशोधनों को अपनी मंजूरी दी। इससे पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बुधवार को लोकसभा में विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह वक्फ पर प्रस्तावित कानून नहीं मानने की धमकी दे रहा, लेकिन यह संसद द्वारा पारित किया गया कानून होगा और इसे सभी को स्वीकार करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि वोट बैंक की राजनीति के लिए यह डर फैलाया जा रहा है कि वक्फ विधेयक मुसलमानों के धार्मिक

'वक्फ बोर्ड की पट्टे पर दी गई संपत्तियां २०,००० थीं, लेकिन २०२५ में, रिकॉर्ड के अनुसार जो गलत हो सकते हैं, ये संपत्तियां शून्य हो गईं। ये संपत्तियां कहां गईं? किसकी अनुमति से इन्हें बेचा गया।' सरकारी आंकड़ों के अनुसार, सशस्त्र बलों और भारतीय रेलवे के साथ-साथ वक्फ बोर्ड भारत में भूमि के शीर्ष तीन मालिकों में से एक हैं। इंडिया टुडे की डेटा इंटेलिजेंस यूनिट (DIU) द्वारा किए गए एक शोध से पता चलता है कि भारत में वक्फ बोर्ड के पास जितनी ज़मीन है, उससे यह ३० संप्रभु देशों से भी ज़्यादा है।

शाह ने लोकसभा में कहा, '१९१३ से २०१३ तक वक्फ बोर्ड के पास कुल १८ लाख एकड़ जमीन थी। २०१३ से २०२५ के बीच, कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार द्वारा वक्फ अधिनियम में संशोधन करने के बाद, इसमें २१ लाख एकड़ जमीन और जुड़ गई।' शाह ने कहा, 'कुल ३९ लाख एकड़ में से २१ लाख एकड़ जमीन २०१३ के बाद जोड़ी गई। और अब वे कह रहे हैं कि इसका कोई दुरुपयोग नहीं हुआ है।' उन्होंने उस वर्ष का जिक्र किया जब वक्फ संपत्तियों के बेहतर प्रबंधन के लिए १९९५ के वक्फ अधिनियम में संशोधन किया गया था। पहले के सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में वक्फ बोर्ड ९.४ लाख एकड़ क्षेत्र में ८.७२ लाख संपत्तियों को नियंत्रित करते हैं। वक्फ उन संपत्तियों को संदर्भित करता है जिन्हें इस्लामी कानून के तहत धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए दान किया गया है। वक्फ (दाता) द्वारा दान किए जाने के बाद, संपत्ति का स्वामित्व अल्लाह को हस्तांतरित और सुरक्षित कर दिया जाता है।

मामलों और उनके द्वारा दान की गई संपत्तियों में दखल है। सदन में वक्फ (संशोधन) विधेयक, २०२५ पर चर्चा में हस्तक्षेप करते हुए शाह ने स्पष्ट किया कि इसके कानून का रूप लेने के बाद इसे पूर्व प्रभाव से लागू नहीं किया जाएगा, जबकि (विपक्ष द्वारा) मुस्लिम भाइयों को इस बहाने डराया जा रहा है। शाह ने दावा किया कि विधेयक के कानून का रूप लेने के चार साल के अंदर मुस्लिम भाइयों को पता चल जाएगा कि यह कानून उनके फायदे में हैं। उन्होंने द्रमुक सदस्यों पर निशाना साधते हुए कहा कि विधेयक का विरोध कर वे दक्षिण (भारत) के सासंद अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र में मौजूद सारे चर्च को नाराज कर रहे हैं। वक्फ भूमि में वृद्धि के आंकड़ों का खुलासा गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार शाम को वक्फ संशोधन विधेयक, २०२४ पर बहस के दौरान किया।

भारत में वक्फ संपत्ति का इतिहास १२वीं सदी के अंत में दो गांवों से शुरू हुआ और अब यह ३९ लाख एकड़ तक पहुंच गया है। गौर करने वाली बात यह है कि पिछले १२ सालों में भारत में वक्फ बोर्ड के तहत कुल जमीन दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है। वक्फ भूमि में वृद्धि के आंकड़ों का खुलासा गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार शाम को वक्फ संशोधन विधेयक, २०२४ पर बहस के दौरान किया। इस विधेयक को अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को लोकसभा में पेश किया।

शाह ने लोकसभा में कहा, '१९१३ से २०१३ तक वक्फ बोर्ड के पास कुल १८ लाख एकड़ जमीन थी। २०१३ से २०२५ के बीच, कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार द्वारा वक्फ अधिनियम में संशोधन करने के बाद, इसमें २१ लाख एकड़ जमीन और जुड़ गई।' शाह ने कहा, 'कुल ३९ लाख एकड़ में से २१ लाख एकड़ जमीन २०१३ के बाद जोड़ी गई। और अब वे कह रहे हैं कि इसका कोई दुरुपयोग नहीं हुआ है।' उन्होंने उस वर्ष का जिक्र किया जब वक्फ संपत्तियों के बेहतर प्रबंधन के लिए १९९५ के वक्फ अधिनियम में संशोधन किया गया था। पहले के सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में वक्फ बोर्ड ९.४ लाख एकड़ क्षेत्र में ८.७२ लाख संपत्तियों को नियंत्रित करते हैं। वक्फ उन संपत्तियों को संदर्भित करता है जिन्हें इस्लामी कानून के तहत धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए दान किया गया है। वक्फ (दाता) द्वारा दान किए जाने के बाद, संपत्ति का स्वामित्व अल्लाह को हस्तांतरित और सुरक्षित कर दिया जाता है। संपत्ति से होने वाली आय समुदाय के उपयोग के लिए है और ऐसी संपत्तियों की बिक्री प्रतिबंधित है। भारत के वक्फ एसेट मैनेजमेंट सिस्टम की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, पूरे भारत में ३० वक्फ बोर्ड हैं।

२०२४ में जारी एक सरकारी नोट के अनुसार, वक्फ अधिनियम और इसके २०१३ के संशोधन की अप्रभावीता के लिए आलोचना की गई है, जिसके कारण अतिक्रमण, कुप्रबंधन, स्वामित्व विवाद और पंजीकरण और सर्वेक्षण में देरी जैसे मुद्दे सामने आए हैं। शाह ने वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता की कमी और कुछ लोगों द्वारा उनके दुरुपयोग के बारे में बात की। उन्होंने सवाल किया, 'वक्फ बोर्ड की पट्टे पर दी गई संपत्तियां २०,००० थीं, लेकिन २०२५ में, रिकॉर्ड के अनुसार जो गलत हो सकते हैं, ये संपत्तियां शून्य हो गईं। ये संपत्तियां कहां गईं? किसकी अनुमति से इन्हें बेचा गया।' सरकारी आंकड़ों के अनुसार, सशस्त्र बलों और भारतीय रेलवे के साथ-साथ वक्फ बोर्ड भारत में भूमि के शीर्ष तीन मालिकों में से एक हैं। इंडिया टुडे की डेटा इंटेलिजेंस यूनिट (DIU) द्वारा किए गए एक शोध से पता चलता है कि भारत में वक्फ बोर्ड के पास जितनी ज़मीन है, उससे यह ३० संप्रभु देशों से भी ज़्यादा है।

मंदिरों पर दावे से लेकर करोड़ों की जमीन किराए पर देने तक...

लोकसभा में वक्फ संशोधन बिल पर आज चर्चा हो रही है। इस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देश भर में वक्फ बोर्ड के कुख्यात सौदों और भूमि दावों के ऊपर भी बोला। साथ ही, उन्होंने वक्फ संशोधन विधेयक, २०२४ के खिलाफ जाने के लिए विपक्ष पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यह विधेयक किसी भी गैर-मुस्लिम को वक्फ बोर्डों के प्रबंधन में नहीं लाएगा और न ही सरकार ऐसा करने का इरादा रखती है।

शाह ने इतिहास के कई मामलों और उदाहरणों को भी सूचीबद्ध किया, जिसमें उन्होंने दावा किया कि वक्फ बोर्ड ने मौजूदा वक्फ कानूनों के तुच्छ प्रावधानों का उपयोग करके गैर-मुस्लिमों और मंदिरों के स्वामित्व वाली जमीन पर दावा किया। सरकार ने तर्क दिया कि वक़्फ़ का इस्तेमाल ज़मीन हड़पने के बहाने के तौर पर किया जा रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भूमि हड़पने के कुछ उदाहरणों का उल्लेख किया, जिन्हें आप नाचे बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते है।

वक्फ बोर्ड के स्वामित्व वाली ५०० करोड़ रुपये की कीमत की एक प्रमुख जमीन को मात्र १२,००० रुपये प्रति माह के किराए पर एक पांच सितारा होटल को किराए पर दे दिया गया, जिससे कुप्रबंधन और पक्षपात की चिंता पैदा हो गई।

कर्नाटक की मणिपड्डी समिति ने रिपोर्ट दी थी कि लगभग २९,००० एकड़ वक्फ भूमि विदेशी संस्थाओं को अक्सर संदिग्ध दरों पर पट्टे पर दी गई थी, जिससे राजस्व की काफी हानि हुई।

२००१ से २०१२ के बीच २ लाख करोड़ रुपये मूल्य की वक्फ संपत्तियां निजी संस्थाओं को १०० वर्ष की अवधि के लिए पट्टे पर दी गईं।

कर्नाटक हाई कोर्ट को वक्फ की ६०२ एकड़ भूमि पर अतिक्रमण रोकने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा, जिससे धार्मिक ट्रस्टों से जुड़ी कानूनी लड़ाइयां और जमीन विवाद उजागर हुए। कर्नाटक के विजयपुरा के होनवाड़ गांव में वक्फ बोर्ड द्वारा दावा किए जाने के बाद १,५०० एकड़ जमीन विवाद में आ गई, जिसके कारण स्वामित्व को लेकर कानूनी और प्रशासनिक संघर्ष शुरू हो गया।

कर्नाटक वक्फ बोर्ड ने प्रतिष्ठित दत्तपीठ मंदिर की भूमि पर दावा कर दिया, जिससे यह कानूनी विवाद में फंस गया।

थालीपरम्बा भूमि विवादः केरल के थालीपरम्बा शहर में ६०० एकड़ जमीन के अधिग्रहण को उचित ठहराने के लिए ७,५०० वर्ष पुराने दावे का हवाला दिया गया।

वक्फ बोर्ड ने महाराष्ट्र के कोल्हापुर में महादेव मंदिर की जमीन पर दावा किया। इसके कारण हिंदू मंदिर प्राधिकारियों और वक्फ अधिकारियों के बीच विवाद उत्पन्न हो गया।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

म्यांमार-थाईलैंड में भूकंप से हाहाकार!

भूकंप की इस बड़ी प्राकृतिक आपदा से निपटना म्यांमार के लिए मुश्किल हो गया है. म्यांमार की सैन्य सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मदद की अपील कर डाली है. वहीं, थाईलैंड का भी हाल कुछ ऐसा ही है.

भारत का पड़ोसी देश म्यांमार बीते दो दिनों से भूकंप के तेज झटके झेल रहा है. शुक्रवार को ७.७ तीव्रता के भूकंप के बाद यहां भारी तबाही मच गई और अब शनिवार को फिर से भूकंप के झटके महसूस किए गए. इस बार भूकंप की तीव्रता थोड़ी कम थी, लेकिन ५.१ संख्या कम नहीं होती. शुक्रवार को आए भूकंप के झटके दूर-दूर तक महसूस हुए. इस भीषण भूकंप ने थाईलैंड समेत ५ अन्य देशों को जगा दिया.

जानकारी के अनुसार, इस भूकंप में म्यांमार में १,६४४ लोगों की जान चली गई. वहीं, थाईलैंड में १० लोग मारे गए और १०० से अधिक लोग मलबे में फंसे हुए हैं. इसके अलावा, तीन हजार से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं. बता दें कि म्यांमार में पहले से गृहयुद्ध के कारण आपातकालीन सेवाएं कमजोर हैं. ऐसे में इस बड़े प्राकृतिक आपदा से निपटना और भी मुश्किल हो गया है.

इस स्थिति से निपटने के लिए म्यांमार की सैन्य सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मदद की अपील की है, जो काफी दुर्लभ है. हालात इतने बिगड़ गए हैं कि सैन्य शासक मिन आंग हलिंग ने किसी भी देश या संगठन से मदद की गुहार लगाई.

भारत पहले ही इस आपदा में मदद के लिए हाथ बढ़ा चुका है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (इ्श श्द्ग) ने म्यांमार और थाईलैंड में हुए भूकंप को लेकर चिंता जताते हुए, राहत कार्यों में मदद की पेशकश की. भारत ने १५ टन राहत सामग्री, जिसमें तंबू, कंबल, पानी वाले प्यूरीफायर और आवश्यक दवाइयां भेजी हैं. इसके साथ ही, राष्ट्रीय आपदा राहत बल (NDRF) के ८० कर्मियों को म्यांमार भेजा गया है, जो मलबे से लोगों को निकालने का काम करेंगे.

इसके अलावा, विदेश मंत्रालय ने कहा एक फील्ड अस्पताल को एयर लिफ्ट कर म्यांमार भेजा जाएगा. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक ब्रीफिंग में कहा, कि इस मानवीय सहायता अभियान के तहत दो और भारतीय नौसैनिक जहाज वहां पहुंचेंगे. उन्होंने बताया कि विमान के जरिए भेजी जा रही मानवीय सहायता के अलावा, आगरा से ११८ सदस्यों वाला एक फील्ड अस्पताल के शनिवार को बाद में रवाना होने की उम्मीद है.

१. म्यांमार-थाईलैंड भूकंप से तबाहः १६०० से अधिक लोगों की मौत, ३४०० घायल;
२. भारत ने बढ़ाया मदद का हाथ
३. म्यांमार और थाईलैंड में हाल ही में आए ७.७ तीव्रता के भूकंप ने व्यापक विनाश किया है।
४. तबाही से निपटना म्यांमार के लिए हुआ मुश्किल
५. मदद के लिए म्यांमार भेजा जाएगा फील्ड अस्पताल
६. इ्श मोदी ने म्यांमार वरिष्ठ जनरल से की बात

इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को म्यांमार के वरिष्ठ जनरल महामहिम मिन आंग ह्लाइंग से बात की. उन्होंने कहा कि भारत इस मुश्किल घड़ी में म्यांमार के लोगों के साथ एकजुटता से खड़ा है. एक्स पर एक पोस्ट में मोदी ने कहा, म्यांमार के वरिष्ठ जनरल महामहिम मिन आंग ह्लाइंग से बात की। विनाशकारी भूकंप में हुई मौतों पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की।. एक करीबी दोस्त और पड़ोसी के रूप में, भारत इस मुश्किल घड़ी में म्यांमार के लोगों के साथ एकजुटता से खड़ा है. ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत आपदा राहत सामग्री, मानवीय सहायता, खोज और बचाव दल को प्रभावित क्षेत्रों में तेजी से भेजा जा रहा है.

भारत के अलावा, यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका ने भी मदद का ऐलान किया. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा, कि उनका देश म्यांमार की सरकार से संपर्क में है और वे राहत कार्यों में मदद करेंगे. थाईलैंड में भी सरकार ने आपातकालीन बैठक बुलाकर स्थिति का आकलन किया. इस आपदा ने दिखा दिया कि जब प्राकृतिक आपदाएं होती हैं, तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय एक साथ मिलकर मदद करने के लिए तैयार रहता है.

भूकंपों का सामना किया है. २०१२ के अंत में ६.८ तीव्रता का भूकंप आया था, जिसमें २६ लोगों की मौत हो गई थी और कई लोग घायल हो गए थे.

भूकंप क्यों आते हैं?

भूकंप तब आते हैं जब पृथ्वी की पपड़ी को बनाने वाली विशाल ठोस चट्टानों की परतें, जिन्हें टेक्टोनिक प्लेट्स कहा जाता है, एक-दूसरे के खिलाफ खिसकती हैं. जब ये प्लेट्स अलग-अलग गति और दिशाओं में चलती हैं, तो ऊर्जा जमा होती जाती है. जब यह ऊर्जा रिलीज होती है, तो पृथ्वी की सतह जोर से हिलने लगती है, जिसे भूकंप कहा जाता है. अगर यह ऊर्जा समुद्र के नीचे रिलीज होती है, तो इससे कई विशाल लहरें उठती हैं, जिन्हें सुनामी कहा जाता है.

म्यांमार में शुक्रवार को आए भूकंप के पीछे क्या कारण है?

म्यांमार भूकंप के लिए संवेदनशील है क्योंकि

यह दो टेक्टोनिक प्लेटों - इंडिया और यूरेशिया प्लेटों के बीच स्थित है. वास्तव में, यह दुनिया के सबसे भूकंप-एक्टिव देशों में से एक है. इन टेक्टोनिक प्लेटों के बीच की सीमा को सैगांग फॉल्ट के नाम से जाना जाता है. अल जज़ीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, विशेषज्ञों के अनुसार सैगांग फॉल्ट एक लंबी, सीधी रेखा है जो लगभग १,२०० किमी उत्तर से दक्षिण की ओर मांडले और यांगून जैसे शहरों के साथ चलती है.

यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन की प्रोफेसर और भूकंप विशेषज्ञ जोआना फॉरे वॉकर ने रॉयटर्स को बताया, 'इंडिया प्लेट और यूरेशिया प्लेट के बीच की सीमा लगभग उत्तर-दक्षिण दिशा में चलती है, जो देश के बीच से होकर गुजरती है.' संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (ळएउए) के अनुसार, म्यांमार में भूकंप 'स्ट्राइक-स्लिप फॉल्टिंग' के कारण हुआ, जो इंडिया और यूरेशिया प्लेटों के बीच हुआ. इसका मतलब है कि ये दो टेक्टोनिक प्लेटें एक-दूसरे के खिलाफ साइडवेज़ रगड़ती हैं.

एनएचके वर्ल्ड-जापान की रिपोर्ट में बताया गया कि जापान की मौसम एजेंसी ने भी पुष्टि की कि शुक्रवार को म्यांमार में आया भूकंप भूमि के तिरछा फिसलने, या 'स्ट्राइक-स्लिप' फॉल्ट्स के कारण हुआ. सगाइंग ने हाल के वर्षों में कई

मूंगफली की खेती...

मूंगफली की खेती तिलहनी फसल के रूप में की जाती है। इसका पौधा उष्ण कटिबंधीय जलवायु वाला होता है। जिससे इसकी खेती खरीफ और जायद दोनों मौसम में की जाती है। ये प्रोटीन और फाइबर से भरपूर होती है। इसमें ४५-५५ प्रतिशत प्रोटीन, २८-३० प्रतिशत काबीहाइड्रेट पाया जाता है। मूंगफली विटामिन बी, विटामिन-सी, कैल्शियम और मैग्रेशियम, जिंक फॉस्फोरस, पोटाश आदि खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाई जाती है, जो मानव शरीर को स्वस्थ रखने में काफी सहायक है। नट्स और तेल में इस्तेमाल होने के अलावा, मूंगफली का उपयोग मक्खन, स्नैक उत्पाद और डेसर्ट बनाने में भी किया जाता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत में लगभग ५१ प्रतिशत भू-भाग पर खेती होती है। देश में ल गभग हर प्रकार की फसलों की खेती की जाती है, क्योंकि देश के विभिन्न भागों की जलवायु, भूमि की उर्वरक क्षमता और भूमि का आकार भिन्न भिन्न है। देश में मौसम के हिसाब से रबी और खरीफ सीजन की फसलों की खेती की जाती है। रबी फसल अक्टूबर-नवंबर में बोई जाती है और मार्च-अप्रैल में काटी जाती है। खरीफ सीजन फसलों की खेती जून-जूलाई में बोई जाती है और नवंबर-दिसंबर में काट ली जाती है।

यदि मूंगफली की खेती वैज्ञानिक तरीके से की जाये तो इसके एक हेक्टेयर के खेत से अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है, जिससे अच्छा ल ाभ भी कमाया जा सकता है। मूंगफली भारत की मुख्य महत्त्वपूर्ण तिलहनी फसल है। यह तमिलनाडू,

गुजरात, आन्ध्र प्रदेश तथा कर्नाटक राज्यों में सबसे अधिक उगाई जाती है। इसके अलावा इसकी खेती मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान तथा पंजाब में भी विशेष रूप से की जाती है। राजस्थान में इसकी खेती लगभग ३.४७ लाख हैक्टर क्षेत्र में की जाती है, जिससे लगभग ६.८१ लाख टन उत्पादन होता है। इसकी औसत उपज १९६३ कि.ग्रा. प्रति हैक्टर है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीनस्थ अनुसंधान संस्थानों एवं कृषि विश्वविद्यालयों ने मूंगफली की उन्नत तकनीक विकसित की हैं। इन तकनीक से किसान इसकी खेती में अधिक पैदावार प्राप्त कर लाखों की कमाई कर सकते हैं। इस विषय में कृषि वैज्ञानिक डॉ राकेश चौधरी एवं डॉ आशुतोष शर्मा ने मूंगफली की खेती को लेकर कहा कि अब बुन्देलखण्ड के किसान भी इस खेती की तरफ तेजी

से बढ़ रहे हैं। कृषि वैज्ञानिक ने यहां के किसानों को मूंगफली की खेती करने के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण सलाह दी है। उत्तर प्रदेश के झांसी, सीतापुर, उन्नाव, बरेली, हरदोई, बदायूं, एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद, मुरादाबाद, खीरी, और सहारनपुर आदि जिलों में मूंगफली की खेती मुख्य रूप से की जा रही है।

मूंगफली की खेती के लिए किसानों को अपने खेत में मूंगफली की उन्नत किस्मों को लगाना चाहिए। ताकि वह कम समय में उगकर अच्छी पैदावार दे सकें। इसके लिए निचे मूंगफली की कुछ उन्नत किस्में दी जा रही जिसे किसान भाई अपने क्षेत्र की जलवायु एवं भूमि के हिसाब से चयन कर खेती कर सकते हैं।

आर. जी. ४२५- मूंगफली की इस किस्म को राज दुर्गा नाम से भी पुकारा जाता है, इसके पौधे सूखे की प्रति सहनशील है। यह किस्म बीज रोपाई के तकरीबन १२० से १२५ दिन बाद पैदावार देना आरम्भ कर देती है। एक हेक्टेयर के खेत से लगभग २८ से ३६ क्विंटल की पैदावार हो जाती है।

खेत की तैयारी

मूंगफली की अच्छी फसल लेने के लिए पहल इसके खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लेना चाहिए। सबसे पहले खेत की तिरछी गहरी जुताई करनी चाहिए, जिससे पुरानी फसल के अवशेष पूरी तरह से नष्ट हो जायेंगे। इसके बाद खेत में ३-४ क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी गोबर की खाद डालकर रोटावेटर लगा कर दो से तीन जुताई कर अच्छे मिला दे। एक बार फिर खेत में पाटालगा कर जुतवा दे जिससे खेत पूरी तरह से समतल हो जायेगा। मूंगफली फसल में मुख्यतः सफेद लट एंव दीमक का प्रकोप देखने को मिलता है। इसके लिए फोरेट १० जी या काबीफ्यूरान ३ जी से २०-२५ किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से उपचारित करते है। जिन क्षेत्रों में उकठा रोग की समस्या हो वहाँ ५० कि.ग्रा. सड़े गोबर में २ कि.ग्रा. ट्राइकोडर्मा जैविक फफूंदनाशी को मिलाकर अंतिम जुताई के समय प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिला देना चाहिए।

खेती के लिए बीजों की मात्रा

मूंगफली की गुच्छेदार प्रजातियों का ६० से ८० किलोग्राम एवं फैलने व अर्द्ध फैलने वाली प्रजातियों का ५०-६५ किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

बुवाई से पहले बीजोपचार

इसके बीजों के उपचार के लिए थाइरम ३७.५ प्रतिशत एवं काबोक्सिन ३७.५ प्रतिशत की २.५ ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से या १ ग्रा. कार्बेन्डाजिम एवं ट्राइकाडर्मा विरिडी ४ ग्रा./कि.ग्रा. बीज को उपचार करना चाहिए। बुवाई पहले राइजोबियम एवं पी.एस.बी. से ५-१० ग्रा./कि.ग्रा. बीज के मान से उपचार करें।

बुवाई की विधि

मूंगफली की बुवाई जून के द्वितीय सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह में की जाती है। इसकी बुवाई रेज्ड

बेड-बेड पद्धति से किया जाना लाभप्रद रहता है। इस पद्धति में मूंगफली की ५ कतारों के बाद एक कतार खाली छोड़ देते है। इससे भूमि में नमीं का संचय, जलनिकास, खरपतवारों का नियंत्रण व फसल की देखरेख सही हो जाने के कारण उपज अच्छी प्राप्त हो जाती है। गुच्छेदार किस्म के लिए कतार से कतार की दूरी ३० से.मी. और पौधे से पौधे की दूरी १० से.मी. रखना चाहिए। फैलाव और अर्धफैलाव वाली किस्मों के लिए कतार से कतार की दूरी ४५ से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी १५ सें.मी. रखना चाहिए। बीज की गहराई ३ से ५ से. मी. रखनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

मूंगफली के खेत में उर्वरक का प्रयोग भूमि परीक्षण के आधार पर ही किया जाना चाहिए। मूंगफली की अच्छी पैदावार के लिए ३-५ क्विंटल सड़ी गोबर की खाद प्रति हैक्टर की दर से खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिला देनी चाहिए। उर्वरक के रूप में २०: ६०: २० कि.ग्रा. प्रति हेक्टयर की दर से नत्रजन, फॉस्फोरस व पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। इसके अलावा जिप्सम की २५० कि.ग्रा. मात्रा प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग बुवाई से पूर्व आखरी तैयारी के समय प्रयोग करें।

मूंगफली खेत की सिंचाई

मूंगफली की फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, क्योकि यह खरीफ की फसल है और इसकी बुवाई बारिश के मौसम के समीप ही की जाती है। अगर बारिश समय पर नहीं होती है, तो इसके पौधों को जरूरत के अनुसार पानी देना चाहिए। बारिश के मौसम के बाद २० दिन के अंतराल में पौधों को पानी की आवश्यकता होती है। जब मूंगफली के पौधों में फूल और फलिया बनने लगे उस दौरान खेत में नमी की मात्रा बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें इससे पैदावार अच्छी प्राप्त होती है।

मूंगफली के खेत में खरपतवार नियंत्रण

अधिक पैदावार के लिए समय-समय पर इसकी खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुडाई करें। रासायनिक विधि द्वारा खरपतवार पर नियंत्रण पाने के लिए ५०० लीटर पानी में ३ लीटर पेन्डिमेथालिन की मात्रा को डालकर अच्छे से मिला दिया जाता है, जिसका

छिड़काव बीज रोपाई के दो दिन बाद तक करना होता है। यदि इसके खेत में खरपतवार पर ध्यान नहीं दिया तो ये मूंगफली को अधिक हानि पहुंचाते है। इसकी फसल में अधिक खरपतवार हो जाये, तो उत्पादन में ३० प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। इसकी फलियाँ भूमि से सामान्य गहराई में होती है, और डूब, सामक, मेथा और प्याजा नामक खरपतवार की जड़े भी भूमि की सामान्य गहराई में होती है, जिससे खरपतवार पौधों को अधिक हानि पहुँचाता है।

रोगों की रोकथाम

मूंगफली में प्रमुख रूप से पर्ण चित्ती, टिक्का, लीफ माइनर, कॉलर, तना गलन और रोजेट रोग का मुख्य प्रकोप होता है। पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप दिखाई देने पर डाइथेन एम-४५ की उचित मात्रा का छिड़काव १० दिन के अंतराल में दो से तीन बार करें। टिक्का के लक्षण दिखते ही इसकी रोकथाम के लिए डायथेन एम-४५ का २ ग्रा./लीटर पानी में घोल बनाकर पौधों पर १० से १२ दिन के अंतराल में दो से तीन बार छिड़काव करना चाहिए। रोजेट वायरस जनित रोग हैं, इसके फैलाव को रोकने के लिए फसल पर इमिडाक्लोप्रिड ०.५ मि.ली./लीटर पानी के मान से घोल बनाकर १० से १२ दिन के अंतराल में दो से तीन बार छिड़काव करना चाहिए।

खुदाई एवं भण्डारण

मूंगफली की फसल बुवाई के १२० से १३० दिन पश्चात खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इसके पौधों की पत्तियों का रंग पीला पड़ने लगे और इसके पौधे पूर्ण रूप से पके हुए दिखाई देने लगे तब खेत में हल्की सिंचाई कर खुदाई कर लें। आज कल बाजार में इसकी फसल की खुदाई मशीन भी उपलब्ध हैं। जिसके उपयोग से समय और पैसे की हो जाती है।

मूंगफली की खुदाई के बाद इसके पौधों से फलियाँ को अलग कर तेज धुप मे सुखा ले जिससे इसमें नमी पूरी तरह से खत्म हो जाये। ध्यान रहें भंडारण के पूर्व पके हुए दानों में नमीं की मात्रा ८ से १० प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। मूंगफली के एक हेक्टेयर के खेत से २० से २५ क्विंटल की पैदावार प्राप्त हो जाती है, जिसका बाजारी भाव गुणवत्ता के हिसाब से ६० रूपए से ८० रूपए तक होता है, जिससे मूंगफली की एक बार की फसल से १,२०,००० से १,६०,००० तक की कमाई आसानी से कर सकते है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.SWARNIMUMBAI.COM

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ